श्री जंबूद्वीपस्थ शाश्वत जिनमंदिर-जिनबिम्ब विधान पूजा

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ़-३६४२५०

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भगवान श्री कुन्दकुन्द-कहान जैन शास्त्रमाला, पुष्प—२२३

ॐ

श्री

जम्बूद्वीपस्थ शाश्वत जिनमंदिर-जिनबिंब विधान-पूजा

श्री तीनलोक पूजन विधान एवं
श्री तेरहद्वीप पूजा विधानसे संकलित संक्षिप्त संस्करण

-ः प्रकाशक ः-

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ-३६४२५०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रथम आवृत्ति   प्रत : ३०००   वि. सं. २०६५   ई.स. २००९

श्री जम्बूद्वीपस्थ शाश्वत जिनंदिर-जिनबिंब विधान पूजाके

❋ स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ❋

✻ श्रीमती रतनबेन शामजीभाई भाणजीभाई छेडा, गोरेगाँव-मुंबई हस्ते नीलेश, विपुल (पुत्र)

✻ अखिल महाराष्ट्र दिगंबर जैन मुमुक्षुवृंद
(पूज्य बहिनश्रीकी ९६वीं जन्मजयंती सुवर्णपुरीमें मनानेकी खुशालीमें)

यह शास्त्रका लागत मूल्य रु. 34=00 है। मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रु. 20=00 रखी गई है।

मूल्य : रु. 20=00

मुद्रक :
कहान मुद्रणालय
जैन विद्यार्थी गृह कम्पाउण्ड,
सोनगढ-३६४२५० ✆ : (02846) 244081

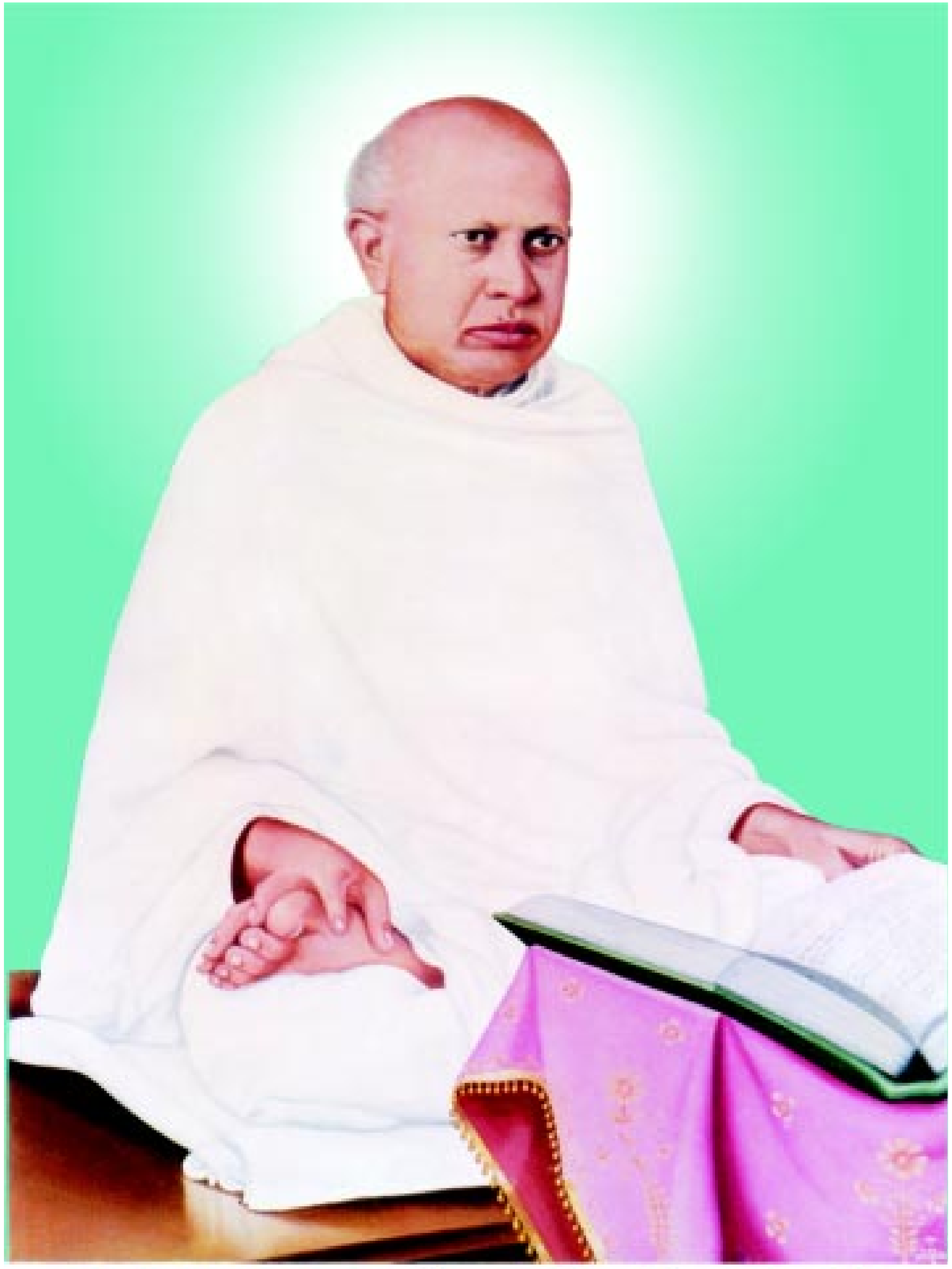

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैनधर्म ही सनातन सत्य है' ऐसा युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस कालमें सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान देकर भी मुमुक्षु समाज पर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी साभिरुचि (सोल्लास) प्रवृत्ति नियमित चल रही है। स्वयं भी नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनीत प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर जिनमंदिरों एवं वीतराग जिनबिम्बोंसे भर गया।

साथ साथ प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्रीने भी पूज्य गुरुदेवश्रीकी भवनाशिनी वाणीका हार्द मुमुक्षु समाजको बताकर मुमुक्षुओंके अंतरमें जागृत सच्चे देव-शास्त्र-गुरुके प्रतिके भक्तिभावको, भक्ति-पूजाकी अनेकविध रोचक गति-विधियोंके द्वारा नवपल्लवित किया है।

जिसके फलस्वरूप सुवर्णपुरीमें देव-शास्त्र-गुरुकी भक्ति पूजनके विविध कार्यक्रमका आयोजन सदैव चलता रहता है। इस हेतुको ध्यानमें रखकर ट्रस्टकी ओरसे विविध पुस्तकोंका प्रकाशन हो रहा है।

हमारे परम प्रत्यक्ष उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी तथा पूज्य बहिनश्री चंपाबहिनके असाधारण प्रभावनायोग, उन धर्मात्माओंकी साधनाभूमि पावन तीर्थधाम, अध्यात्म अतीशय क्षेत्र सुवर्णपुरीमें जम्बूद्वीपके अकृत्रिम जिनालय-जिनबिम्ब एवं बाहुबली मुनिराजके खडगासन विशालकाय जिनबिम्बका निर्माण होने जा रहा हैं। उन जिनेन्द्र भगवंतोंके मंगल आगमनके मधुरे स्वर सुनाई दे रहे हैं। ऐसे पवित्र वातावरणमें मुमुक्षुभक्तोंको यह भावना हुई की हम

''श्री जम्बूद्वीपस्थ शाश्वत जिनमंदिर-जिनबिम्ब विधान-पूजा'' उनका भव्य पूजनकरके उन भगवंतोंका भावभीगा स्वागत करें । इस भावनाके फलस्वरूप प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्रीकी ९६वीं जन्मजयंतीके उपलक्ष्यमें पुराने कवियोंकी रचनाओंसे संकलित करके यह संक्षिप्त संस्करण श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हो रहा है । इसलिए हम उन पुराने कवियोंके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं ।

यह पुस्तक इस हेतुसे तैयार किया गया है कि जब जम्बूद्वीपस्थ जिनायतन तैयार हो तो उसमें बिराजमान सभी जिनेन्द्र भगवंतोंकी पूजा अलग अलग भी हो सके अर्थात् इस नूतन निर्मापित आयतनोंमें पूजनके लिये यह पुस्तक उपयोगी हो सके ।

आशा है कि यह नूतन संस्करणसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

पूज्य बहिनश्रीका
96वाँ जन्म-महोत्सव
दि. 7-8-2009

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि0 जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,
सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

स्वर्णपुरीमें होनेवाली ‘जम्बूद्वीपस्थ शाश्वत जिनमंदिर-जिनबिम्ब रचना’ दर्शन

दिव्यज्ञाननेत्रधारक जिनेन्द्र भगवानके ज्ञानदर्पणमें समस्त लोकालोक झलक रहा है। उनके ज्ञानानुसार अरूपी आकाशके जिस मध्यभागमें जीव-पुद्गलादि छ जातिके द्रव्य-पदार्थ पाए जाते हैं, उसे लोक कहते हैं, अन्य दसों दिशाओंमें रहे आकाशमात्रको अलोक—आकाश कहते हैं।

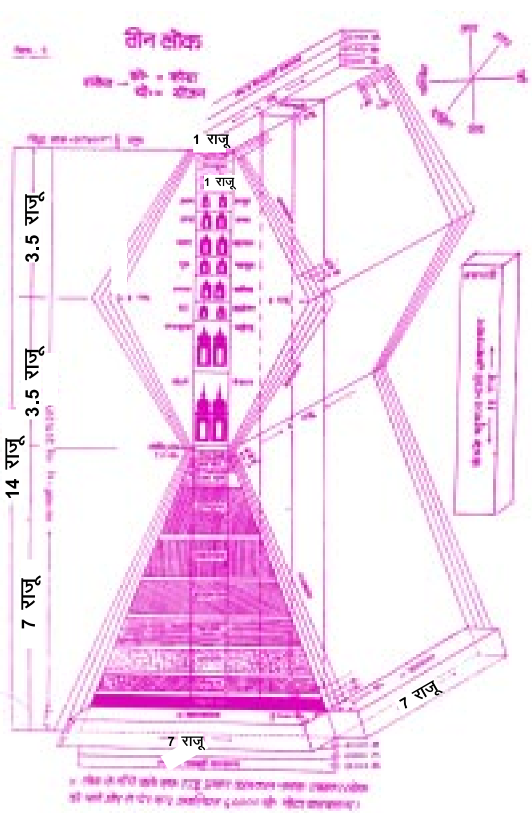

अन्य प्रकारसे कहें तो, जहाँ जीव अपने शुभ-अशुभ और शुद्ध परिणामोंका फल पाता है, ऐसे स्थानको लोक कहते हैं। यह लोक नीचे रखे आधे मृदंग पर पूरा मृदंग रखा जाये ऐसी आकृति धारक है अथवा पैर फैलाकर कटिपर हाथ रखे हुए पुरुषके आकार जैसा है।

यह रचना किसीके द्वारा निर्मित नहीं है, अतः उसे 'शाश्वती रचना' या 'अकृत्रिम रचना' भी कही जाती है।

पीछे दर्शाये चित्र (पेज नं. ५) अनुसार परिमाणवाला यह लोक है। इसके बीच मध्यभागमें, लम्बाई–चौडाई एक राजू व ऊँचाई १४ राजू परिमाणवाले भागको 'त्रस-नाडी' कहते हैं। इसी भागमें त्रस-जीव बसते हैं, परन्तु स्थावर जीव लोकके सभी स्थानमें बसते हैं।

इसके 'ऊर्ध्व श्रेणीरूपसे स्थित' ऊर्ध्वभागको 'ऊर्ध्व-लोक' कहते हैं, वह स्वर्गलोकके नामसे भी प्रसिद्ध है, क्योंकि वहाँ पर जीव अपने शुभ परिणामोंके फलरूप 'देव'गतिको पाता है। वहाँ अज्ञानीजनों द्वारा माने जाते अकल्पनीय इन्द्रियसुखोंको लम्बे अरसे तक भोगते हैं। वहाँ इन्द्रिय-दुःखका अवकाश नहीं है। यद्यपि मानसिक दुःख जरूर होते हैं; परंतु अनंत-अव्याबाध अतीन्द्रिय सिद्ध भगवानके सुखके सामने तो वे दुःख ही है।

स्वर्गोंके ऊपर ऊर्ध्वलोकके अंतमें ४५ लाख योजनके व्यासवाला सिद्धालय है। उसमें सिद्ध भगवान बिराजमान हैं। जिन्होंने अपने शुभाशुभ परिणामरूप राग-द्वेष त्यागकर, 'जैसा अपना स्वभाव है वैसी' पूर्ण वीतराग ज्ञानानंदमय दशा प्राप्त कर, सहज अनंत अव्याबाधरूप अतीन्द्रिय आनंदमयदशाको प्राप्त की है।

मध्यलोकके नीचेका भाग अधोलोक है। उसमें प्रथम व्यंतरवासी तथा भवनवासी देवोंके भवन हैं। उसके नीचेके भागमें श्रेणीरूपसे अतिशय संक्लेषरूप भावोंके फलस्वरूप अकल्पनीय इन्द्रिय-दुःखोंके भोगनेके स्थानरूप सात नरक हैं।

इस रचनाके बिलकुल मध्यभागको 'मध्यलोक' कहते हैं। (वहाँ वर्तमानमें हम सब रहते हैं।) मध्यलोकमें मनुष्य व तिर्यंच जीवोंको अपने मध्यम शुभ-अशुभ परिणामके फलरूप मध्यम इन्द्रिय-सुख भोगनेके स्थान हैं। यद्यपि वहाँ मध्यम पुण्यको भोगनेके स्थानरूप व्यंतरदेवोंके स्थान भी होते हैं। परन्तु मुख्यरूपसे मनुष्य-तिर्यञ्चोंके स्थानकी अपेक्षासे यहाँ मनुष्य-तिर्यञ्च बसते हैं। मध्यलोककी 'चित्रा पृथ्वी'के ऊपर सुदर्शन मेरु पर्वतकी चोटी तक ९९०००योजन ऊँचाईवाला भाग मध्यलोक है। उसकी लंबाई-चौड़ाई क्रमशः १ राजू व ७ राजू है।

मध्यलोककी चित्रा पृथ्वीसे ७९० योजन ऊपर जाने पर वहाँसे ११० योजन ऊँचाईका, असंख्यात द्वीप-समुद्र जितनी लम्बाईका 'ज्योतिष-लोक' है। मध्यलोकमें चुड़ी आकारके एक-दूसरेसे घिरे हुए असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं उसमें पहला द्वीप व अन्तिम समुद्र है।

उस रचनाके बहुमध्यभागमें १ लाख योजन व्यासवाला जम्बूद्वीप है। उसे घेरकर दो लाख योजन प्रमाण लवण समुद्र, उसे घेरकर ४ लाख योजन धातुकीखण्ड द्वीप, इस भांति दुगने-दुगने विस्तारवाले द्वीप-समुद्र हैं। उसमें जम्बूद्वीप, धातुकीखण्ड व अर्ध पुष्कर द्वीपके भाग तक ही मनुष्योंका विचरण होनेसे उसे 'मनुष्यलोक' कहते हैं—इस विस्तारका परिमाण ४५ लाख योजन व्यास होनेसे तथा यहाँसे पुरुष-मनुष्य ही सिद्ध होते होनेसे इस विस्तारके सीधे ऊपर लोकके उत्कृष्टभागमें 'सिद्ध भगवंत' बिराजते हैं।

अपने अध्यात्मतीर्थ सुवर्णपुरीमें नूतन निर्मापित जम्बूद्वीप रचनाका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार हे, जो कि भगवान नेमिचन्द्र

सिद्धान्त चक्रवर्ती रचित त्रिलोकसारके आधारसे है।

इस जम्बूद्वीपके बिलकुल मध्यमें ९९००० योजन ऊँचाई व नींवकी गहराई १००० योजन मिलकर एक लाख योजन ऊँचाई प्रमाण 'सुदर्शन' नामा मेरु पर्वत है। इसके भूभागमें 'भद्रशाल वन' है, उसके ऊपर क्रमशः 'नंदनवन', 'सौमनस वन', 'पाण्डुकवन' है। इन प्रत्येक वनोंमें, चारों दिशाओंमें चार अकृत्रिम (शाश्वत) जिनमंदिर हैं, व उन प्रत्येकमें अकृत्रिम विशाल जिनप्रतिमाएँ हैं, इस तरह सुदर्शन मेरुके १६ जिनमंदिर हैं। पाण्डुक वनके ४ विदिशाओंमें अर्धचन्द्राकार ४ पाण्डुक शिलाएँ होती हैं। उन शिलाओं पर भरत, पूर्व विदेह, ऐरावत व पश्चिम विदेहक्षेत्रके तीर्थंकरोंका इन्द्रादि जन्माभिषेक करते हैं। इस भांति यह वन तीर्थंकरोंके जन्माभिषेकसे पवित्र है।

सुमेरु पर्वतसे छूकर नील व निषध पर्वतको छूते हुए हाथीके बाह्य दांतोंके समान 'गजदंत' नामक चार पर्वत हैं। इन चारों पर्वत पर सुमेरु पर्वतके नजदीक एक एक अकृत्रिम (शाश्वत) जिनमंदिर स्थित है। नील पर्वतके पास पूर्वविदेहके उत्तरकुरुमें एक 'जम्बू' नामक पृथ्वीकायिक वृक्ष है। उसी भांति निषध पर्वतके पास 'देवकुरु'में 'शाल्मलि' नामक पृथ्वीकायिक वृक्ष है। इन पर भी एक-एक अकृत्रिम (शाश्वत) जिनमंदिर है। सुदर्शन मेरुकी उत्तरदिशामें 'उत्तरकुरु' तथा दक्षिणदिशामें 'देवकुरु' उत्तम भोगभूमियाँ हैं।

इस द्वीपमें भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवर्ष और ऐरावत वर्ष—नामक सात क्षेत्र हैं। उन क्षेत्रोंको विभाजित करनेवाले, लवणसमुद्रको छूते हुए, पूर्व-पश्चिम

लम्बे ऐसे हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मि व शिखरी ये छ 'वर्षधर' या 'कुलाचल' पर्वत हैं। ये पर्वत क्रमसे सोना, चांदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चांदी और सोना—ऐसे रंगवाले होते हैं। इन 'कुलाचल' पर्वतों पर क्रमसे पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केसरि, महापुण्डरीक और पुण्डरीक बड़े द्रह–तालाब हैं। इन तालाबोंमें प्रथम एक योजनका कमल है। इसके चारों ओर भी अनेक कमल हैं। इन तालाब और कमलोंका विस्तार उत्तरोत्तर दूना है। इन कमलोंपर 'श्री', 'ह्री' आदि देवियाँ अपने अपने सामानिक आदि परिवार देवोंके साथ रहती हैं। प्रत्येक कुलाचल–पर्वतपर अनेक कूट होते हैं। उनके सिद्धकूट पर–एक 'सिद्धायतन' अकृत्रिम (शाश्वत) जिनालय होता है।

उपरोक्त पद्म आदि द्रहोंमेंसे निकलकर भरत आदि क्षेत्रोंसे प्रत्येकमेंसे दो–दो करके क्रमसे गंगा-सिंधु, रोहित-रोहितास्या, हरित-हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला, रक्ता-रक्तोदा नदियाँ बहती हैं। उन उक्त नदीरूप युगलोंमें पहली-पहली नदी पूर्व समुद्रमें व पीछे-पीछेकी नदी पश्चिम समुद्रमें मिलती है।

जम्बूद्वीपके भरत व ऐरावतक्षेत्रमें, भरत व ऐरावतक्षेत्रके लवणसमुद्रको छूता हुआ बीचोबीच एक विजयार्ध पर्वत है। इन विजयार्ध पर्वत पर भी एक-एक अकृत्रिम (शाश्वत) जिनमंदिर है।

पद्मद्रहसे निकलती गंगा-सिंधु नदी उत्तर भरतक्षेत्रके तीन भाग करती विजयार्ध पर्वतमेंसे निकलकर दक्षिण भरतके भी तीन भाग करती हुई लवणसमुद्रमें मिलती है। इस भांति विजयार्द्ध पर्वत

व गंगा-सिंधु नदी द्वारा भरतक्षेत्रके ६ खण्ड हो जाते हैं। उनमेंसे पाँच 'म्लेच्छ खंड' हैं व दक्षिणका मध्य खण्ड एक 'आर्यखण्ड' है। (इसी आर्यखंडमें वर्तमानके एशिया, आफ्रिका, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि सभी खंड हैं।) चक्रवर्ती इन आर्य-मलेच्छादि छ खण्डोंको जितता है। म्लेच्छ खण्डोंमें म्लेच्छ लोग, आर्यखंडमें आर्य लोग व विजयार्धकी उत्तरी व दक्षिणी श्रेणिओंमें विद्याधारी 'विद्याधर' लोग रहते हैं। उत्तरीय तीन म्लेच्छ खण्डोंके बीचमें 'वृषभगिरि' नामक एक गोल पर्वत है। उसपर दिग्विजय पश्चात् चक्रवर्ती अपना नाम अंकित करता है।

यह जम्बूद्वीप एक जगति (दिवाल)कर वेष्ठित है। इस जगतिके भिन्न-भिन्न नामवाले चार दिशामें चार द्वार हैं। तत्पश्चात् लवणसमुद्र है।

भरतक्षेत्र, ऐरावत क्षेत्रकी भौगोलिक पूरी रचना समान होती है। वहाँ दोनों क्षेत्रोंके आर्यखंडमें कालका परिवर्तन अवसर्पिणी–उत्सर्पिणीके रूपमें हुआ करता है। उसमें अवसर्पिणी कालके क्रमशः नियत समयवाले सुखमा–सुखमा, सुखमा, सुखमा-दुःखमा, दुःखमा-सुखमा, दुःखमा, दुखमा–दुःखमा ऐसे छ भेद होते है। वे छ 'आरे'के नामसे भी प्रसिद्ध हैं। पाँच म्लेच्छ खंड व विजयार्धकी श्रेणियोंमें अवसर्पिणीके चतुर्थकालके प्रारंभसे अन्त तक हानि और उत्सर्पिणीकालमें तृतीयकालके प्रारंभसे अन्त तक वृद्धि होती रहती है। यहाँ अन्यकालोंकी प्रवृत्ति नहीं होती। उन छ कालोंमेंसे आर्यखण्डमें अवसर्पिणी कालके पीछेके तीन आरोंमें कर्मभूमि होती है। जहाँ जीव कृषि आदि छह कर्म तथा धर्मकर्म संबंधित अनुष्ठान करते पाये जातें हैं उसे कर्मभूमि कहते हैं तथा

जहाँ जीव बिना कुछ किये प्राकृतिक पदार्थोंके आश्रय पर उत्तम भोग भोगते हुए सुखपूर्वक जीवन-व्यतीत करते है वह भोगभूमि कहलाती है। उत्सर्पिणीमें आरोंका क्रम व भोग-कर्मभूमिका क्रम अवसर्पिणीसे उल्टा रहता है। सुखमा-दुःखमा कालमें तिरसठ शलाका पुरुष (२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव, ९ नारायण व ९ प्रतिनारायण) होते हैं। यहाँके प्रवर्तमान चौवीसीके ऋषभादि २४ तीर्थंकर हुए हैं। वे अभी सिद्धदशाको प्राप्त हैं। यहाँ तीर्थंकर मुख्यरूपसे अयोध्यामें जन्मते हैं व सम्मेदशिखरसे मोक्षमें जाते हैं। यह क्रम भूत-वर्तमान-भविष्य तीनोंकाल चलता है अर्थात् २४ तीर्थंकर तीनों काल होते हैं। अतः इस भांति अपने यहाँ स्वर्णपुरीमें भी जंबूद्वीप जिनायतनमें भरत एवं ऐरावतक्षेत्रके 'त्रिकालस्थ शाश्वतरूप २४ तीर्थंकर' प्रतीकरूपसे भी बिराजित किये जा रहे हैं।

भरतक्षेत्रके पश्चात् दक्षिणसे उत्तरकी ओर हैमवत, हरि, रम्यक् व हैरण्यवत क्षेत्रोंमें क्रमशः जघन्य, मध्यम, मध्यम व जघन्य भोगभूमि होती हैं। विदेह आदि इन सभी क्षेत्रोंमें कालका कोई भेद नहीं होनेसे अवस्थित काल कहलाता है। कालका परिवर्तन मात्र भरत व ऐरावत क्षेत्रमें ही होता है। इन कर्मभूमिमें ही ६३ शलाका (पुराण) पुरुष होते हैं। (इन ६३ पुराण पुरुषोंके अलावा रुद्र, कामदेव, नारद आदि भी इन्हीं कालोंमें होते हैं)।

विदेहक्षेत्रमें पूर्व व पश्चिमके दोनों ओर दैवारण्य व भूतारण्य वनके बीचकी भूमिके सीता-सीतोदा नदीके कारण चार भाग हुए हैं। उनमेंसे पूर्वभागके दोनों भागोंको 'पूर्व विदेहक्षेत्र' व पश्चिमके दोनों भागोंको 'पश्चिम विदेहक्षेत्र' नामसे पहचाना जाता है।

विदेहके इन प्रत्येक चार भागमें चार-चार 'वक्ष्यार' नामक पर्वत, नील व निषध कुलाचलसे निकली सीता-सीतोदा नदीयोंको छूते हुए उत्तरसे दक्षिण तक लम्बाईमें हैं। इस तरह ४ विदेहोंमें कुल १६ 'वक्ष्यार पर्वत' हैं। उन प्रत्येक पर एक-एक अकृत्रिम (शाश्वत) जिनमंदिर है। इस भांति विदेहक्षेत्रमें वक्ष्यार पर्वतोंके अकृत्रिम १६ जिनमंदिर हैं।

नील व निषध कुलाचल पर्वत पर पूर्व व पश्चिम दोनों ओर तीन तीन कुण्ड हैं, इन सभी कुण्डोंमेंसे निकलकर विभंगा नामक नदियाँ, वक्ष्यार पर्वतोंके मध्यमें, विदेहक्षेत्रमें बहती हुई सीता-सीतोदा नदीको जा मिलती हैं। इन विभंगा नदियोंके नाम त्रिलोकसार ग्रंथ अनुसार गाधवती, द्रहवती, पंकवती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्तजला हैं।

इस भांति १६ वक्ष्यार पर्वत व १२ कुण्ड-नदीयोंसे पूर्व-पश्चिमके कुल ३२ विदेह हो जाते हैं। उन ३२ विदेहोंकी भौगोलिक रचना भरत-ऐरावत क्षेत्रवत् है, अर्थात् ३२ विदेहक्षेत्रोंमें ३२ विजयार्ध पर्वत हैं, प्रत्येक विजयार्द्ध पर्वत पर एक-एक जिनमंदिर है। इन प्रत्येक विदेहोंमें गंगा-नदीकी भांति गंगा-सिंधु व रक्ता-रक्तोदा नामक नदियाँ बहती हैं।

अच्छेकालमें इन ३२ विदेहोंमें प्रत्येक विदेहमें एक-एक तीर्थंकर व शलाका पुरुष होते हैं व सामान्यकालमें इन पूर्व-पश्चिम विदेहके प्रत्येक भागोंमें शाश्वत नामवाले सीमंधरादि चार (दोनों पूर्वमें दो व दोनों पश्चिम विदेहमें दो) तीर्थंकर शाश्वत होते हैं। संक्षिप्तमें यहां कभी भी तीर्थंकरोंका अभाव नहीं होता। यहाँ सदा

चतुर्थकाल होता है व यहाँसे सदा जीव मोक्ष जा सकते हैं अर्थात् 'विदेही दशा'को प्राप्त हो सकते हैं। इन ३२ क्षेत्रोंके कच्छा आदि अलग-अलग नाम होते हैं।

अभी जम्बूद्वीपमें सीमंधर, युगमंधर, बाहु व सुबाहु जिनेन्द्र जीवन्त अर्हन्तदशामें बिराजित हैं। पूज्य गुरुदेवश्री पूर्व विदेहसे यहाँ आये हैं। भगवान कुंदकुंदाचार्यदेव २००० वर्ष पूर्व भरतक्षेत्रसे इन्हीं सीमंधर भगवानके दर्शन करने पधारे थे। (पूज्य बहिनश्री चंपाबेन भी उस समय वहीं पर थीं। जिज्ञासुके लिए इसका विस्तृत वर्णन 'बहिनश्रीके ज्ञानवैभव' पुस्तकमें है।)

संक्षिप्तमें इस भांति स्वर्णपुरीके 'जम्बूद्वीप शाश्वती रचना'में निम्न जिनमंदिर-जिनभगवंत बिराजमान होनेवाले हैं।

सुदर्शन मेरु स्थित	—	१६	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
गजदंत पर्वत स्थित	—	४	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
जम्बूवृक्ष स्थित	—	१	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
शाल्मलिवृक्ष स्थित	—	१	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
कुलाचल पर्वत स्थित	—	६	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
वक्ष्यारगिरि पर्वत स्थित	—	१६	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
विजयार्द्ध पर्वत स्थित	—		
(अ) भरत–ऐरावत	—	२	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
(ब) विदेहके	—	३२	जिनमंदिर–जिनबिम्ब
कुल अकृत्रिम जिनालय		७८	

शाश्वत जिनेन्द्र भगवंत

(अ) विदेहके	—	४ समवसरणयुक्त–जिनबिम्ब (सीमंधरादि ४)
(ब) भरतक्षेत्रके	—	२४ जिनेन्द्र (भूत-भावी वर्तमानके प्रतीकरूप शाश्वत-जिनेन्द्र)
(क) ऐरावतक्षेत्रके	—	२४ जिनेन्द्र (भूत-भावी वर्तमानके प्रतीकरूप शाश्वत-जिनेन्द्र)
	कुल —	१३०

इसी भांति धातकीखण्ड द्वीप व पुष्करार्द्ध द्वीपमें दो-दो मेरु पर्वत होते हैं। उनमें भी जम्बूद्वीपवत् ही सभी रचना है। इन क्षेत्रोंमें २-२ इक्ष्वाकार पर्वत अधिक होते हैं, वहाँ भी अकृत्रिम जिनालय होते हैं। अतः वहाँ दो–दो भरत, दो–दो ऐरावत व दो–दो विदेहक्षेत्र होते हैं। इस भांति इस मध्यलोकमें कुल पांच भरत, पांच ऐरावत व पांच विदेहक्षेत्र होते हैं। ये पन्द्रह कर्मभूमियाँ हैं, वहीं पर शलाका पुरुष होते हैं।

इस तरह भूत-वर्तमान-भावीकालकी अपेक्षासे भरत–ऐरावत क्षेत्रके ७२-७२ जिनेन्द्र भगवंत गिने जाते हैं। अच्छेकालमें भरत–ऐरावत क्षेत्रमें तो एक-एक तीर्थंकर भगवन्त बिराजते हैं, उसी समय विदेहक्षेत्रके ३२ विदेहोंके प्रत्येक विदेहमें भी तीर्थंकर बिराजमान रहते हैं। ऐसे सुंदरकालमें पांचों भरत–ऐरावत–विदेह(के सभी क्षेत्रोंमें) तीर्थंकर भगवंत होते हैं। इस तरह इस भूतल पर जम्बूद्वीप,

धातुकीखण्ड व पुष्करार्द्ध द्वीपमें

५ भरतक्षेत्रके —— ५ तीर्थंकर भगवंत

५ ऐरावतक्षेत्रके ——५ तीर्थंकर भगवंत

५ विदेहक्षेत्रके ३२×५ = १६० तीर्थंकर भगवंत विराजित होते हैं।

इस तरह उत्तम सुकालमें कुल १७० (१६०+५+५) तीर्थंकर एक साथ भूतलपर होते हैं। भविष्यमें पूज्य गुरुदेवश्री ऐसे ही कालमें धातकीखण्डके पूर्व विदेहमें 'सूर्यकीर्ति' व 'सर्वांगस्वामी' ऐसे दो नामवाले तीर्थंकर होंगे।

जब इस भूतल पर सामान्यकाल होता है तब जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड व पुष्करार्द्धद्वीपके पाँच विदेहोंमें प्रत्येक विदेहमें कमसे कम ४–४ तीर्थंकर भगवंत होकर २० तीर्थंकर तो हर समय होते ही हैं। उन २० तीर्थंकरोंके बिना यह लोक कभी भी नहीं होता। इन २० तीर्थंकरोंके नाम सीमंधर, युगमंधर आदि २० हैं, वे नाम शाश्वत हैं।

[इसी भांति इस मध्यलोकमें ढाई द्वीपके अलावा मानुषोत्तर पर्वत पर ४ अकृत्रिम जिनमंदिर हैं; उसके पश्चात् आठवें नंदीश्वरद्वीपमें ५२ अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। (यह रचना स्वर्णपुरीमें अभी विद्यमान है।) तत्पश्चात् ग्यारहवें कुण्डलवरद्वीपमें कुण्डलगिरि पर्वत पर ४ व तेरहवें रुचिकवरद्वीपमें रुचिकगिरि पर्वत पर चार अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। इस भांति मध्यलोकमें कुल ४५८ अकृत्रिम जिनमंदिर हैं।

मध्यलोकके अकृत्रिम जिनालय संक्षिप्तमें

जंबूद्वीपके	७८
धातकीखंडके	१५८
पुष्करार्धद्वीपके	१५८
मानुषोत्तरपर्वतके	४
नंदीश्वरद्वीपके	५२
कुण्डलवरद्वीपके	४
रुचिकवरद्वीपके	४
कुल जिनालय	४५८

देवलोक व भवनलोक आदिके होकर इस तीन लोकमें कुल ८,५६,९७,४८१ अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। वे सभी जिनमंदिरमें पुण्यशाली देवादि पूजा-भक्ति-आराधना करते हैं। हम जैसे पुण्यहीन यहाँ उनकी भक्ति भावसहित भावनासे पूजा आराधना करते हैं।]

इस तरह सुवर्णपुरीमें शाश्वत १३० जिनेन्द्र भगवन्तोंको हम भक्ति-श्रद्धा व समर्पणभावसे स्थापना-पूजा-भक्ति-आराधना करते भावना भातें हैं कि वे जिनेन्द्र भगवंत हमें गुरु-प्रतापसे मुक्तिपुरीमें ले जाएँ। इसी भावनाके साथ—

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ—३६४२५० (जि. भावनगर)

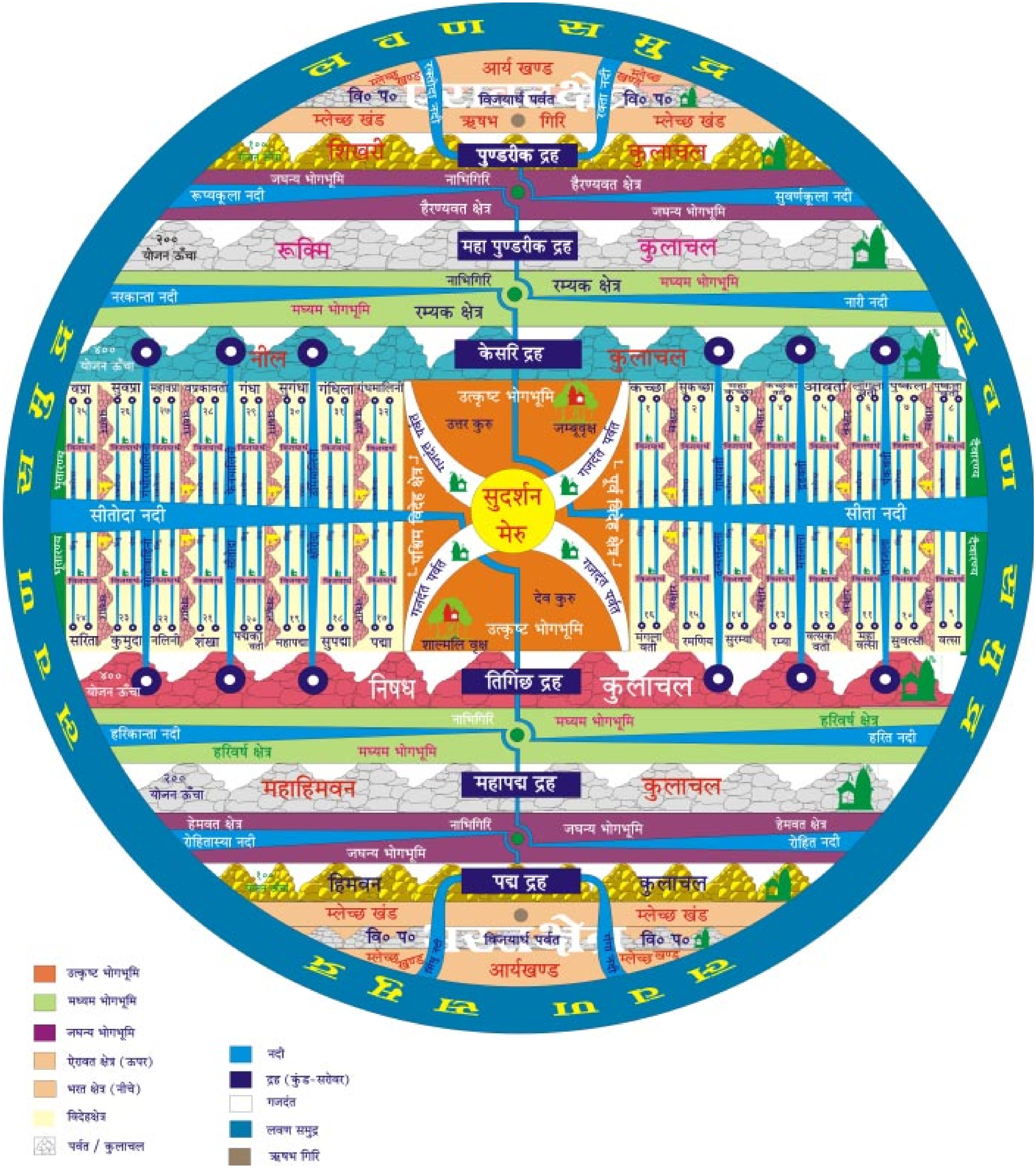

लवण समुद्र
आर्य खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
वि० प०
विजयार्ध पर्वत
म्लेच्छ खंड
ऋषभ गिरि
पुण्डरीक द्रह
शिखरी
कुलाचल
जघन्य भोगभूमि
नाभिगिरि
हैरण्यवत क्षेत्र
रूप्यकूला नदी
सुवर्णकूला नदी
२०० योजन ऊँचा
रूक्मि
महा पुण्डरीक द्रह
रम्यक क्षेत्र
मध्यम भोगभूमि
नरकान्ता नदी
नारी नदी
४०० योजन ऊँचा
नील
केसरि द्रह
उत्कृष्ट भोगभूमि
उत्तर कुरु
जम्बूवृक्ष
गजदंत पर्वत
सुदर्शन मेरु
सीतोदा नदी
सीता नदी
पश्चिम विदेह क्षेत्र
पूर्व विदेह क्षेत्र
देव कुरु
शाल्मलि वृक्ष
वप्रा
सुवप्रा
महावप्रा
वप्रकावती
गंधा
सुगंधा
गंधिला
गंधमालिनी
कच्छा
सुकच्छा
आवर्ता
पुष्कला
पुष्कलावती
सरिता
कुमुदा
नलिनी
शंखा
महापद्मा
सुपद्मा
पद्मा
मंगलावती
रमणिया
सुरम्या
रम्या
महावत्सा
सुवत्सा
वत्सा
निषध
तिगिंछ द्रह
हरिकान्ता नदी
हरित नदी
हरिवर्ष क्षेत्र
महाहिमवन
महापद्म द्रह
हेमवत क्षेत्र
रोहितास्या नदी
रोहित नदी
पद्म द्रह
हिमवन
आर्यखण्ड
भरत क्षेत्र
उत्कृष्ट भोगभूमि
मध्यम भोगभूमि
जघन्य भोगभूमि
ऐरावत क्षेत्र (ऊपर)
भरत क्षेत्र (नीचे)
विदेहक्षेत्र
पर्वत / कुलाचल
नदी
द्रह (कुंड-सरोवर)
गजदंत
लवण समुद्र
ऋषभ गिरि

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण, विधान प्रारंभ ---------------------------------- 1

१. जंबूद्वीप सम्बन्धित समस्त जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब-पूजा ------ 6

२. सुदर्शनमेरु सम्बन्धित जिनमंदिरस्थ जिनेन्द्र पूजा ------------ 11

३. सुदर्शन मेरु सम्बन्धित चतुर्गजदंत स्थित जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा ------------------------------- 18

४. जम्बूवृक्षे जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा ------------------- 23

५. शाल्मली वृक्षे जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा --------------- 27

६. विदेह क्षेत्रे जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा ----------------- 32

७. जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रे शाश्वत नामवर्ती चतुर्जिन पूजा ----------- 36

८. विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्धे सिद्धकूट जिनमंदिर जिनेन्द्र पूजा -------------------------------- 41

९. विदेहक्षेत्रस्थ षोड़श वक्षारे सिद्धकूट जिनमंदिर जिनेन्द्र पूजा --- 50

१०. भरतक्षेत्रे जिनालय जिनेन्द्र पूजा -------------------------- 57

११. भरतक्षेत्रे त्रिकालस्थ चतुर्विंशति जिन पूजा ----------------- 62

१२. सुदर्शन मेरु सम्बन्धित दक्षिण उत्तर षट्कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनेन्द्र पूजा ------------------------- 67

१३. हिमवान पर्वते जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा ------------------- 72

१४. महा हिमवान पर्वते जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा --------------- 76

१५. निषध पर्वते जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा --------------------- 81

१६. नील कुलाचले जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा -------------- 86

१७. रुक्मि पर्वते जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा --------------------- 91

१८. शिखरी पर्वत जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा -------------------- 96

१९. ऐरावत क्षेत्रे जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा -------------------- 100

२०. ऐरावत क्षेत्रे शाश्वत चतुर्विंशति जिन पूजा ---------------- 105

✻ समुच्चय जयमाला ------------------------------------ 110

✻ श्री जम्बूद्वीप स्थित अकृत्रिम जिनालयकी पूजा ------------- 112

✻ श्री बाहुबली मुनिराज पूजन ---------------------------- 117

✻ श्री बाहुबली मुनिराज पूजन ---------------------------- 120

✻ श्री सीमंधरादि बीस विहरमान जिनपूजा ----------------- 124

✻ श्री आदिनाथ जिनपूजा -------------------------------- 128

✻ श्री महावीरस्वामी जिन पूजा ---------------------------- 131

✻ श्री धातकीविदेह-भावी जिनपूजा ------------------------ 134

✻ स्वानुभूति-तीर्थ सुवर्णपुरी पूजा ------------------------- 138

✻ अर्घावली -- 142

✻ समुच्चय अर्घ --------------------------------------- 145

✻ आरती --- 147

✻ शान्तिपाठ -- 153

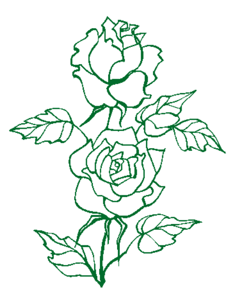

ॐ

।। नमः सिद्धेभ्यः ।।

श्री जम्बूद्वीपस्थ शाश्वत जिनमंदिर-जिनबिम्ब विधान-पूजा

(मंगलाचरण)

(दोहा)

पंच परमपदकौं नमौं, नमौं शारदा माय।
गुरु गौतमके चरन युग, वंदौं मन वच काय।।१।।

वृषभनाथ जिन आदि दे, महावीर पर्य्यन्त।
चौवीसौं जिनकौं नमौं, मंगल करत महंत।।३।।

अष्टोतर शत नाम करि, थुति करिहौं जिन तोहि।
दीन जानि भव-समुद्रतैं, पार करौं प्रभु मोहि।।४।।

(छंद अडिल्ल)

श्री सर्वज्ञ सर्व भाषामय जानिये,
सर्व देव देवाधि स्वयंभू प्रमानिये।
है जु सर्व उपदेशक सर्व प्रभु स्तथा,
सर्व कृपाकर सर्व धर्ममय प्रभु यथा।।१।।

सर्व मुख्य फुनि सर्व विलोकन जग सुखी,
जगत कीर्त जगन्नाथ जगनुत जगमुखी।
जगचक्षु जगव्यापि जिनेश्वर है सही,
निर्विषाद आतंक रहत मुनिवर कही।।२।।

निःप्रमाद निकलंक निरंजन थान है,
निरारम्भ निर्मोह विगत भय प्रान है।
अव्यय नाम अनन्त पराक्रमवन्त ये,
पंचेन्द्री वश करन सदा जयवन्ति ये।।३।।

है अलक्ष वीरज अनन्त अचलो तथा,
अनघ अनन्त सरूप नाम सुमरो यथा।
सिद्धोनन्त सुखात्मक आतम मय सदा,
परब्रह्म पर तेज सुखाकर सर्वदा॥४॥

मुक्ति श्री भरतार कर्म करि मुक्त हैं,
मुक्ति मार्ग उपदेशक ज्ञान विमुक्त हैं।
विश्वंभर जग जन जीवन हितू,
दयानिधान सुजान, आतमादम जितू॥५॥

दाता धीश दमेंद्रिय परमेष्ठी कहें,
पुन्यातम सुपवित्र कृपाधारी लहें।
हैं पवित्र करतार पवित्रार्थ सदा,
पुनि पवित्र वच सार महा ज्ञानी मुदा॥६॥

ब्रह्मा ब्रह्मपती पुनी ब्रह्म सुदेशकौं,
ब्रह्मन प्रिय, पद्मासन जानि महेशको।
श्री पद्मेश महेश्वर ज्ञान महाव्रती,
महा शांत सुमहांत महा ध्यानी यती॥७॥

सदानन्द सत्योदय नाम सुजानिये,
नित्य नित्य प्रजल्पक फुनि परमानिये।
धर्मराज धर्माधिप धर्मानंत कृत,
सुधर्म दातार धर्मवंत तीर्थकृत॥८॥

धर्मशील धर्मोपदेश कारक महा,
कामरूप क्रिया व्यतीत सुख श्री जिन लहा।
कलकांगो सुकलाढ्य कलानिधि सार है,
कल्मषहार केवली जगत आधार है॥९॥

स्याद्वाद वेदी जिन वेदज्ञ हैं,
निर्ग्रन्थो निर्ग्रन्थ नाथ धर्मज्ञ हैं।

एक अनेक सनातन यो निरहार है,
सदा योग कृतकृत्य सुलक्षण धार है॥१०॥
प्रशांतादि निर्मेष क्षेम कृत है सही,
पञ्चकल्याणक पूजा जोग सुगुरु कही।
शील समुद्र जग चूड़ामणि नाम है,
भव्य बन्ध मोक्षज्ञ बन्ध शिव ठाम है॥११॥
निधन अनादि सवाई सु शङ्का है सही,
चतुरानन इत्यादि नाम माला कही।
जो धारै भवि कण्ठ मांहि शिवपद लहैं,
जपै प्रातः उठि सदा नैन कवि यों कहैं॥१२॥

(चौपाई)

इस विध नामऽनन्त संयुक्त, स्तुति करनेको समरथ।
रागदोषच्युत हो तुम ईश, भक्ति सहित स्तुति करो जगदीश॥१३॥
नमों प्रभु तुमको नमों, लोक शिखरस्थित भव विष वमो।
धर्मोदधि चन्द्रायन जानि, भव्य कमल परकाशन भान॥१४॥
जगत जीव सत्योघ अपार, नमों मेघ सम पोषन हार।
मुनिगन चन्द्र सरोवर हँस, नमों प्रकाशि बोध रवि अंश॥१५॥
कर्म काठ अग्नि चित्र थान, नमों त्रिविध करि श्रीभगवान।
पञ्च ज्ञान सागर सुखदाय, नमों शुक्लध्यानग्र सुभाय॥१६॥
मिथ्यामोह ध्वांत कृत क्षीन, नमों नमों शुद्धातम लीन।
सकल दोष घन शमन समीर, गुण अनंत करि शोभित वीर॥१७॥
तुमको नमों विनय धरि धीर, पाप पञ्च क्षालन जिमि नीर।
भव्य जीव मन भृंग सरोज, चरन तुम्ही नित करन सुमोज॥१८॥
विन कारन जगबन्धु विख्यात, नमों नमों तुम गुन अवदात।
अष्टोत्तर सत नाम विशाल, पावन पुन्य करन दर हाल॥१९॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ मंडप लक्षणं—

दीरध मंडप रचा बहुविध कीजिये,
नाना शोभा सहित लसत हरषीजिये।
घंटा तोरन पुष्पमाल शोभे तहां,
बीच मौतिनके गुच्छा लटकी है तहाँ।
ताल कंसाल मृदंग भेरि पटडा घने,
बाजत अधिक बजाय गायगुन निजतने॥१॥

अथ मंडल लक्षणं—

पंच दान रतननुको चूरन ल्याकै,
जम्बू मण्डल रचहू बनायके।
प्रथम सुदर्शन मेरु मध्य जाकै वसै,
ऐसे जंबूद्वीप अधिक शोभा लसै।
जम्बूद्रुम शाल्मली वृक्षराज ही,
मेरु सुदर्शन भुजा दोय छबि छाज ही।
ताके पार्श्व कुलाचल [1]सरविधि शोभतें,
तिन ऊपर षट् द्रह जलामृत मल धोवतें॥

तिन ही मैंसे निकसी चलि सरिता सही,
नाम चतुरदस संख्या परमिति इस कही।
और विभंगा द्वादश विचारिये,
इह विधिकी बहु रचना नैन निहारिये॥

वक्षारगिरि षोडश हेम मई जहां,
[2]रूपाचल चौतीस बिराजित हैं तहां।
मेरु सुदर्शन दक्षिण भारत है सही, षड खंडो
करि मण्डित भूमि विराज ही॥

---

१. सरविधि = सर्व प्रकारसे । २. रूपाचल = विजयार्द्ध ।

उत्तरमें ऐरावत क्षेत्र बखानिये,
दोऊकी रचना इक सार प्रमानिये।
हैमवत हरिक्षेत्र विदेह सु लीजिये,
रम्यक हैरण्यावत और गनीजिये॥

पाद मात्र ऐरावत उत्तरें कह्यो,
पुनि विदेह पर्यंत चतुर गुन वरनयो।
इस विधि रचना प्रथम दीपकी जानियो,
पाठ संस्कृत मांहि सोइ परमानियो॥

अब पूजाकी विधि संक्षेप बताइये,
सुनो भव्य दे कान सुमनमें ल्याइये।
द्वादश विधि आभूषण पहिर सुहावने,
धौत वस्त्र वर धारि अंग मन भावनै।
देव शास्त्र गुरु प्रथम समर्चन कीजिये,
पुनि जिन सिद्ध महर्षिनु अर्ध सु दीजिये॥
पीछे तैं पूजाको बहु विस्तार है,
मेरु सुदर्शन ते लै करि सुखकार है॥

पूजा नं. - १

जंबूद्वीप सम्बन्धित समस्त जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब-पूजा

(छंद हरिगीतिका)

द्वीप जंबू विषै जिनथल, कृत्रिम अकृत्रिम है सही।
तिन मांहि 'जिन'के बिंब विलसहि, तिष्ठ है पुनकी मही।
ते सकल प्रतिमा भक्ति करी, मैं जजों मन-वच-कायतैं।
वसु द्रव्यतैं तिन पांय पूजो अंग आठ नमायके।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल वीरजिनचंद)

निरमल नीर सुहावनोजी, कनकझारी धरि लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, जनम जरा मिट जाय।।
भाई जिन पूजों मन वच लाय।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन घसु शुभ भावनोजी, निरमल नीर मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, जगत-ताप मिट जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत नख शिख सुध सही जी, उज्ज्वल सुगंध सुलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अक्षयपद करतार।ान० ाान० ा-
भाई जिन पूजों मन वच लाय।।ाा० ान० ान

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं०

फूल सुगंध सुहावनेजी, अलि गुञ्जत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, कामभाव नशि जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

षट् रस जुत नैवेद्य ले जी, मन वच काय लगाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, क्षुधारोग मिट जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

रतनमई दीपक कियोजी, कनक थाल धर लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, मोह तिमिर नशि जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप भेलि दश विधि करीजी, परिमल जुत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल लौंग बिदाम लेजी, और भले फल लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, लाभ मोक्ष फल पाय।।ननननननननन
भाई जिन पूजों मन वच लाय।।ाा० ।न० ।न

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जल चन्दनको आदि देजी, वसु द्रव अर्घ मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अजर अमर तन थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्०

(छंद जोगीरासा)

जंबू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेहा।
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा।।१०।।
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही।
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी।।
षोडश वनके थान चार गजदंत हैं।
ह्यां इक इक जिनभवन जजौं ते संत हैं।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंध्यष्टसप्ततिअकृत्रिमजिनालयेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद वेसरी)

जंबू द्वीप विषै जिन गेहा, तिनकी माल सुनो करि नेहा।
सुनते ज्ञान होय सुख पावै, पुण्य बधै अद्भुत जस ल्यावै।।१।।

(छंद पद्धरि)

जिनथान दीप जंबू मँझार, लख मेरु सुदर्शन तीर्थ सार।
तिस ऊपर जिनके थान जोय, सो पूजों मन वच कर्म धोय॥२॥

गजदंतों पे जिनगेह जान, बिन किये रतनमय शुभ निधान।
तहां रतनबिंब अति शुभ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥३॥

तरु शाल्मली जंबू सुजान, तिनपे जिनमंदिर अचल मान।
तिन मांहि रतनमय बिंब जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥४॥

षट जानि कुलाचल गिरि सु सार, तिनपे जिनमंदिर पाप जार।
तिनपे जिनमंदिर सुभग सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥५॥

भरत ऐरावत [1]बैताड़ जानि, तिनपै जिनमंदिर अचल मानि।
प्रतिमा तिनमें मणिरूप जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥६॥

पूरब विदेह वैताड़ मांहि, जिनमंदिर मणिमय अचल ठांहिं।
है अचल बिंब जिन माँहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥७॥

पश्चिम विदेह वैताड़ थाय, जिनगेह तिनोंके शीश ठांय।
जिनबिंब तिनोंमें जान सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥८॥

वक्षार शिखरके शीश पांय, पूरब विदेहके मांहि थाय।
तिनमें जिनमंदिर तीर्थ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥९॥

पश्चिम विदेह वक्षार जान, तिन शीश गेह जिनके सु मान।
प्रतिमा मणिमय तिन माँहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१०॥

जे नंदी परवत माँहि थाय, जिनगेह और विन किये पाय।
तिनमें प्रतिमा जिन शीश सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥११॥

जे किये थान कैलास माँहि, मंदिर तिनके अति सुभग थाहि।
तहां प्रतिमा विनय स्वरूप सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१२॥

---

१. वैताढ = विजयार्द्ध

भरत ऐरावत माँहि पाय, भवि करवाये जिनथान थाय।
तहां विनय सहित जिनबिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१३॥

जे होय विदेह सु पूर्व माँहि, जिनभवन भव्य कृति सुभग ठाँहि।
तिन मांहि विनयजुत बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१४॥

जो पछिम विदेह मँझार जानि, चैत्यालय भवि कृति जोग मानि।
जुत विनय तिनोंमें बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१५॥

जे तीर्थस्थान सुकृत निधान, है सिद्धक्षेत्र महिमा सुथान।
तहां सुर नर पूजे दीन होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१६॥

जे अतिशय क्षेत्र सु पूज्य थाय, ते विनय सहित जिनबिंब पाय।
पूजैतैं सुकृत लाभ होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१७॥

इत्यादिक जम्बू दीप माँहि, जिनथान बिंब जिन विनय ठाँहि।
सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्र जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१८॥

(दोहा)

क्षेतर जंबूद्वीपके, हो संबंध जिनथान।
तिन पूजै सुख थल मिले, ते पूजों हठ ठान॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति०

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - २

सुदर्शनमेरु सम्बन्धित जिनमंदिरस्थ जिनेन्द्र पूजा

(हरिगीतिका)

दीप जंबू विषैं मेरु सु, नाम शुभ दर्शन लह्यो।
इन विषै षोडस धाम जिनके, शोभ जुत सुर जय कह्यो॥
तिन माँहि बिंब जिनेशके हैं, रूप जिन तन सोहहीं।
धरि भक्ति भाव नमाय शिर निज, पूजि हैं पुनि की मही॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द अडिल्ल)

मेरु सम्बन्धी थान जिनेश्वर के सही,
भव्यन को हितकार दैन शिव की मही।
राजत हैं जिन बिंब तिनों के पाय जी,
निर्मल जल ले, पूजों भाव लगायजी॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

(छन्द जोगीरासा)

मेरु सुदर्शन के षौडश हैं, थान जिनेश्वर भाई,
तिन महिं प्रतिमा जिन आकारो, ध्रुव थानक सुखदाई।
चंदन तें श्री जिन पद पूजों, उत्सव धार अपारो,
ता फल भव आताप नाश हो, उपजै हित तिन केरो॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो संसारताप विनाशनाय०

(छन्द हरिगीतिका)

अक्षत अखंडित धवल सुन्दर, धोय सुध करि लाइये,
धरि थार में कर लेय अपने, हरष बहुत बधाइये।
शुभ थान षोडश मेरु के 'जिन', बिंब पद पूजा करों,
ता फलै थान अखंड पावे, तासतैं थुति ऊचरों॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

दीप जंबू मांहि मेरु सु नाम शुभ दर्शन कह्यो,
जिन थान षोडस ता संबंधी, ध्रुव स्थानक बनि रह्यौ।
तिन बीच बिंब जिनेश के पद पूजिये सुख लायजी,
ता फलै नाशै मदन को मद, जीव सुखपद पायजी॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

मेरु के जिन थान षोडश, अचल मणिमय राजिए,
तहं देव खग नित पूज ठानै, तासतै शुभ पाजिये।
ते बिंब, मैं भी लेय शुभ चरु, जजों मन वच कायजी,
जा फलै दुखदा रोग दुद्धर क्षुधा, को क्षय कारजी॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

थान तो जिन राज जू के, मेरुपे चिरके सही,
तिन मांहि बिंब सु रतनमय हैं, छबी जिनसी बनि रही।
तिन बिंब के पद लाय दीपक, आरती सु चिंतै करो,
ता फलै होय अज्ञानतम को, नाश सम्यक् चित धरो॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

मेरुके जिन थान सुन्दर, सकल को सुखदाय हैं,
तिन मांहि बिंब जिनेशके, भवि जीव पूजन जाय हैं।
जिन बिंबके पद धूप दश विधि, लायके पूजन करों,
ता फलै आठों कर्म अरि क्षय, होय शुध पदको धरों॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

मेरु जिन थल जानि षोडस, महा पुनि फलदाय हैं,
देव खग ही पूज ठाने, और को नहिं जाय हैं।
तिन बिंबके पद लाय शुभ फल, पूजिहों सुखकारनै,
ता फलै शिवफल होय सुन्दर, सकल भवदुख टारनै॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

मेरुके सब थान तीरथ पाप हर, सुखदाय हैं,
जिन पूज्य सुर खग लेय पुन फल, फेर जिन गुण गाय हैं।
जिन बिंब तैं सब रूप जिनको, तास पद सेवा करों,
ता फलै और न चाह मेरे, जनम जग में ना धरों॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि–जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

सुदर्शनमेरुके चार वन सम्बन्धि प्रत्येक अर्घ

(छन्द अडिल्ल)

भद्रशाल वन चवदिशि, चव जिन धाम हैं।
बिंब रतन जिन देव, तने हित ठाम है।
सुर खग तो तहँ जाय, पांय पूजन करै।
मैं इहां भावन भाय, जजों मुझ अघ हरैं॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवन सम्बन्धि चार दिशि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(छन्द गीतिका)

नंदन वन की कथा को कहि महा शुभ थल पाइए।
तहां थान 'जिन'के पाप हरता, अचल मणिमय गाइए॥
जहं देव खग ही जाय पूजैं, और को पुनि ना मिलैं।
तिन थान की यह भावना बहु, भाय पूजा अघ टलैं॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु नंदनवन सम्बन्धि चार दिशि जिन चैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सौमवन थल थान सुर सो, कहत शोभा किम बने।
तिस मांहि चव दिश थान 'जिन'के, भव भवके अघ हने॥
खग देव नित तिस तीर्थ जावै, पूजी के शुभ थल लहै।
इस थान मैं भी भाय भावन, पूजिहूं फल अघ दहै॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु सौमनस वन संबंधि चार दिशि जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीतिका)

पांडुक सुवन मेरु सुदर्शन, शीश पै राजे सही।
चव थान तीरथ धाम 'जिन'के चव दिशा शोभैमही।
तिन मांहि बिंब जिनेशके हैं, पूज जिनकी कीजिए।
ता फलै कौलों कहै भवि जन, जनम-मरण ना लीजिए॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु पांडुकवन सम्बन्धि चार दिशि चार जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

मेरु सुदर्शन सब विषै, तीरथ पावन कार।
तुङ्ग घनो शोभै अधिक, जिन थल मंडित सार॥१॥

(छन्द वेसरी)

मेरु विषै जिनवर के गेहा, इम लखि भवि जावै करि नेहा।
ताकी महिमा आगम गाई, मैं यहाँ अल्प कहूँ सुखदाई॥२॥

मेरु कंद पृथ्वी के मांही, जोजन सहस एक की ठांही।
भूमि ऊपरै वन शुभ गायो, भद्रशाल गिर चव दिश पायो॥३॥

पूरव पश्चिम तिस विसतारा, जोजन सहस बीस दो धारा।
उत्तर दक्षिण की सुन भाई, जोजन दो सौ पचास बताई॥४॥

तामें चव दिशि ही जिन गेहा, तिनमें रतन बिंब जिन नेहा।
पूजा को सुर खग तो जावै, और भव्य धरि भावन भावैं॥५॥

भद्रशालतें ऊपर जइये, पंच शतक जोजन तब पइये।
नंदन वन कहँ अति शुभ आवै, मेरु गिरद कटनी पै पावै॥६॥

कटनी व्यास व्यास वन सोही, जोजन पांच सैकड़ा होही।
जामें भी चय दिश चव गेहा, पूजै सुर खग करि अति नेहा॥७॥

नंदन वन तैं ऊपर जावै, जोजन इतने गिनत बतावै।
साठी बासठ सहस उतंगो, आवै तव सोम वन चंगो॥८॥

कटनी व्यास पंच शत भाई, तापै सौम अरण सुखदाई।
तामें चव दिस ही भाई, व्यन्तर देव थान शुभ दाई॥९॥

चव दिश ताकें सुन्दर थानो, जिनवर गेह तीर्थ ध्रुव मानो।
पूजन को तहां सुर खग आवै, भूमि गोचरी भावन भावै॥१०॥

बहुरि मेरु गिरि ऊपरि जइये, जोजन सहस छत्तीस सु पइये।
पांडुक वन तहां तीरथ खासो, जोजन पंच शत षट कम आसो॥११॥

तामें चव दिशि चव जिन गेहा, तिनमें बिंब सुभग जन जेहा।
देव तहां पूजा विधि ठानें, अपनो सुर पद धनि धनि मानें॥१२॥

पांडुक वन चउ दिश के मांही, चार शिला तीरथ शुभ ठाही।
तिनमें जनम कल्याणक होवै, देखत भविके अघमल खोवै॥१३॥

शत जोजन लांबी जिस जानो, चौडी तातैं अर्द्ध बखानो।
जोजन आठ तनो दल होई, अर्द्ध चन्द्र आकार सुजोई॥१४॥

चार शिला के हैं चव नामा, चार वरण भिन भिन शुभ ठाना।
पांडुक शिला कनकमय जानो, सो परथम तो यह [1]शिल मानो॥१५॥

पांडुक कंबला शिल दूजी भाई, चांदी सम तिस वरण बताई।
तीजी रक्त शिला शुभ मानो, ताया कंचन सम तन जानो॥१६॥

रक्त कंबल चौथी को नामो, माणक रतन जुसो शुभ ठामो।
तथा रुधिर के रंग को धारै, इहा कल्याण होय अघ जारै॥१७॥

ये ही शिला चार शुभ ठामो, इन पै तुङ्ग सिंहासन धामो।
एक एक शिल पे सिंह पीठा, तीन तीन सुध ज्ञानी दीठा॥१८॥

एक तुङ्ग मधि लघु दोय पासै, तुङ्गोपरि जिन लघु हरि भासै।
कलश सहस वसु शिल शिल जानो, इह रचना ध्रुव अथिर न मानो॥१९॥

जेती रचना मेरु सुगाई, ते सब ही नित अचल बताई।
इत्यादिक शोभा सुखकारी, पांडुक वन जानो अति प्यारी॥२०॥

ता मधि एक चूलिका जानो, वैडूरज मणि सो तिहि मानो।
दोय बीस तुङ्ग जोजन होई, षोडश जिन थल भवि मल खोई॥२१॥

और सुनो गिरि रचना सोई, अद्भुत अकृत्रिम शुध होई।
बाल अन्तरै ऋजु विमाना, पैंतालिस लख जोजन माना॥२२॥

मेरु कछु तलि रतना जडियो, और सबै कंचन सम पडियो।
जोडि सकल लख जोजन होई, षोडशजिन थल भविमल खोई॥२३॥

---

१ शिल = शिला

ये जिन थान मेरु के भाई, देव खगां ठानै थुति आई।
तातैं मैं भी भावन भाऊं, शक्ति समान पुण्य उपजाऊं॥२४॥

(सोरठा)

मेरु थान जिन बिंब, परसत सुकृत ऊपजै।
छूटै पाप कुटुम्ब, टेक धार तातैं भजों॥२५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धि जिनालय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घम्।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

સહજ ❀ ચિદાનંદ.

पूजा नं. - ३

सुदर्शन मेरु सम्बन्धित चतुर्गजिदंत स्थित जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छंद हरिगीतिका)

मेरु शुभ दर्शन सम्बन्धी, चार गज दंते कहे,
तिन मेरु इक सुभलोक लागी, नोक इक विदिशा रहे।
चारि ही पे जिन मंदिर, अचल कंचन नग जरें,
इन मांहि बिंब सु देव जिनके, पूजतें पातक झरे।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धितचतुर्गजदन्तस्थित जिनालयस्थ जिनबिंब समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धितचतुर्गजदन्तस्थितजिनालयस्थ जिनबिंब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धितचतुर्गजदन्तस्थितजिनालयस्थ जिनबिंब समूह अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द जोगीरासा)

निरमल पानी क्षीरोदधिको, करधरि झारी भाई।
निरमल मन तन वचन ठानिके, भक्ति हिये अधिकाई।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहाँ चढाऊँ।
ता फल जनम जरा दुख नाशै, अजर अमर पद पाऊँ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनमन्दिरेभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन बावन अधिक सुगंधित, गुंजित भंवरे तापै।
मलयागिरि अति शीत उपावन, धरि कर जुगले आपै।
चव गज दंतशिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल भव आताप नाश हो, अजर अमर पद पाऊँ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो चंदनं०

अक्षत उज्ज्वल जाय कली से, नख शिख शुद्ध बनाई।
धोय सुभग करि लेकर अपने, हिरदै अति हरषाई।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल ठाम अखै फल पावै, और न वांछा गाऊँ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

फूल मनोज्ञ गंध बहुधारी, रंग बिरंगे भाई।
घ्राण वश्य होके अलि भरमें, सुरतरु से अधिकाई।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल काम विकार नाश करि, निर आकुलता पाऊँ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

षट रस नेवज तुरत आपने, हाथ विषै ले आयो।
पूजन करने काज आपने, देव सेव पद ध्यायो।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल नाशै भूख बावरी, वेदन सकल मिटाऊँ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीप रतन के कनक थाल में, जोय पुंज ले आनो।
ज्योति जिन्हों की है तम नाशक, सो अपने कर ठानो।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल नाश होय मोह तम, ज्ञाननि केवल पाऊँ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

दशधा वास मिलाय धूप करि, ले निज कर हर्षाए।
खेय अगनि मधि गाय जिनंद गुण, पूजनकूं उमगाए।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल कर्म तनो क्षय उपजै, और नहीं फल पाऊँ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्ता भाई।
इनको आदि घने फल करले, पूजनकूं उमगाई।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल मोक्ष तनो फल उपजै, तातैं जिनगुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।८।

जल चंदन अक्षत [१]प्रसून चरु, दीप धूप फल जानो।
ते वसु द्रव्य रु अरघ ठानिके, मन शुध करिके ठानो।
चव गजदंत शिखर शिर ऊपर, जिन थल तहां चढाऊँ।
ता फल भवका भरम मेटि है, और कहा गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।९।

चव गजदंते तुंग घने हैं, सुभग भलो आकारो।
तिनपै च्यारि जिनेश्वर के थल, शोभा अधिक अपारो।
तिनके बिंब बिराजत सुंदर, पूजन चित ललचायो।
जोडि दरव वसु अरघ ठानिके, जै जै जै जिन गायो।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धित-चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।१०।

१. प्रसून = पुष्प

प्रत्येक अर्घ

(छंद गीतिका)

माल्यवान सुमेरु गिरिको जान गजदंतो सही।
तिस ऊपरै जिनदेव को थल, पूजियतु तीरथ मही।
तिस मांहि विंब जिनेशके शुभ, रतन रूप बखानिये।
मैं जजों मन वच काय लेकरि, अर्घ वसु द्रव आनिये।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु सम्बन्धित माल्यवान गजदंत उपरि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद अडिल्ल)

महा सोम गजदंत दूसरो है सही,
तापै सिद्धकूट जिनालय की मही।
ध्रुव तहां जिनविंब रतन के मानिये,
वसु द्रव्य अर्घ मिलाय जजों पद जानिये।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु सम्बन्धित महा सौमनस गजदंत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद पद्धरि)

विद्युतप्रभ शुभ गजदंत जोय, सिधकूट तहां जिनमंदिर सोय।
तिनमें जिन प्रतिमा जिन प्रमान, मैं पुजूं तिन पद अर्घ आन।।

ॐ ह्रीं विद्युतप्रभ गजदंत संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

गजदंत गंध मदन पे जानि, सिद्धकूट शिर जिन थल भानि।
तिनमें प्रतिमा जिन आकार, तें पूजों कर वसु द्रव धार।।

ॐ ह्रीं गंधमादन गजदंत उपरि सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

मेरु सुदर्शन को भलो, कह्यो कथन सुखदाय।
सुनिते अति सुख ऊपजे, पढ़े बुद्धि अधिकाय॥

(छन्द बेसरी)

गजदंते या विधि है भाई, विदेहक्षेत्रमें मेरु सु थाई।
ताके पूरव पश्चिम सोई, भद्रशाल वन वेदी होई॥
तिन वेदी की नोकें भाई, निषध नील ते आन मिलाई।
मेरु तनी चव दिश को जानो, पडे चार गजदंत बखानो॥
मेरु थकी इक नौक लगाई, दूजी निषध नील नौ आई।
ऐसे गजदंते चव जानो, अब सुनि इनको अर्द्ध प्रमानो॥
नील, निषध कने तो जानो, जोजन चव शत तुंग बखानो।
मेरु [1]पै पाँच शत जानो, तहँ के जिन पूजों थुति आनो॥
ऐसे चव गजदंते भाई, चव जिनमंदिर है सुखदाई।
मालिवान गजदंता सोही, सब वैडूर्य रतन सो होई॥
गजदंत महा सौमनस दूजा, चांदी सम रंग जिन धुति सूजा।
तीजा विद्युतप्रभ गजदंता ताया सोने समरंग सन्ता॥
चौथा गजदंता सुन भारी, नाम गंधमादन सुखकारी।
कंचन सम रंग पीला जानौ, सिद्धकूट पे जिनमंदिर मानों॥
इन पे रचना ते सब गाई, रतन कनकमय सुभग बताई।
देव जिनेश्वर के तहँ गेहा, तातैं गजदंत तीरथ नेहा॥
मेरी शक्ति जान की नाहीं, तातैं हम इहाँ भावन भाही।
ले वसुद्रव्य बिंब जिन सेऊ, ता फल जामन मरण न लेऊं॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु सम्बन्धि चतुर्गजदंत उपरि चतुर्जिनालयेभ्यो जयमाला अर्घम्॥

---

१. पै = पासमें

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

❀

पूजा नं. - ५

जम्बूवृक्षे जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

जम्बू द्वीप विषै जु मेरु सुदर्शन महा,
जम्बू नामा वृक्ष तुंग अति शुभ लसा।
ताकी शाखा ऊपर इक जिन थान है,
ते जिनवर यहां थापि जजों थुति ठान है।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निरमल नीर क्षीर दधि तनों, कनक झारिका में शुभ ठनो।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं।।१।।

चंदन गंध नीर घसवाय, लाऊं कर धर भक्ति बढाय।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं।।२।।

अक्षत उज्ज्वल लेय विशाल, आ पहुंच्यो काटन अघ जाल।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं।।३।।

पुष्प सुगंध वरण अधिकाय, लायो काम हरन उमगाय।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं।।४।।

नाना रस चारु सुभग बनाय, कर धर ले आऊं चित लाय।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं।।५।।

दीपक रतन कनक थल जेय, मिथ्या नाश करन को तेय।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं।।६।।

दशधा धूप सुगंध बनाय, खेऊं अगनि हरष मनलाय।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं।।७।।

श्रीफल लोंग बदाम अपार, ले आयो शुभ परिणति धार।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं।।८।।

जल चंदन अक्षत सब लेय, आयो अघमल धोवन जेय।
जम्बूवृक्ष गेह जिन सोय, मैं पूजों मन वच तन लेय॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं॥९॥

(अडिल्ल छन्द)

आठ दरब कर लेय महा हरषाय के,
पूजों जिन के पाय अष्ट गुण भाय के।
जम्बूवृक्ष के ऊपर जिन थल जे कहे,
तिन पद मन वच तन शुभ पूजत धनि भये॥

ॐ ह्रीं जम्बू वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं॥१०॥

जयमाला

(दोहा)

शोभा सारी सुखमई, जम्बूवृक्ष की जान,
तापे जिनथल पूजिये, मन वच तन पहिचान।

(छन्द वेसरी)

उत्तम भोगभूमि के मांही, थानक एक कनकमय ठांही॥
जोजन पांच सैकड़ा भाई, है विस्तार गोल अधिकाई॥

वसु जोजन तना मोटा जानो, और आध जोजन तुंग मानो।
ताके ऊपर मध्यसु भाई, एक पीठिका और बताई॥

पीठ आठ जोजन तुंग होई, बारह जोजन व्यास सु जोई।
ऊपर पीठ व्यास सुनि भाई, जोजन चार तना अधिकाई॥

तिस ही थल के ऊपर जानो, बारह वेदी है शुभ थानो।
वलयाकार कनकमय होई, रतन जडित सुन्दर सुख होई॥

वेदी सब अघ जोजन तुंगा, लागे रतन सुभग नग मूंगा।
जोजन षोडश भागे चौडी, शोभै सुरग कोट की जोडी॥

सब मिलि वृक्ष एक लख जोई, चालिस सहस एक शत होई।
ऊपर बीस सकल मिल जानो, ये परिवार विरछ शुभ मानो॥

जोजन दोय बड़े तुंग दोई, ता ऊपरि चव शाखा जोई।
जोजन आधे चौडी शाखा, वसु जोजन लम्बी जिन भाषा॥

वज्रमई ये शाखा जानो, उप शाखा रतनामय मानो।
मूंगा सम रंग फूल अनूपा, फल मृदंग जिसा गुण भूपा॥

ये पृथ्वी काय सुजानो, वनसपतीका नाहिं बखानो।
जम्बू वृक्ष जिसा आकारा, तातैं जम्बू नाम उचारा॥

जोजन दश ऊंचा है भाई, मधि चौडा षट योजन थाई।
ऊपर चार जोजना चौडा, मुंह ते कीलौं कहि वच थोडा॥

मुख जम्बू तरुकी इक शाखा, तापे जिन मंदिर धुनि भाखा।
और तीन शाखा पे भाई, यक्ष देव मन्दिर सुखदाई॥

तरु परिवार ऊपरैं भाई, सुर परिवार तने सुखदाई।
आदिरादि व्यन्तर के सारे, हैं परिवार देव सब प्यारे॥

इत्यादिक महिमा तरु केरी, कहतें बुद्धि कहो कहां मेरी।
तापे जिनका मन्दिर होई, पूजे पाप रहे ना कोई॥

देव खगा तहां पूजा लावे, पूरव कृत सब पाप नशावे।
हम यहां घर में भावन ठानै, तातै ही अपने अघ भानै॥

(दोहा)

जम्बू वृक्ष अति सोहनो, नाना रतन स्वरूप।
ता ऊपरि जिन भवन को, जजों होय शिव भूप॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - ५

शाल्मली वृक्षे जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

जम्बूद्वीप सुमेरु सुदर्शन जानिये,
शालमली तरु पर जिनालय मानिये।
ता ऊपर जिनबिंब देव गन मोय है,
जजों थापि इस थान पाप बुध खोय है॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मलीवृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द अडिल्ल)

गंगा निरमल नीर लाय शुभ भावजी,
कनकपात्र में घाल हिये कर चावजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईये,
ते पूजों थुति ठान जरामृत दाहिये॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम्॥१॥

चंदन घसि शुभ नीर सुगन्ध अपारजी,
कनकपात्र ले धार भक्तिजुत सारजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईये,
ते पूजों थुति ठान जनम दाह मिटाइये॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम्॥२॥

अक्षत उज्ज्वल गंध खंड बिन जोयके,
ले अपने कर निरमल नीर सुधोय के।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईये,
तिन पद अक्षत पूजि अखै पद पाइये॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम्॥३॥

फूल गंध बहु भांति वरन सुखदायजी,
ले अपने कर माल भक्ति बहुलायजी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईये,
ते पूजों थुति लाय काम अति दाहिये॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम्॥४॥

षट्रस जुत नैवेद्य तुरत कर लाइयो,
सुभग पात्र धरि श्री जिनके गुण गाइयो।

शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईयो,
ते पूजों मन लाय भूख क्षय जाइयो।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम्।।५।।

दीपक मणिमय तमहर ज्योति प्रकाशता,
कनक थाल में लाय मुखै थुति भाषता।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईये,
ते पूजों मन लाय मिथ्यातम जाईये।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम्।।६।।

दशधा धूप मिलाय गंध आछी करी,
अगनि विषै हरषाय सकल ही ले धरी।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईयो,
धूप लाय ते जजों कर्म क्षय पाइयो।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम्।।७।।

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी लाइये,
इन आदिक बहु फल सुभग गुण गाइये।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाईये,
पूजेतें शुभ भाव मोक्ष फल पाइये।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम्।।८।।

जल चन्दनाक्षत पुष्प फेर चरु लायके,
दीप धूप फल अर्घ लेय गुणगाय के।
शालमली तरु ऊपर जिन थल गाइये,
पूजे ते शुभ भाव सिद्ध पद पाइये।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्।।९।।

(छन्द पद्धरि)

ये शालमली तरु पे सुजान, जिन थानक मणिमय बिम्बमान।
तिनके पद पूजों भक्ति लाय, ता फलतें शिव सुर थान पाय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यम्॥१०॥

जयमाला

(दोहा)

शालमली तरु ऊपरै, जिन थानक शुभ जान।
जजै देव भव सफल करि, मैं पूजों धनि मान॥१॥

(छन्द वेसरी)

भोग भूमि नामा थल माहीं, शालमली वृक्ष महा सुख ठाही।
दश जोजन तो तुङ्ग बतायो, मधि तें दश जोजन को गायो॥२॥

ऊपर जोजन चव का व्यासा, शोभा अधिक सुरत में भासा।
चव शाखा ताके लखि भाई, वज्रमई सुन्दर बतलाई॥३॥

ताकी इक शाखा पे जिन गेहा, तहं पूजे सुर नर कर नेहा।
शाखा और तिनों पे भाई, देव रहै शोभा अधिकाई॥४॥

व्यंतर देव तनों यहां वासो, पूजों जिन करि करि सुख आशो।
या भी विरछ तनों व्याख्यानो, जम्बू वृक्ष तनों सब जानों॥५॥

पहला कोट वेदिका सारी, तरु परिवार गिणत सम धारी।
तिन पे भी सुन हरि का वासा, पूजों जिन सुख करि अघ नाशा॥६॥

या तरु रचना कबलों कहिये, बुध थोड़ी शोभा बहु लहिये।
शाखा लघु रतना मय जानो, मूंगा सम तहां फूल बखानो॥७॥

ताके फल दीरघ अति काये, मृदंग से जिनवाणी गाये।
रचना देखि देव मन मोहै, जिन पूजे अद्भुत फल हो है॥८॥

तहां सदा जिन पूजन भाई, देव खगां ही पहुंचे जाई।
और जीव का मोसर नाहीं, धन्य तिन्हें जो पूजें यहां ही॥९॥
जिनपद पूजै अघ क्षय जावै, जीव भक्ति तें बहु सुख पावै।
ते धनि जे ऐसे जिन पूजै, तिनके पूरब अघ सब धूजै॥१०॥
हम तो यहां ते मन वच काई, पूज रचें भव धन गिन भाई।
इत्यादिक इस तरु की बातें, देख सुने पाप सब जाते॥११॥
याका सब व्याख्यान अनूपा, जम्बू तरु का सफल सरूपा।
ताको फल आगे कर आये, तैसा ही यह जानो भाये॥१२॥

(दोहा)

शाल्मली शोभा सहित, वृक्ष कह्यो सुख दाय।
जजों तास पे जिन भवन, ता फल बहु सुख पाय॥१३॥

ॐ ह्रीं शाल्मली वृक्ष सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जयमालार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - ६

विदेह क्षेत्रे जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

क्षेत्र विदेह सुथान जान जिनदेवके,
बिंब तहां मणि मई भले जिन सेवके।
तिनको पूजे भव्य पुण्य बहुतो लहै,
हम यहां भावन भाय थापि जजि अघ लहै।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अत्रावतरावतर आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद गीतिका)

कनकझारी विषै निरमल, नीर भरकर लाइयो।
गंधयुत जल क्षीरोदधि, को मुखै जिन गुण गाइयो।।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान शुभ राजै सही।
ते जजों मन वच काय शुभ ते, जनम जरा मिटि है कही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो जलम्।।१।।

घसि बावनो चंदन सुजलतें, सुभग सुरभित जो कह्यो।
करि काय मन वच शुद्ध अपने, भगति कर जुगकर लह्यो।।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान शुभ राजै सही।
ते जजों अपने सुफल काजे, भव नशे ता फल कही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो चन्दनम्।।२।।

अक्षत अखंडित धवल सुन्दर, नयन को सुखदायजी।
गंधजुत कर शुद्ध लेकर, मैं हरष बहु पायजी।।

खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतैं, अक्षय फल कारज कही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं।।३।।

पुष्प शुभ बहुरंग जुत ले, आपने कर लाइयो।
वसि नासिका अलि शोर करते, मानु जिन गुण गाइयो।।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान शुभ राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतै, मदन बल नाशै कही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो पुष्पम्।।४।।

नैवेद षट्रस पूर वांछित, बहुत विधि के लीजिये।
धरि कनक थाली भगति जुत हो, नरम चित्त को कीजिये।।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतै, भूख भय नाशै कही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं।।५।।

दीपक रतन से कनक पातर, धार बहु ले आइयो।
तन मोह नाशै ज्ञान शुभ हो, भाग मिथ्यातम गयो।।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतै, अज्ञान नाशन की मही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो दीपम्।।६।।

धूप दश विधि गंध जुत ले, आदि अगर मिलाइयो।
ले आपने कर मांहि सुन्दर, हरष के गुण गाइयो।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतै, कर्म दुख मेटन कही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो धूपम्।।७।।

फल जाति श्रीफल लोंग खारक, और लेय बिदाम जी।
पिस्तादि बहु मिलाय के मैं, और फल शुभ कामजी।

खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतै, मोक्ष फल पावन कही॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो फलं॥८॥

उदक चंदन और तन्दुल, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निरमल फल विविध, कर एकठे पातक हरूं।
खेतर विदेह विषै जिनेश्वर, थान जिन राजे सही।
ते जजों मन वच काय शुभतै, फलै पंचम गति मही॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यम्॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(छन्द अडिल्ल)

क्षेत्र विदेह मँझार थान जिनके सही,
तिनमें बिंब अनूप महा सुख की मही।
तिन पद द्रव्य मिलाय अर्घ वसु लाइयो,
मन वच तन कर पूजि भले गुण गाइयो॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयेभ्यो महार्घ्यम्॥१०॥

(गीता)

जंबूद्वीप सु मेरु पूरव पश्चिम विदेह में,
तहां देव जिनके गेह सुंदर जजों थुतिकर नेहमें।
तिस क्षेत्र मांहि जनम मृत्यु छेद जे शिव थल लहा,
तिन पांय को मैं जजो मन वच काय कर सुख हो महा।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र से मुक्तिप्राप्त सर्व जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द वेसरी)

क्षेत्र विदेह विषै जिन गेहा, तिनमें बिंब जिनेश्वर जेहा।
तिनकी पूजा सुर खग ठानै, हम यहां उर में भावन आनै॥१॥

तुंग घने चैत्यालय होई, महिमा सबको भाषे जोई।
पुण्य उपावन के शुभ थाना, पूजा फल तें हो अघ हाना॥२॥

धन्य तिन्हें जो उस थल जावै, पूज्य जिनेश मनुष्य फल पावै।
किये पाप अगले सब खोवै, अनुक्रम तें शिवको मुख जोवै॥३॥

क्षेत्र सकल ही उज्ज्वल जानो, नर धरमी सेवक जिन मानो।
जागि जानि चरचा जिन वानी, होय पाप परणति की हानि॥४॥

विनय ठान जिन पूजै भाई, या भव परभव में सुख दाई।
अष्ट द्रव्य उज्ज्वल कर लावै, तातैं भाव प्रफुल्लित थावै॥५॥

सदा काल मुनि की मुख वानी, सुनिये शुभ क्षेत्र में मानी।
जिन थल जाय जती नित सेवे, अघ हरके सुख संचय लेवे॥६॥

नित प्रति जिन उच्छव तहां लहिये, कवि मुख महिमा कबलों कहिये।
मुख धुनि जे जिनके गुण गाने, भले कान जे सुन तसु भावे॥७॥

नैननि सों गुरु जन अवलोवै, मन सुध निर विकलप जिन होवै।
अंगनि से जिनके पद नइये, इत्यादिक शुभ तहां सब लहिये॥८॥

(दोहा)

महिमा क्षेत्र विदेह की, कहै कहां लों कोय।
जिन शाश्वत वरतै तहां, मैं पूजों मद खोय॥९॥

ॐ ह्रीं विदेह सम्बन्धि जिनालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम्॥९॥

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - ७

जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रे शाश्वत नामवर्ती चतुर्जिन पूजा

(दोहा)

सुमेरु पश्चिम पूर्व के, थान विदेह सु जान।
तहँ वर्ते है जिन चतुक, ते पूजों इस थान॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुमेरु विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती चतुर्जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द गीतिका)

नीर निरमल गंग सरिता, धार को लायो सही।
धरि कनक झारी आप करले, उर विषे हुलसत मही॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजो शुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व श्री सीमंधर जिन, श्री युगमंधर जिन, श्री बाहु जिन, श्री सुबाहु जिन पूजनार्थे जलं।

गंध बावन सुभग चंदन, सलिल संग मिलायजी।
उर भक्ति जुत धर सुभग पातर, लेय अपने कर मही॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो चंदनं०।

अक्षत अखंडित महा उज्ज्वल, नोक जुत अति सोहने।
धरि सुभग पातर आप कर ले, लगे पाप जु धोवने॥

मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों शुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो अक्षतं०।

कल्प तरु ले फूल सुंदर, गंध जुत मन मोहने।
तिन थाल भर ले आप कर में, चल्यो काम निशावने॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो पुष्पं०।

नैवेद्य षट रस पूर वांछित, भूख वेदन के हरा।
सुभग थाल मिलाय करले, यजन को मन वच करा॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो नैवेद्यं०।

दीप मणिमय नाश तमके, ज्योति से परकाशिया।
धरि कनक थाली लेय कर में, पाप सब के टालिया॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो दीपं०।

धूप दश विधि गंध जुत ले, वस्तु मेल बनावही।
फिर अगनि खेवन पूजनेको, काय मन वच लावही॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो धूपं०।

श्रीफल बिदाम जु लोंग खारक, आदि शुभ फल लाइए।
तिन ते जजों जिन देव के पद, मोक्ष फल मन भाइए॥

मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो फलं०।

जल चंदनाक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप फला सही।
ले आठ ही शुभ द्रव्य सुंदर, अरघ कर निज कर ठही॥
मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप सु, क्षेत्र सुभग विदेहजी।
तहँ चार शाश्वत बरतते जिन, जजों सुभ धर नेहजी॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो अर्घं०।

(छंद अडिल्ल)

जम्बूद्वीप सुदर्शन मेरु सु जानिये,
क्षेत्र विदेह विषै चव जिनवर मानिये।
तिनके पद ही जजों द्रव्य वसु लायके,
मन वच काया तीन लाय थुति गायके॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत नामवर्ती सर्व चतुर्जिनेभ्यो अर्घं०।

प्रत्येक अर्घ

(छन्द अडिल्ल)

सीमंधर जिन जम्बू विदेह में है सही,
रहे शाश्वते नाम भविक तारक मही;
ते हों पूजों मन वच द्रव्य चढाय के,
करो मोहि शिव देव दीन सम भाय के॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र स्थित शाश्वत नाममयी सर्व श्री सीमंधर जिनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

द्वीप जम्बू सुदर्शन मेरु तहां सही,
क्षेत्र विदेह युगमंधर जिन की है मही।

ते हों पूजों मन वच काय लगाय के,
करो मोहि शिव देव दीन सम भाय के॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रे शाश्वत नाममयी सर्व श्री युगमंधर जिनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

मेरु सुदर्शन विदेह क्षेत्र जिन जानिये,
बाहु जिन शुभ नाम शाश्वता मानिये।
ते हों पूजों मन वच काय लगाय के,
करो मोहि शिव देव दीन सम भाय के॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रे शाश्वत नाममयी सर्व श्री बाहु जिनाय अर्घ्यम्० ॥३॥

मेरु सुदर्शन विदेह क्षेत्र जिन अवतरा;
सुबाहु तिन नाम शाश्वते है खरा।
ते हों पूजों मन वच काय लगाय के,
करो मोहि शिव देव दीन सम भाय के॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रस्थ शाश्वत नाममयी सर्व श्री सुबाहु जिनाय अर्घ्यम्० ॥४॥

जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र बखानिये,
ताको वर्णन भिन्न-भिन्न ही मानिये।
तिन पद सुर हरि पूज पुण्य बहुतो लहै,
मैं भी तिन पद जजों फलै सब अघ दहै॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्रस्थ शाश्वत नाममयी सर्व जिनेभ्यो अर्घ्यम्०॥५॥

जयमाला

(दोहा)

जम्बूद्वीप में शाश्वते तिष्ठै चव जिन सोय।
नाम माल तिनकी जपै, मिटे पाप सुख होय॥

(छन्द वेसरी)

जिन सीमंधर देव मनावा, तिन पद जजे मिटे भव दावा।
तातैं मैं पूजों चित्त लाई, भव भव मोको भक्ति सहाई॥

युगमंधर प्रभु सब हितकारी, मेट हमारी अघ बुधि सारी।
तुम शरणै आये सुख होई, भवकी बाधा रहै न कोई॥

बाहु जिनको ऋषि मुनि ध्यावै, ता फल अपने कर्म नशावै।
ते जिन मोको होय सहाई, मो मनमें अब ऐसी आई॥

सुबाहु जिन अनंत सुज्ञानी, किये कर्म सब अपने हानी।
औरन को शिव दे अघ तौरे, ते जिन करुणा कर मो औरे॥

ये ही चारों जिन अघ हारी, छेदो मो फेरो संसारी।
भो जिन! और न वांछा कोई, भव भव शरण तिहारी होई॥

तुम शरणै बिन जग भरमायो, अब शुभ पुण्य उदय मो आयो।
तार देव जिन विनती मेरी, मैं अब शरण देव जिन केरी॥

ऐसे मैं अति मन वच काई, पूजों पल पल शीश नमाई।
तिन पद सुर खग पूज करावै, जय जय जय जिन धुनि मुख गावै॥

इत्यादिक शोभा किम कहिये, बुध थोरी गुण पार न पइए।
देव विरद तारक है तेरो, मेट मेट जिन भो भव फेरों॥

(दोहा)

चार शाश्वते जिन सदा जम्बूद्वीप की माँय।
विदेहक्षेत्रमें मैं जजों, आठों द्रव्य चढाय॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्रस्थ शाश्वत नाममयी सर्व चतुर्जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।

गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

पूजा नं. - ८

विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध सिद्धकूट जिनमंदिर जिनेन्द्र पूजा

(कुसुमलता छन्द)

प्रथममेरुके पूरवपश्चिम छेत्रविदेह विराजै सार।
तहँ बत्तीस विदेह तिन मांही, बत्तिस विजयारधगिरि सार।

ॐ ह्रीं पूर्व-पश्चिम विदेहक्षेत्र मध्य बत्तीस विजयार्द्धगिरि स्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पूर्व-पश्चिम विदेहक्षेत्र मध्य बत्तीस विजयार्द्धगिरि स्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पूर्व-पश्चिम विदेहक्षेत्र मध्य बत्तीस विजयार्द्धगिरि स्थित सिद्धकूट जिन मन्दिरेभ्यो अत्र मम सन्निद्यौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। पुष्पांजलि क्षिपेत।।

(कुसुमलता छन्द)

सुरसरिता सम उज्ज्वल जल लै रतन कटोरीमें धर सार।
पूजा कर जिनराज चरनकी जन्म जरा दुख मेटनहार।
प्रथम मेरु बत्तीस रजतगिरि स्वेत वरन मनहरन महान।
तिनपर बत्तीस श्रीजिनमन्दिर सुरनरपूजत मन धर ध्यान।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरि स्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।जलं।।

केसर अरु करपूर मिलाकर मलयागिरि चन्दन घसि सार।
पूजत श्री जिनराज चरनको भव आताप तुरत निरवार।
प्रथम मेरु बत्तीस रजतगिरि स्वेत वरन मनहरन महान।
तिनपर बत्तीस श्रीजिनमन्दिर सुरनरपूजत मन धर ध्यान।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।चन्दनं।।

चन्दकिरनबिंब मुक्ताफलसम उज्ज्वल अक्षत सुद्ध बनाय।
अक्षयपददायक जिनवरके चरनन आगैं पुंज चढाय।।प्रथम०।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।अक्षतं।।

कामदाह दाहै जीवनको हरिहरादि नहि बचे पुमान।
तिह अरि जीतन काज कुसुम ले श्री जिनचरन चढावो आन।।प्रथम०।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।पुष्पं।।

नानाविधि पकवान मनोहर सुद्ध सरस लीजे सुखकार।
क्षुधादोष दुःख दूर करनको जिन चरणांबुज पूजो सार।।प्रथम०।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।नैवेद्यं०।।

जगमगजोति होति दीपककी तमहर वरन नयन मनहार।
मोहमहातमके नासनको जिनवर भावो सुखदातार।।प्रथम०।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।दीपं।।

अतिसुगंधमय शुद्ध द्रव्य लै धूप बनावो सुखदातार।
अष्टकर्मनिवारन कारन, श्रीअरहंत चरनतर धार।।प्रथम०।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।धूपं।।

फल निरदोष सरस सुखदाई, रसनारंजन सुधासमान।
शिवफलप्रापतिकाज जिनेश्वर, चरनकमलको पूजो आन।
प्रथम मेरु बत्तीस रजतगिरि स्वेत वरन मनहरन महान।
तिनपर बत्तीस श्रीजिनमन्दिर सुरनरपूजत मन धर ध्यान।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।फलं।।

जल चंदन अक्षत प्रसून ले, नेवज दीप धूप फलसार।
अर्घ बनाय गाय गुन प्रभुके, पूजो जिनवर सुखदातार।।प्रथम०।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूर्व पश्चिम विदेहक्षेत्रस्थ बत्तीस विजयार्द्ध गिरिस्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो नमः ।।अर्घ्यम्।।

पूर्व विदेह विजयार्द्ध प्रत्येक अर्घ

(सोरठा)

कच्छा देश सु जान, मेरुके पूरव दिश गिनो।
तहां रूपाचल आन, श्री जिन भवन सुपूजिये।।१।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी कच्छा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

देश सुकच्छा नाम, मेरु सु पूरव दश कही।
है सुन्दर जिन धाम, रूपाचल पर नित जजों।।२।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी सुकच्छा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

मेरु सु पूरव आन, देश महाकच्छा बनो।
तहां जिनमंदिर जान, विजयारध गिर पर जजों।।३।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी महाकच्छा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

कच्छावती देश, मेरु सु पूरव दिश विषै।
गिर विजयारध वेश, जिनमन्दिर तिनपर जजों॥४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी कच्छावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

(दोहा)

मेरु सु पूरव दिश विषै; रूपाचल अभिराम।
देश नाम आवर्त है; पूजों जिनवर धाम॥५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी आवर्ता देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

देश लांगलावती गिन, मेरु सु पूरव बौर।
विजयारध पर जिनभवन, पूजों मन धर जोर॥६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी लांगलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

मेरु सुदर्शन पूर्वदिश, देश पुष्कला नाम।
विजयारधके शिखर पर, पूजों श्री जिन धाम॥७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी पुष्कला देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

(सोरठा)

पुष्कलावती देश, मेरु पूर्व दिश जानिये।
जिन मंदिर सु विशेष, विजयारध गिरपर जजों॥८॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी पुष्कलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

मेरू पूर्व दिश सार, वत्सा देश सुहावनो।
तहाँ जिनभवन निहार, रूपाचल पर पूजिये॥६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी वत्सा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

देश सुवत्सा महान, गिनो मेरु पूरव दिशा।
जिन मंदिर धर ध्यान, गिर बैताड़ शिखर जजों॥१०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी सुवत्सा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

महावत्सा नाम, देश पूर्व दिश मेरतें।
रूपाचल जिन धाम, आठ दरव पूजों सदा॥११॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी महावत्सा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

मेरु सुदर्शन जान, ताकी पूरव दिश कहो।
वत्सकावती आन, रूपाचल जिनगृह जजों॥१२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी वत्सकावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

रम्या देश शुभ सार, मेरुकी पूरव दिश विषै।
रूपाचल निरधार, जिन जिनमंदिरको जजों॥१३॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी रम्या देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१३॥

देश सुरम्यका सार, मेरुकी पूरव दिश कहो।
जहाँ वैताड़ निहार, श्रीजिन मंदिरको जजों॥१४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी सुरम्यका देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥

रमणीय देश सुजान, पूरवदिश गिन मेरुतै।
तहाँ रूपाचल मान, जिनमन्दिर जिन पूजिये॥१५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी रमणीय देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१५॥

मेरु सु पूरव जान, मंगलावती देश है।
विजयाध परमान, श्रीजिन भवन सु पूजिये॥१६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पूरव विदेह सम्बन्धी मंगलावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१६॥

पश्चिम विदेह विजयार्द्ध प्रत्येक अर्घ

(सोरठा)

पद्मा देश महान, तहाँ विजयारध गिर कहो।
ता ऊपर जिन थान, मैं पूजूं मन लायकें॥१७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी पद्मा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१७॥

नाम सुपद्मा देश, तहाँ विजयारध गीरीलसै।
तापर जिनगृह वेश, मैं पूजू हरषायकै॥१८॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी सुपद्मा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१८॥

महापद्मा शुभ देश तहाँ विजयारध सोहनो।
तहाँ जिन भवन विशेष, भविजन पूजों भावसों॥१९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी महापद्मा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१९॥

पद्मकावती जान, देश महा सुन्दर बसै।
रूपागिर जनथान, वसुविध पूजों भावसों॥२०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी पद्मकावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२०॥

शंखादेश सुसार, जहाँ बैताड़ सुहावनो।
तहाँ जिन भवन निहार, पूजों तन मन लायकै॥२१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी शंखा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२१॥

नलिनी देश सुखकार, तहाँ विजयाधर गिर बनो।
तापर मंदिर सार, श्री जिनवर पद पूजिये॥२२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी नलिनी देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२२॥

कुमुदा देश सुजान, है बैताड़ सुहावनो।
तापर भवन प्रमान, श्री जिनवर पद पूजिये॥२३॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी कुमुदा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२३॥

सरिता देश विशाल, तहाँ बैताड़ सु जानिये।
ता ऊपर सुविशाल, श्री जिन मंदिर पूजिये॥२४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी सरिता देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२४॥

वप्रा देश अनूप सो है विजयारध तहाँ।
श्रीजिनवर पर भूप, पूजत मन वच कायसे॥२५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी वप्रा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२५॥

नाम सुवप्रा देश, तहाँ विजयारध गिर महा।
पूजत हैं धरनेश, श्री जिनवर पद हरषसों॥२६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी सुवप्रा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२६॥

महावप्रा है नाम, देश सरस शोभा धरै।
जहाँ बैताड़ सु ठाम, तहाँ जिन भवन सु पूजिये॥२७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी महावप्रा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२७॥

वप्रकावती सार देश जहाँ बैताड़ है।
तहाँ जिन भवन निहार, मैं पूजूं मन लायके॥२८॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी वप्रकावती देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२८॥

गंधादेश है नाम, देश सरस मन-मोहनो।
गिरि विजयारध ठाय, तापर जिनमंदिर जजों॥२९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी गंधा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२९॥

नाम सुगन्धा तास, गिरि बैताड़ तहाँ कहो।
तहाँ जिनभवन प्रकाश मैं पूजूं मन लायके॥३०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी सुगन्धा देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३०॥

देस गन्धिला नाम, तहाँ बैताड़ सुहावनों।
ता ऊपर जिन धाम, मैं पूजूं हरषायकैं॥३१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी गन्धिला देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३१॥

गन्धमालिनी नाम, तहाँ विजयारध जानिये।
तापर है जिनधाम, पूजत सुरनर हरषसों॥३२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके पश्चिम विदेह सम्बन्धी गन्धमालिनी देश संस्थित रूपाचल पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३२॥

जयमाला

(दोहा)

प्रथममेरु विदेहक्षेत्र, विजयारध बत्तीस,
तिनकी जयमाला कहुँ, दायक शिवपद ईस॥१॥

(पद्धड़ी छन्द)

जै प्रथम मेरुके पूर्व जान, अर पश्चिम देह विदेहमान।
तामैं जनपद बत्तीस सार, इनमें इक रूपागिरि निहार॥२॥

सब श्वेतवरन रूपासमान, तिनपर जिनमंदिर शोभमान।
तहाँ रतनमई जिनबिंब सार, राजत अकृत्रिम निराधार॥३॥

सब समवसरन रचना महान, बनि रही अनोपम नित्यजान।
तहाँ सुरविद्याधर ईश आय, जिनराज चरनको शीशनाय॥४॥

दिव लोकतनी वसु द्रव्य लाय, श्रीजिनपद पूजै मुदितकाय।
अति हर्ष सहित जिनगुण सुगाय, बहु पुण्य उपावै देवराय।

जै जै जिनराज दयानिधान, उपदेशक हितकर धर्म जान।
दश लक्षण रतनत्रय सरूप, भवसागर तारक पोतरूप॥५॥
तिह धर्मसार जग जन अनंत, शिवथान बसैं करि कर्म अंत।
केई स्वर्गलोकके सुख अनूप, केई बलहरि चक्री पदस्वरूप॥६॥
केई तीर्थंकर पद लहैं सार, त्रैलोक्य मांहि शोभा अपार।
इत्यादि सर्व सुखदाय जान, जगमाहि सदा वरतो महान॥७॥
वह धर्म रहो मम उरमँझार, जबलों न लहों शिवपुर लहार।
यह अरज 'जिनेश्वर' हृदय सार, प्रभु वेग करो संसार पार॥८॥

(दोहा)

विजयारध बत्तीसकी, पूजा सरस विचार।
कही 'जिनेश्वर' भावसौं, दिव शिव सुखदातार॥९॥

ॐ ह्रीं पूर्व-पश्चिम बतीस विजयार्द्धगिरि सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - ६

विदेहक्षेत्रस्थ षोड़श वक्षारें सिद्धकूट जिनमंदिर जिनेन्द्र पूजा

(कुसुमलता छन्द)

प्रथम मेरुकी पूरवदिसमैं अरु पच्छिम सुविदेहमँझार।
है षोडस वक्षार मनोहर कंचन वरन आयताकार॥
तिनके ऊपर सिद्धकूट हैं तिनपर जिनमंदिर सुखकार।
तिनकी आह्वाननविधि करिकैं पूजा करूं भक्ति उरधार॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पच्छिम विदेह सम्बन्धी षोडश वक्षारे सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो नमः अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पच्छिम विदेह सम्बन्धी षोडश वक्षारे सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पच्छिम विदेह सम्बन्धी षोडश वक्षारे सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो नमः अत्र मम संनिद्यौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं

(चाल जोगीरासा)

पद्म द्रहसम उज्ज्वल जल लै रतन कटोरी धारै।
धार देत श्रीजिनवर आगैं जन्म जरा दुख टारै॥
प्रथम मेरु पूरव अरु पश्चिम गिरिवक्षार विराजै।
षोडश तिनपर जिनग्रह सोहै पूजत भव दुख भाजै॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

स्वच्छ सुगंध मनोहर शीतल दाहनिकंदन जानों।
चंदनसों जिनराज चरनकों पूज करौ बुधिवानों॥प्रथम०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

चंदकिरणसम उज्ज्वल अक्षत सुन्दर धोय धरीजे।
पुँज देत श्रीजिनवर आगे अक्षयपदको लीजे॥
प्रथम मेरु पूरव अरु पश्चिम गिरिवक्षार विराजै।
षोडश तिनपर जिनग्रह सोहै पूजत भव दुख भाजै॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

वरन वरनके पुष्प मनोहर ले जिनमंदिर आवै।
कामदाहनिरवारन कारन श्रीजिनचरन चढ़ावै॥प्रथम०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

ताजे तुरत बने रससाजे खाजे आदिक लावे॥
क्षुधारोग निवारनकारन श्रीजिनचरन चढ़ावै॥प्रथम०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

तमहर जोति मनोहर ताकी दीप रतनमय लावे।
ज्ञान जोतिपरकासक जिनके चरननमाहिं चढ़ावै॥प्रथम०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

कृष्नागरवर धूप दशांगी खेवत जिनवर आगे।
तासु धूपमिस भविजीवनके अशुभकर्म अरि भागे॥प्रथम०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

लोंग सुपारी पिस्ता किसमिस अरु बादाम मँगावे।
शिवफलदायक श्रीजिनवरके चरननमाहिं चढ़ावै॥प्रथम०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जलफलद्रव्य मिलाय गाय गुन अनुपम अर्घ बनावै।
बलि बलि जाय जिनेशचरनमें निजहित हेत चढ़ावै॥
प्रथम मेरु पूरव अरु पश्चिम गिरिवक्षार विराजै।
षोडश तिनपर जिनग्रह सोहै पूजत भव दुख भाजै॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पश्चिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षारगिरि पर सिद्धकूट जिनमंदिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

प्रथम मेरु प्रथम वक्षार, चित्र कूट तसु नाम विचार।
ता ऊपर जिन भवन उजास, मैं पूजों शिव पुर परकाश॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे पूर्व विदेहक्षेत्र चित्र कूट वक्षार सम्बन्धि सिद्ध कूट जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

दूजो पद्म कूट वक्षार, तिनपे जिनको मंदिर सार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे पद्मकूट नाम वक्षार सम्बन्धि सिद्ध कूट जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

तीजो नलिन नाम वक्षार, तापर जिन मन्दिर अधिकार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे नलिन नाम वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिनमन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

चौथो एक शैल वक्षार, तापर जिन मन्दिर हितकार।
बिंब तहाँ जिन के अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे एक शैल वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिनमन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

नाम त्रिकूट पंचमों शैल, तापे जिन मन्दिर बिन मैल।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे त्रिकूट नाम वक्षार स्थित सिद्ध कूट जिनमन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

षष्ठम वैश्रवण वक्षार, ताके ऊपर जिन गृह सार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे वैश्रवण नाम वक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

अंजनगिरि सप्तम वक्षार, जिनके भवन तास पे सार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे अंजन नाम वक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

आत्मांजन अष्टम वक्षार, जिन मन्दिर तापे अघ टार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पूर्व विदेहक्षेत्रे आत्मांजन नाम वक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

श्रद्धावान जान वक्षार, ता ऊपर जिन भवन सु सार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेहक्षेत्रे श्रद्धावान वक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

विजयवान वक्षार सुजान, ऊपर ताके जिनथल मान।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेह क्षेत्रे विजयवान वक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

आशीर्विष वक्षार सुजान, ऊपर ताके जिन थल मान।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेहक्षेत्रे आशीर्विष वक्षारस्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

नाम सुखावह शुभ वक्षार, ता ऊपर जिन मन्दिर सार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेह क्षेत्रे सुखावह नाम वक्षारस्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

चन्द्रगिरि परवत वक्षार, ऊपर जिन मन्दिर सुखकार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेह क्षेत्रे चन्द्रगिरिवक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

सूर्यगिरि वक्षार सुजोय, ता ऊपर जिन थानक होय।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेहक्षेत्रे सूर्यमाल नाम वक्षारस्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

नागगिरि वक्षार अनूप, ऊपर जिन थल सुन्दर रूप।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेहक्षेत्रे नागमाल वक्षारस्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

देवमाल पर्वत वक्षार, ता ऊपर जिन मन्दिर सार।
बिंब तहाँ जिनके अवलोय, तिन पद पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरुः पश्चिम विदेहक्षेत्रे देवमालवक्षारस्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

(अडिल्ल)

षोडश है वक्षार मेरु परथम तने,
तिन ऊपर जिन थान पुण्य थानक बने।
बिंब तहाँ मणि मई अकृत्रिम है सही,
तिनके पद मैं पूजों चाहन शिव मही॥

ॐ ह्री प्रथम मेरु विदेहक्षेत्रे वक्षार स्थित जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

(दोहा)

प्रथममेरु वक्षारगिरि, जिनमंदिर सुविशाल।
तिनकी पूजनकी अबै, यह वरनों जयमाल॥१॥

(पद्धरी छन्द)

जय प्रथममेरुकी दिसा बखान, पूरब अरु पश्चिम माँहि जान।
वसुवसुवक्षार कहे अनूप, सब हेमवरन तांये स्वरूप॥१॥
गिर नील निषदसे लंबमान, सीतासीतोदातक सुजान।
तिनपर बहु कूट कहे जिनेस, इक सिद्ध कूट है तहाँ वेस॥२॥
तापर जिनमन्दिर सोभमान, सोलह गिरपर सोलह समान।
इन पर जिनमन्दिर मांहिजान, सतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान॥३॥
वसु प्रातिहार्य मंगल सुदर्व, जहां रचना अनुपम बनी सर्व।
सुर विद्याधर नर ईश आय, बहुभक्ति सहित पूजन रचाय॥४॥
गुनगान करै, बाजे बजाय, सुरनारि नचै अति मुदितकाय।
सब साजबाज देवोपुनीत, ताकी महिमा है बच अतीत॥५॥
जै जै जिनराज महान देव, जै जै जगतारक हो स्वमेव।
जै जै जग आनन्दकन्द चन्द, सुखसागर बर्धकरो जिनन्द॥६॥

जै जै जगमैं जो धरै ध्यान, सो भव्य लहे निर्वान थान।
यह बिरद जगतमें सुनी देव, यातैं लीनी तुम सरन एव।।७।।

तुम सरणागत पालक महान, अरु अधम उधारक हो पुमान।
हे कृपासिंधु सुनिये दयाल, संसार खारतैं तारि हाल।।८।।

(दोहा)

षोडश गिरवक्षार की, यह वरनी जयमाल।
जो नर वांचै भावसों, पावै सुख दर हाल।।९।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुकी पूरव-पच्छिम विदेह सम्बन्धि षोडश वक्षार गिर पर षोडश सिद्धकूट जिन मन्दिर जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

पूजा नं. - १०

भरतक्षेत्रे जिनालय जिनेन्द्र पूजा

(छन्द गीतिका)

भरत खेतर दीप जंबू, मांहि शुभ थल राजिये।
तिस मांहि जिनके थान सुन्दर, विनय सहित बिराजिये।
तिन बीच प्रतिमा शुद्ध मूरति, सुरत में जैसी कही।
पूजा तिनकी करन को शुभ भावतैं विनती ठही।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि जिनालय-जिनबिंबसमूह अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालय-जिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसंबंधि-जिनालय-जिनबिंबसमूह अत्र मम सन्निद्यो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल जोगीरासा)

क्षीरोदधि को निरमल पानी, कनक पियाले आनो।
ले अपने कर हरष धार करि, सफल आज दिन मानो।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों तिन फल जनम जरा दुख, दोष न उपजै कोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जलं० ।।

चंदन घसि शुचि निरमल जल से, मलय सुगंधित धारी।
ले शुभकारी जिन मंदिर को, मन वच काय सँवारी।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों तिन फल भव-तप नाशै, अवर न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो चंदनं० ।।

अक्षत उज्ज्वल जायकली से, श्वेत वरण अधिकाई।
धार हरष उर ले अपने कर, अनुमोदन जुत भाई।

भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों तिन फल नाश करम को, अक्षय पद को जोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अक्षतं० ।।

फूल महा गंध धार सार ले, वरण भला सुखकारी।
तापै अलि वशि होय बास के, गुंजे तें कर धारी।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों तिन फल नाश काम को, और न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो पुष्पं० ।।

षट् रस मय नैवेद्य खेद विन, तुरत बना कर लायो।
घाल थाल कंचन भरपूरण, उमगे ही चित आयो।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों तिन फल होय क्षुधाक्षय, अवर न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं० ।।

रतन दीप अति ज्योति प्रकाशी, कंचन थाल भराई।
अपने मुखतें मधुर शब्द करि, जिनवर के गुण गाई।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों ता फल नाशन तमको, और न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो दीपं० ।।

दस विध गंध मिलाय धूप कर, अपने करमें धारो।
मन वच काय शुद्ध करि वसु अरि, अगनि विषै ले जारों।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों ता फल होय करम क्षय, और न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो धूपं० ।।

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक शुद्ध मंगाऊं।
पिस्ता चारु मनोहर लेकर, इन आदिक बहु लाऊं।

भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों ता फल शिवफल उपजे, और न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो फलं० ॥

जल चंदन अक्षत पहुप चरु, दीप धूप फल भाई।
मेलि वसु द्रव अरघ करुं शुभ, अति आनंद उर लाई।
भरत क्षेत्र जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहँ होई।
पूजों ता फल होय करम क्षय, और न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रसम्बन्धित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(छंद अडिल्ल)

भरतक्षेत्र नग-खान देश रतना भरयो,
तामें सरिता घनी बहुत झरना झरयो।
धर्म ध्यान में बैठ जीव शिवपुर लहै,
ते थानक हूं जजों देव जिनवर रहैं॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धी जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह पूजनार्थे अर्घं निर्व०

प्रत्येक अर्घ

(छन्द हरिगीतिका)

जिन थान ते वसु कर्म जारी, मोक्ष को प्रापति भये,
सो थान ही बहु पुण्यदायक, सेवते सब सुख लये।
इमि जान मन वच काय शुद्ध कर, पूजि हैं मन लाय जी,
ता फलै अविचल वास पावै, पुण्य को वरनायजी॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त सर्व जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत क्षेतर मांहि परवत, भलो विजयारध कह्यो।
तिस मांहि द्वय है श्रेणि सुन्दर, ताहि तें शोभित ठह्यो॥

तहां थान जिन के महा सुन्दर, बिम्ब जिन से राजिये।
ते जजों दरब मिलाय आठों, फलै शिव सुख पाजिये॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्धस्य द्विश्रेणी सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं० ॥

विजयारध शुभ भरत तनो, ताके शीश कूट सिद्ध गिनो।
तापैं शुभ जिनवर को थान, तें पूजों मन वच तन ठान॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र विजयार्द्ध सम्बन्धि सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो अर्घ्यं० ॥

जयमाला

(दोहा)

भरतक्षेत्र रचना सकल, कहूँ अल्प विस्तार।
इस थल उतपति छेद शिव, गये जजों शिव धार॥१॥

(छन्द वेसरी)

विजयारध भारत सु बखानो, पूरव पश्चिम नौके जानो।
है पचास जोजन चौडाई, जोजन पांच बीस लंबाई॥२॥

चांदी वरण श्रेणि जुगधारी, दश इक शत तहां नगरी सारी।
दक्षिण श्रेणि पचास बताई, उत्तर साठ नगर सुखदाई॥३॥

ते नगरी मणि कनक जडाई, बहु विस्तार तिन्हों का भाई।
कोट तथा दरवाजे जानो, वापी वन सरवर जुत मानो॥४॥

जो साधै विद्या कर आवै, सो ही साधक नाम कहावै।
तातें पक्ष में जो चलि आई, सो कुल विद्या नाम कहाई॥५॥

माता पक्ष विषै चलि आई, ताही विद्या जाति कहाई।
इन त्रय विद्या जुत खग जानो, षट कारज नित और बखानो॥६॥

इर्या दत्ति वार्ता कहिये, संयम तप स्वाध्यायी रहिये।
पूज्य पदारथ पूजै सोई, ईर्या नाम क्रिया तहां होई॥७॥

अ‍सि मषि आदि विणज अन जानो, सोही दूजी वार्ता मानो।
देना दान दत्त क्रिय सोई, पठन आदि स्वाध्याय जु होई॥८॥
अविरति त्याग संजम सो जानो, तप करना सो तपक्रिय मानो।
ये षटकारज तहँ नित पइये, इन जुत गिर बहु शोभा लहिए॥९॥
ऊपर कूट शोभ अति आनो गिर नृप शिर यह मुकुट जु जानो।
सिद्धकूट पै है जिन गेहा, एक कोश लंबा शुभ देहा॥१०॥
ऐसो खग गिरि जान अनूपा, या गति छेद भये शिव भूपा।
तिनके पद मैं अर्घ चढाऊं, मन वच काया कर थुति गाऊं॥११॥

(दोहा)

भरतक्षेत्र ऊपर सही, कहे देव जिन थान।
तिनको अर्घ जजों सही, अष्ट द्रव्य कर आन॥१२॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र सम्बन्धि सर्व जिनालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - ११

भरतक्षेत्रे त्रिकालस्थ चतुर्विंशति जिन पूजा

(दोहा)

जम्बूद्वीपके भरतमें, तीनोंकाल मँझार,
होत चतुर्विंश जिन सदा, कल्प अर्धके मांहि।
वे चौवीस जिन भरत के, हैं जगत के नाथ,
तिनकी थुति मन वच करों मोहि देहु तुम ज्ञान॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्थ त्रिकालस्थ चौवीसी जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्थ त्रिकालस्थ चौवीसी जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रस्थ चौबीसी त्रिकालस्थ जिन अत्र मम भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द वेसरी)

निरमल जल गंगा तैं लाऊं, चौवीसी जिनचरण चढाऊं;
ता फल जनम जरा मृत्यु नाशै, लोक तास मकर सम भाषै।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन मलयागिर घन लाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
भव आताप तास फल जावे, निर आकुलता सुखको पावे।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल खंड बिन लाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल हो अक्षयपद भाई, क्षय होने की रीति मिटाई।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पद्रुमसे फूल सु लाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल काम नाश हो जावे, तब ही ब्रह्मचर्य मन आवे।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस मय चरु ले आऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल भूख सभी नश जावें, तब निरमल निर वांछित थावे।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रतन जिस्यो कर लाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल मिथ्यातम क्षय होई, तब सम्यक् परकाशै सोई।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप भली दशविधि कर लाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल सकल ध्यान उपजावे, तामें कर्म काट क्षय पावे।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि सुभग फल लाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल मोक्षथान फल होई, जामन मरन फेर नहिं होई।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक वसु द्रव्य मिलाऊं, चौवीसी जिन चरण चढाऊं;
ता फल मोक्ष पूज्य पद पावे, भव भरमन को फिर नहिं आवे।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र के त्रिकालस्थ चौबीसी जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(छन्द अडिल्ल)

जम्बू भरत मँझार हो गये जिन सही,
वीस चार जग पूज जजै हो शिव मही।
तातै वसु द्रव्य लाय अर्घ कीना भली,
पूजौं मैं जिनराज अतीते थिति रली॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं०

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु लाइए,
दीप धूप फल अर्घ बनाकर ध्याइए।

वर्तमान जिन चार बीस तिन पद जजों,
ता फल भव दुःख सबै आपने अघ जजों॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव जिनेश्वर होंगे आगे जु कालमें,
बीस चार जगपाल नवों तिन भालमैं।
यही भक्ति के तार शरण मोको रहो,
अर्घ जजों तिन पाय पाप मेरे दहो॥

ॐ ह्री जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि भविष्यत् चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा)

मेरु सुदर्शन दक्षिण भारत आरज खंड बखानी,
भरतक्षेत्रके अतीत-अनागत, वर्तमान जिन जानी।
सब जिनों की जन्मभूमि है नगर अयोध्या बखानी,
ऐसी शाश्वत तीर्थभूमिको पूजूं मैं चित्त लानी॥

ॐ ह्री जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि तीर्थंकरस्य शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा)

शिखर सम्मेत थकी शिवपरनी, अनंत जिनेश्वर जानों।
तीरथ निरमल है सिद्ध थानक, पूजनीक मग मानो॥
तातैं पूजैं बहु सुख उपजै, पाप डरै दुख दाई।
तातैं ऐसे थान जानके, अर्घ जजों सुख पाई॥

ॐ ह्री जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र सम्बन्धि तीर्थंकरस्य शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर तीर्थ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

हे जिन भव भय दूर कर, निजानन्द रस पूर,
निज गुण दाता जगतपति, मम उर बसो हजूर।

(छन्द तोटक)

जयवंत जगतपति राजत हैं, समवश्रतमें छवि छाजत हैं,
शशि सूरज कोटिक लाजत हैं, जिन देखत ही अघ भाजत हैं।
तहां वृक्ष अशोक महान दिपै, तिहिं देखत ही सब शोक छिपै,
चतुषष्ठिसु चामर छत्र त्रयं, [1]हरि आसन शोभित रत्नमयं।

नभतैं सुरपुष्प सुवृष्टि गिरै, मनु मन्मथ श्रीपति पाय परै,
नभमें सुरुदुंदुभि राजत है, मधुरी मधुरी ध्वनि बाजत हैं।
सुर नारि तहां सिर नावत हैं, तुमरे गुण उज्ज्वल गावत हैं,
पद पंकजको चल रूप कियौ, बहु नाचत राजत भक्त हियो।

घननं घननं घनघंट बजैं, सननं सननं सुर नारि सजैं,
झननं झननं धुनि नूपुरकी, छननं छननं छनमें फिरकी।
दृग आनन ओप अनूप महा, छन एक अनेकन रूप गहा,
बहु भाव दिखावत भक्ति भरे, कविपै नहि वर्णन जाय करे।

जिनकी धुनि घोर सुने जबही, भविमोर सुधी हरषैं तबही,
धर्मामृत वर्षत मेघझरी, भवताप तृषा सब दूर करी।
सुर ईश सदा सिर नावत हैं, गुण गावत पार न पावत हैं,
मुनि ईश तुम्हें नित ध्यावत हैं, तबही शिवसुंदरि पावत हैं।

प्रभु दीनदयाल दया करिये, हमरे विधिबंध सबै हरिये,
जगमें मम वास रहै जबलौं, उरमांहि रहौ प्रभुजी तबलौं।

---

१. हरि = इन्द्र

(दोहा)

शिवमग दरशायौ जगत, करो भ्रम तम दूर,
सो प्रभु मम हिरदै करौ, सुखसागर भरपूर।

(अडिल्ल)

चौवीसों जिनराज सदा मंगल करें।
ये ही पुण्य फलदाय सकल संकट हरें।
ये ही त्रिभुवन नाथ जगत के सुख करा,
ये ही अधम उधार घनेका अघहरा।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र सम्बन्धि त्रिकालस्थ चौवीसी जिन पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

(नोंध : जिनके पास समय कम हो वे पूजा नं. १३-१४-१५-१६-१७-१८ के बदले यह पूजा कर सकते हैं।)

पूजा नं. - १२

सुदर्शन मेरु संबंधित दक्षिण उत्तर षट्कुलाचल पर्वत पर सिद्धकूट जिनमंदिर-जिनेन्द्र पूजा

(मंदअवलिप्तकपोल छन्द)

मेरु सुदर्शन दक्षिण उत्तर, षट् कूल गिर सोहें अभिराम।
गिरके सिखर कूटकी पंकती, बिच बिच सिद्धकूट अभिराम।
सुर विद्याधर नितप्रति पूजत, हमें शक्त नाही तिस ठाम।
यातें आह्वानन विध करके, निजगृह पूजत करत प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण उत्तर षट्कुलाचल पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण उत्तर षट्कुलाचल पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण उत्तर षट्कुलाचल पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(कुसुमलता छन्द)

उज्वल जल ले क्षीरोदधिको, श्री जिनचरण चढ़ावत हैं।
जन्म जरा दुखनाशन कारण जिन गुण मंगल गावत हैं॥
मेरु सुदर्शन दक्षिण उत्तर, षट् कुलगिरीपर जिनभवन।
तहांके जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण दिश निषध॥१॥ महा हिमवन॥२॥ हिमवन॥३॥ उत्तरदिश नील॥४॥ रुक्मी॥५॥ शिखरी पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥६॥ जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन दाह निकन्दन, केसर डारी रंग भरी।
भव ताप निवारन निजपद धारन, शिवसुखकारन पुज करी॥ मेरु सु०॥
॥चन्दनं०॥

सुखदास कमोदं अति अनमोदं, उपमा द्योतं चन्द्रसमं।
जिनचरण चढ़ावें मन हरषावें, सुरपद पावै मुक्ति रमं॥ मेरु सु०॥
॥अक्षतं ०॥

कमल केतकी बेल चमेली, ले गुलाब धर जिन आगै।
जिन चरण चढ़ावत मनहर पावत, कामबान तत क्षिण भागै॥ मेरु सु०॥
॥पुष्पं०॥

नेवज ले नीको तुरत सुधीको, श्री जिनवर आगे धरिये।
भर थाल चड़ावो जिनगुण गावो, सीस नवावो, शीव वरिये॥ मेरु सु०॥
॥नैवेद्यम्०॥

मणिमई दीप अमोलक लेकर, जगमग जोत सु होत खरी।
मोह तिमिरके नाश करनको, श्री जिन आगै भेट धरी॥ मेरु सु०॥
॥दीपम्०॥

कृष्नागर धूपं जज जिन भूपं, लख निज रूपं खेवत हैं।
वसु कर्म जलावैं पुन्य बढ़ावैं, दास कहावैं सेवत हैं॥ मेरु सु०॥
॥धूपम्०॥

बादाम छुहारे लौंग सुपारी, श्रीफल भारी कर धरके।
जिनराज चढ़ावे शिवपद पावैं, शिवपुर जावैं अघ हरकै॥ मेरु सु०॥
॥फलम्०॥

वसु द्रव्य मिलावै अर्घ बनावै, जिनवर पगतल धारत हैं।
शिवपदकी आशा मन हुलसाया, चहु गत बाशा टारत हैं॥ मेरु सु०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण दिश निषध॥१॥ महा हिमवन॥२॥ हिमवन॥३॥ उत्तरदिश नील॥४॥ रुक्मी॥५॥ शिखरी पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमंदिरेभ्यो॥६॥ अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घं

(सोरठा—मंदअवलिप्तकपोल छन्द)

मेरु सुदर्शन दक्षिण दिशमैं, तप्त हेम द्युति निषध सुनाम।
तिगंछ द्रह द्रह विच पंकज, कमल बीच घृतदेवी धाम॥
तिंह गिरि शिखरकूट नौ उन्नत, ता बीच सिद्धकूट अभिराम।
तहां जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण निषध पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

मेरु सुदर्शन दक्षिण दिशमैं, स्वेत महा हिमवन गिरनाम।
महापद्म द्रह द्रह बिच नीरज, जलज बीच ह्रीं देवी धाम॥
ता गिर शिखर कूट वसु शोभित, तिंह बिच सिद्धकूट अभिराम।
तहां जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण दिश महा हिमवन पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

मेरु सुदर्शनकी दक्षिण दिश, हेमवरण हिमवन गिरनाम।
पद्मद्रह बीच पद्म है पद्म बीच श्री देवी धाम॥
गिरके शिखर कूट एकादश सिद्धकूट तिह बीच सु ठाम।
तहां जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण दिश हिमवन पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

मेरु सुदर्शनकी उत्तर दिश, नीलवरण गिर नील सु नाम।
द्रह केसरी कमलकर शोभित तहां कीर्तिदेवीको धाम॥
तिहगिर शिखरकूट नौ उन्नत ता बिच सिद्धकूट अभिराम।
तहां जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके उत्तरदिश नीलपर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

मेरु सुदर्शनकी उत्तरदिश रजत रुक्मगिर पर्वत नाम।
द्रह महा पुंडरीक पंकज जुत तापर बुध देवीको धाम॥
ता शिखर कूट वसु शोभित तिह बीच सिद्धकूट अभिराम।
तहां जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके उत्तरदिश रुक्मगिर पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

मेरु सुदर्शनकी उत्तरदिश हेमवरन शिखरन गिर नाम।
पुंडरिक द्रह द्रह बिच पंकज जहां लक्ष्मी देवीको धाम॥
गिरके शखर कूट एकादश सिद्धकूट तिह बीच सु ठाम।
तहां जिन भवन निहार धार, उर अर्घ चढ़ावत शीस नमाम॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके उत्तरदिश शिखरि स्थित पर्वतपर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

जयमाला

(दोहा)

षटकुल गिरपर जिनभवन, शोभित परम विशाल।
तिन प्रति सीस नवायकै, अब वरणूं जयमाल॥

(पद्धडी)

जै मेरु सुदर्शन गिर महान, सब गिरवरमें भूपत समान।
जै ताकी दक्षिण दिश विशाल, तहां कुलगिर तीन कहे विशाल॥
पहलो निषद्ध गिर है उतंग, दूजो महा हिमवन अति सुचंग।
तीजो हिमवनगिर है प्रसिद्ध, बहुरचितखचितद्युति स्वयंसिद्ध॥
अब उत्तरदिशके सुनो नाम, पहिले गिर नील महा सु ठाम।
दूजो गिर रुक्म महा विचित्र, तीजो सिखरिन गिर है पवित्र॥
एही षट् कुलगिर हैं महान, तिनपद द्रह सुन्दर सजल बान।
ता बीच कमल शोभेभिराम, जामें कुल देवनके सुधाम॥

यह विधि कुलगिर शोभे सुसार, बहु शिखरकूट पंकत अपार।
तिन कूट मध्य शोभे सिंगार, श्री सिद्धकूट उन्नत निहार॥
तहां जिनमंदिर बरणे पुरान, तामें जिनबिंब विराजमान।
प्रतिमा शत एक अधिकसु आठ, वसु मंगल द्रव्य बने सु ठाठ॥
सब समोसरण विध कही जोय, देखे भवि सम्यक दरश होय।
जै सुर गण मिल पूजें सदैव, जिन भक्त हिये धारें सु जीव॥
जै निरजर निरजरनी सु आय, खेचर खेचरनी सीस नाय।
नाचैं गावैं दे दे सुताल, झुक झुक जिनमुख देखैं संभाल॥
जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजै मृदंग, इन्द्रानी इन्द्र नचै सु संग।
जै थेइ थेइ थेइ धुन रही पूर, बन रहो सुझुरमुट जिन हजूर॥
यह विधि वर्णन बहु है अपार, सुरगुरु बरनत पावै न पार।
जै जै जै जिनवर परम देव, तुम चरणनकी हम करत सेव॥

(धत्ता--दोहा)

षट् कुल गिरपर जिनभवन, पूजा बनी विशाल।
पढ़त सुनत सुख उपजै, बल बल जात सु लाल॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुके दक्षिण दिश निषध॥१॥ महा हिमवन॥२॥ हिमवन॥३॥ उत्तरदिश नील॥४॥ रुक्मि॥५॥ शिखरी पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनमंदिस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूजनार्थे अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूं, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद॥

पूजा नं. - १३

हिमवान पर्वत जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

जम्बूद्वीप तनो जु कुलाचल जानिये,
है हिमवान सुनाम महा शुभ मानिये।
तिनपै जिनके थान देव पूजा करै,
हम यहाँ भावन थापि जजैं अरु अघ हरैं॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि हिमवान नाम कुलाचले जिनालयस्थ जिनसमूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि हिमवान नाम कुलाचले जिनालयस्थ जिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि हिमवान नाम कुलाचले जिनालयस्थ जिनसमूह अत्र मम भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद पद्धरि)

जल निरमल नीर सुगंध लाय, धरि कनक झारिका सुभग मांहि।
हिमवान शीश जिनबिंब सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं० ॥१॥

घसि बावन चंदन नीर लाय, धरि कनक रकेबी सुभग भाय।
हिमवान शीश जिनबिंब सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं० ॥२॥

अक्षत अखंड उज्ज्वल सुजान, मैं ल्यायो निरमल भाव ठान।
हिमवान शीश जिनबिंब सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥३॥

पुष्प गंध युत सुभग जान, मैं ले आयो बहु हरष ठान।
हिमवान शीश जिनगेह सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥४॥

नैवेद्य सबै रस पूर जान, मैं लायो अब ही हरष ठान।
हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥५॥

मणिमय दीपक अति सुभग ठान, भरि कनक थाल लायो सुजान।
हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपं० ॥६॥

ले दशधा धूप सुगन्ध सानि, खेऊं अगनी में लाय थानि।
हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपं० ॥७॥

फल श्रीफल लोंग बिदाम जेय, शुभ खारक पिस्ता हाथ लेय।
हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥८॥

जल चंदन अक्षत पुष्प जान, चरु दीप धूप फल अर्घ आन।
हिमवान शीश जिन गेह सोय, पूजों मन वच तन हरष होय।

ॐ ह्रीं हिमवान शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं० ॥९॥

(छंद अडिल्ल)

भलो कुलाचल जान प्रथम हिमवानजी,
जम्बूद्वीप मँझार दंड उपमानजी।
तिनपे है जिन थान भले जिन रायके,
मैं पूजों तिन पाय सकल सुखदाय के॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धि हिमवानशीश जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् ॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

प्रथमकूट सिद्धायतन जान, सुन्दर उच्च महा सुख खान।
तिनमें बिंब देवजिनतने, तिनपद अर्घ जजों थुति ठने॥

ॐ ह्रीं हिमवान गिरि शीश सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जंबू भरत उत्तर दिशि जान, हिमवन गिरि उत्तम हि मान।
तहंते कर्म नाशि शिव जाय, तिनके पद पूजों मन लाय॥

ॐ ह्रीं हिमवान कुलाचल से मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चाल मुनियानंद)

मेरु दक्षिण हिमवान गिरि जानिए, सुरग सो थान अति शोभ जुत मानिये।
ताल वापी घने शिखर बहु सोहनो, देव क्रीडा तने मन्दिर मन मोहनो॥

पूजि जिन थान कूं आप भव धनि कहे, इन्द्र भी भक्त अति दीन हो मुख वहे।
ज्ञान बहु नाहिं जो सकल थुति किम चहे, गुण तनो पार चव ज्ञान धर ना लहे॥

देव जिन मांहि गुण को नहीं पारजी, कब लगै और कहें कथन को सारजी।
भाय इम भावना बहुत पुण्य पाय है, उदे तब होय फल मोक्ष थल पाय है॥

यह तरै भव्य जना देव जिनराज के, गाय गुण पुण्य लहें वांछि मन काज के।
सुजस ऐसो सुन्यो कान में देव को, शरण यातें लयो जान सब भेव को॥

और जो देव जिनराज बहु तारिया, बहुत संत जीवके काज बहु सारिया।
जानि मोहि अधम ज्यों तारिये जिनवरा, भक्त है टेक तजि बनै अति थुति करा॥

ॐ ह्रीं हिमवान पर्वत सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

याही हिमवान तनी उत्तर दिशा,
जघन भोग भू जानि थान सुखदा लसा।
आयु पल्य एक काय कोश एक की सही,
तहं कर्म हरि शिव गये जजों तिनकी मही।

ॐ ह्रीं जघन्य भोगभूमि हैमवन क्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

સહજ ચિદાનંદ.

पूजा नं. - १५

महा हिमवान पर्वते जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छंद अडिल्ल)

महा हिमवान जु परवत ऊपर जानिये,
सिद्ध कूट पे जिनथल जिन बिंब मानिये।
सुर खग तो वहाँ जाय बिंब पूजा करे,
हम यहाँ भावन भाय थापि पूजन धरे॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान गिरि संस्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं महाहिमवान गिरि संस्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं महाहिमवान गिरि संस्थित जिन चैत्यालय जिनेभ्यो अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद हरिगीतिका)

लेय निरमल नीर याही, थान के द्रह को सही।
धरि कनक झारी आप करले, भक्ति की मनसा ठही॥
गिरि महा हिमवन देव जिन थल, पूजि हूँ मन लायजी।
तिस फलै जामन मरण नासै, और फल कहा गायजी॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान् शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलं॥१॥

बावनो चंदन सु घसि के, नीर सुभग मिलाइये।
ले आपने कर सुभग वासन, हरष के गुण गाइये॥
गिरि महा हिमवन देव जिन थल, पूजि हूँ मन लायजी।
मैं जजों चंदन पाय जिनके, ताप भव के जायजी॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान् शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं॥२॥

लेय अक्षत ऊजले शुभ, खंड बिन सुख दायजी।
धरि थाल कंचन हुलस मन वच, काय सुध कर लायजी॥

गिरि महा हिमवन देव जिन थल, पूजि हूँ मन लायजी।
ता फलै पदवी अखय पावे, और कहा अधिकायजी॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं॥३॥

फूल सुर द्रुम के सु आने, शुद्ध वरन सुहावने।
अलि मोह बसि हो गैल तिनकी, भ्रमै अति सुख दावने॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, थान की पूजा करों।
ता फलै योद्धा काम अरि को, खेद विनशै दुख हरों॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन बिंबेभ्यो पुष्पं॥४॥

तुरत कृत चरु घिरत मिष्टा, दुग्ध लोन मिलाइये।
इन आदि षट् रस पूर सुन्दर, रसन अति सुख दाइये॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, थान की पूजा करों।
तिस फलै राग अनादि को संग, भूख नामक परिहरों॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन बिंबेभ्यो नैवेद्यं॥५॥

दीप मणिमय नाश तम को, थाल भर कर लाइयो।
धरि हरष हिरदै मानि धन भव, देत जिन गुण गाइयो॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, थान की पूजा करों।
ता फलै दुखदा मोह दर्शन, सहित मिथ्या तम हरों॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन बिंबेभ्यो दीपं॥६॥

धूप दश विधि गंध दायक, अगनि में जारों सही।
तिस धूम नभ में फैल चहुं दिश, गंध शुभ कीनी मही॥
गिरि महा हिमवन शीश जिनके, बिंब की पूजा करों।
ता फलै जारों कर्म आठों, खेद बिन शिव तिय वरों॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन बिंबेभ्यो धूपं॥७॥

फल लोंग श्रीफल सुभग खारक, भले जान बिदामजी।
इन आदि लाय मनोज्ञ फल अति, महा सुख के धामजी॥

गिरि महा हिमवन शीश जिनके, बिंब की पूजा करों।
ता फलै सुख तै होय शिव थल, कर्म को पुनि ना धरों॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन् शिखरे जिनालयस्थ जिन बिंबेभ्यो फलं॥८॥

उदक चंदन अक्षत पुष्प रु, चरू दीप बखानिये।
फिर धूप फल जुत द्रव्य आठों, मेल अर्घ जु आनिये॥
गिरि महा हिमवन शीश ऊपरि, थान जिन राजै सही।
ते जजों मन वच काय सुध करि, होय ता फल शिव मही॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन शिखरे जिनालयस्थ जिन बिंबेभ्यो अर्घ्यं॥९॥

(छन्द–अडिल्ल)

शीश महा हिमवन के जिन थल सो कहे,
तिस थलके हैं बिंब भवन के अघ दहे।
मैं भी अरघ बनाय गाय गुण आईयो,
पूजों हरष बढाय हरष बहु पाईयो॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन शिखरे जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(छन्द पद्धरि)

गिरि महा जु हिमवन शीश थान, तहैं सिद्ध कूट जिन गेह मान।
तिन में जिन बिंब सु पापहार, मैं पूजों तिन पद अर्घ सार॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान शिखरे सिद्ध कूट जिनालयेभ्यो अर्घ्यं॥१॥

गिरि महा जु हिमवन क्षेत्र मांहि, गतिकर सिद्ध भये दुःख नाहिं।
और सिद्धक्षेत्र जिन थान, इन पद अर्घ जजों धरि ध्यान॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान कुलाचल क्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

महा हिमवान उत्तर दिश जाय, मध्यम भोग भू कहे जिनराय।
तहं ते कर्म हरि शिव होय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं मध्यम भोगभूमि हरिक्षेत्र से मुक्तिप्राप्त जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

महाहिमवान जिनके सही, मंगल दायक जान।
पूजों भवि मन लायके, आलस तम को हान॥१॥

(छन्द वेसरी)

महाहिमवान महा सुखदाई, तिसपे जिन चैत्यालय भाई।
तिनको पूजे होय सुज्ञानी, तो पावो आतम रिधि छानी॥२॥

ये सब थान पुन्य के गेहा, देखत ही उपजे उर नेहा।
हरष होत ही पुण्य उपावे, ता फल ही अद्‌भुत सुख लावै॥३॥

तो दरशन महिमा की भाई, वरनै कवि मुख कवलों जाई।
दरशन होत पाप क्षय होई, और कहा फल भाषै कोई॥४॥

पुण्यवंत ही दरशन पावै, हीन–पुण्यते तहां न जावै।
गये तहां तिनके पद सेवै, अजर अमर पद सो जिय लेवै॥५॥

तातैं भो भवि चित्त लगावो, भक्ति भाव तैं जिन गुण ध्यावो।
होय महाफल सुखदा भाई, लहो पूज्यपद सब अघ जाई॥६॥

जिन ध्यायो तिननै सुख पायो, इम सुनि हम भी मन ललचायो।
तातें मन वच काय लगाई, मैं जिनपद की विनती लाई॥७॥

जो फल और भव्य जन पायो, सो फल मैं भी मांगन आयो।
तातें देव दया मो कीजे, मनवांछित मोकूं फल दीजे॥८॥

मैं तो दीन अधम जग मांही, तुम जिन दीन तार सुखदाई।
अधम उधार विरद है तेरी, तातें भव दुख मेटो मेरी॥९॥

इत्यादिक मैं अरज कराऊं, बहुरि बहुरि जिन तुम गुण गाऊं।
धन्य तिन्हें ते तहां सिधावैं, जाय तहां जिन पूजा लावैं॥१०॥

मैं तो शक्तिहीन हूँ देवा, मैं पाया तुम थुति का मेवा।
तातें इस ही थल में स्वामी, भावन भाय जजों जिन नामी॥११॥

(दोहा)

तहाँ जाने की शक्ति नहीं, अर पूजा मन धाय।
ता वशि वसुद्रव पूजिहों, करों भावना भाय॥१२॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान जिनालयेभ्यो महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - १५

निषध पर्वत जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

निषध कुलाचल शीश थान जिनके सही,
तिन में बिंब जिन राज मोक्ष की है मही।
सुर खग तो तहां जाय पूजने को लहैं,
हम यहां भावन भाय थापि सब अघ दहैं॥

ॐ ह्रीं निषधपर्वत सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्रावतरावतर।

ॐ ह्रीं निषधपर्वत सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं निषधपर्वत सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन बिंब अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द अडिल्ल)

क्षीरोदधि को नीर महा निरमल सही,
कनकझारिका मांहि लेय सुखकी मही।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं० ॥१॥

घसि के बावन चन्दन नीर मिलाइयो,
रतन पियाले धार आप कर लाइयो।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चंदनं० ॥२॥

मुक्ताफल से उज्ज्वल अक्षत खंड बिना,
अपने कर जुगलेय भक्ति जुत चित ठना।

निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं० ॥३॥

फूल सुगन्ध अपार रंग सुन्दर सही,
ले अपने कर मांहि भ्रमर गुंजत रही।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं० ॥४॥

षट् रस जुत नैवेद्य तुरत बनवाइके,
उज्वल भावन लाय लेय हरषाय के।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं० ॥५॥

दीपक रतन बनवाय महा सुख उर सही,
कनक थाल भरलाय नाश तम के सही।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं० ॥६॥

दशधा धूप मिलाय गंध करतारजी,
ले अपने कर मांहि अगनि महि जारजी।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं० ॥७॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी सारजी,
खारक आदिक और लेय फल भारजी।

निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं० ॥८॥

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु ले सही,
दीप धूप फल लेय अरघ ठानो कही।
निषध कुलाचल शीश थान जिन देवके,
पूजों मन वच काय पाय सुख भेव के॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

(चाल जोगीरासा)

निषध पर्वत शीश ऊपरै, श्री जिन थान बतायो,
रतन मई तहां बिंब विराजै, बहुतन को अघ ढायो।
सुर खग पूजि लहै फल भव को, पूज तहां कर भाई,
मैं भी मन वच काय भाव तें, पूजा की विधि ठाई॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचल सम्बन्धि श्रीजिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

निषध कुलाचल पैं सिधकूट, तिस पैं जिन चैत्यालय छूट।
तिन पूजे सब अघ नस जाय, इमि लखि पूजों अरघ चढाय॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचले सिद्धकूट जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यम् ॥१॥

निषध कुलाचल क्षेत्र के मांहि, गति हरसिद्ध भये दुख नाहि।
और सिद्धक्षेत्र जिन थान, इन पद अर्घ जजो धरि ध्यान॥

ॐ ह्रीं निषध कुलाचलसे मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

निषध कुलाचल शीश पे, देव जिनेश्वर थान।
देव पूजि सुखले वहां, मैं पूजों तजि मान॥१॥

(चाल मुनयानंद)

निषध पर्वत तनो नाम शुभ जानिये, चारसौ जोजना तुंग शुभ मानिये।
व्यास हरि क्षेत्रते दुगुन जानों सही, ऊपरें कुंड तिगिंछ जल की मही॥२॥

दोय नदी तनो व्यास तामें ठयो, पूर्व पश्चिम दिशा नीर नदी बह्यो।
नाल नदी निकसने तनी जो कही, नाक मुख नयन जुग गाय मुखसी सही॥३॥

कुंड दीरघ सहस च्यार जोजन बन्यो, व्यास दो सहस जोजन तनो इम भन्यो।
जान चालीस जोजन गहर सारजी, कमल ताके विषै घने विसतारजी॥४॥

चार जोजन कमल व्यास जानों सही, तुंग भी जल थकी च्यार जोजन कही।
देवि को वास मंदिर सहित जानिये, और परिवार के कमल बहु मानिये॥५॥

मूल के कमलतें अर्घ तुंग व्यास है, देवी परिवार के देव को वास है।
रतनमय कमल सब हरित मय काय है, ध्रुव सब काल क्षय ताहि कभूं पाय है॥६॥

और नव कूट या पर्वत पै जानिये, प्रथम सिद्ध कूट पै देव जिन थानिये।
निषध दूजो कहूँ कूट सुखकारजी, तीसरो कूट हरिवर्ष दुखहारजी॥७॥

पूरव विदेह चवथो कह्यो कूटजी, पाँचमो हरि जान कूट दुख छूटजी।
घृति नामा कह्यो कूट षष्टम सही, सातमों कूट सीतोदा सुख की मही॥८॥

आठमों नाम अपर विदेह कह्यो कूटजी, रुचक नवमों कह्यो कूट दुख छूटजी।
कूट सब गोल हैं रतन तने जानिये, देवके वास इन ऊपरे मानिये॥९॥

कूट परमान तुंग आय परवत थकी, बाग चौथो कहै रीति ऐसे धकी।
इनै आदि और रचना घनी जानिये, निषध गिरि सकल में दीर्घ गिरि मानिये।१०।

(दोहा)

निषध कुलाचल में सही, रचना थान अपार।
तिन गति छेदक देवको, जजों अरघ कर धार॥११॥

ॐ ह्रीं निषधपर्वतसम्बन्धि जिन चैत्यालय जयमालापूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद॥

पूजा नं. - १६

नील कुलाचले जिन चैत्यालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

प्रथम मेरु की उत्तर दिशा जो जानिये,
नील कुलाचल महा सुभग थल मानिये।
ता ऊपर जिन थान बिंब हैं सुख मई,
सो मैं पूजों थापि यहाँ मन वच सई॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु उत्तर दिशि नील कुलाचल स्थित जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द गीतिका)

नीर निरमल क्षीर दधि को, महा सुख दायक सही।
मैं लेय झारी कनक माहीं, आपने कर की मही।
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजा करों।
तिस फलै जामन मरण के दुख, नाश हों सहजै करों॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम्॥१॥

घसि नीर गंधसु धार चन्दन, सकल को सुखदाय ही।
धरि कनक पातर भक्ति उर धरि ताल पद पूजों सही॥
जिन थान पर्वत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै भव आतप नाशै, वाणि जिन ऐसे कही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम्॥२॥

सुभग उज्ज्वल खंड बिन ही, अक्षत निरमल लाइयो।
ले आपने कर हरष धरिके, देव जिन गुण गाइयो।
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
तिस फलै थानक अखय पावै, भव भ्रमण परिणति रही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम्॥३॥

फूल सुर द्रुम तने सुन्दर, गन्ध की उपमा घनी।
ले आप कर अति भक्ति उर धर, पाप की परिणति हनी॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै दुखदा मदन नाशै, पाय है सुख की मही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम्॥४॥

नैवेद्य षटरस सहित सुखदा, तुरत को कीनों लियो।
धरि सुभग पातर आप करले, भक्ति जुत शुभचित कियो॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै जठरानल विनाशै, और फल की को कही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम्॥५॥

रतन दीपक ज्योति करता, तम हरा सुन्दर गिनो।
धरि कनक पातर आरती कर, हरष बहु हिरदै ठनो॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै मिथ्या रोग नाशै, सुरत में ऐसे कही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम्॥६॥

धूप दश विध गंधदायक, घ्राणको सुखदायजी।
ले हरष जुत तें आपने कर, धरों त्राह्नि मांहिजी॥
जिन थान पर्वत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै आठों कर्मक्षय हो, जनम की उतपति रही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम्॥७॥

लोंग श्रीफल दाख पिस्ता, जान सुभग बदाम जी।
आनि पुंगी फला खारक, आदि सुखके धामजी॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै शिवफल होय भविजन, और को महिमा कही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम्॥८॥

जल चन्दनाक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फला गिनो।
ये अष्टद्रव्य सुलेय सुन्दर, अरघ अपने कर ठनो॥
जिन थान परवत नील ऊपर, तास पद पूजों सही।
ता फलै दुःख मिटे जगत के, मिले शिव सुख की मही॥

ॐ ह्रीं प्रथम मेरु नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥९॥

(चौपाई)

परवत नील कुलाचल शीश, है जिन थान बिंब जगदीश।
तिनपे आठों दरव मिलाय, अरघ जजों मन वच तन काय॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घ्यम्॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(चोपाई)

नील कुलाचल ऊपर जान, सिद्ध कूट है शुभ गुण खान।
तहां जिनालय अद्भुत जोय, तिन पद पूजों निरमल होय॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल सम्बन्धि सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं॥१॥

मेरु सुदर्शन उत्तर दिश जान, पर्वत नील कुलाचल मान।
कर्म छेद भये भवपार, ते सिद्ध पूजों मन वच काय॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल से मुक्ति प्राप्त सर्व जिनेभ्यो अर्घं।

जयमाला

(दोहा)

नील कुलाचल ऊपरै, हैं जिन थान सयान।
देव खगां पूजे तहां, हम पूजे इह ठान॥१॥

(छन्द वेसरी)

जम्बू द्वीप गिरि उत्तर धारा, मेरु कुलाचल सब गिरि लारा।
दंडाकार भूमिमें थाया, पूरव पश्चिम नौक बताया॥२॥

चौपड पासावत आकारा, ऊपर हेठ व्यास सम धारा।
ऊंचा जोजन चव शत भाई, व्यास निषध परवत सम थाई॥३॥

मोरकंठसा वरण बताया, तथा सब्ज पन्ना मय गाया।
इसपे नव शुभ कूट बताये, देवतने तिसपे थल गाये॥४॥

कूट तुंग ऐसे मन लावो, निज गिरि तें आधे समझावो।
सकल गिरी रतनों के कूटा, दोनों वन वेदी दुख छूटा॥५॥

या गिरि ऊपर द्रह शुभ जानो, केशरि ताको नाम बखानो।
लंबा कुंड तना विस्तारा, च्यार सहस जोजन मनधारा॥६॥

जोजन सहस दोय का व्यासा, ऊंचा जोजन चालिस भाषा।
फिर इन दधि मधि कमल सुहाये, देवीदेव बसै तहां ठाये॥७॥

फिर तिनमें ते नन्दी आई, पूरब अपर चाल दधि याही।
इन आदिक बहुत विसतारा, जान लेय जिन धुनि तें सारा॥८॥

ऐसो नील कुलाचल भाई, उपमा ताकी वरणी न जाई।
तापै देव जिनन्द सु थानो, सो मैं पूजों हो अघ हानो॥९॥

या परवत की रचना सारी, भुगतै भटकै जीव संसारी।
याकी उतपति हर शिव जावै, ता पद पूजन सुर खग आवै॥१०॥

(सोरठा)

नील कुलाचल होय, सब जीवन सुखदाय है।
या गति छेदक सोय, अर्घ जजों पद तासु के॥११॥

ॐ ह्रीं नील कुलाचल सम्बन्धि जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

नील कुलाचल उत्तर दिश में जानिये,
रम्यक् नामा क्षेत्र सु आरज मानिये।
तहुंते कर्म छेद भये भवपारजी,
ते सिद्ध पूजों सार सकल मद टारजी।

ॐ ह्रीं भोगभूमि रम्यक् क्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - १७

रुक्मि पर्वत जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(चौपाई)

रुक्मी नाम कुलाचल सोय, मेरु तनी उत्तर दिश जोय।
तापे है जिन थल जिन बिंब, ताहि जजों मन वच इक जोय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु रुक्मिनाम पर्वत सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु रुक्मिनाम पर्वत सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु रुक्मिनाम पर्वत सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द जोगीरासा)

नीर महा निरमल सुखकारी, क्षीरोदधि सम भाई।
झारी कनक तनो भर कर ले, भक्ति धार अधिकाई॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, जामन मरण निवारी॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो जलम्॥१॥

चंदन बावन पावन जलसें, खूब घिसाऊं भाई।
कनक पियाले धार लेयकर, हरष घनों उपजाई॥
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, भव आताप निवारी॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम्॥२॥

तन्दुल उज्ज्वल खंड विना ले, सब ही नोक धराये।
सुभग रकेबी थाल लेयकर, मनमें बहु उमगाये।

रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, थान अखै फलधारी।।

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम्।।३।।

फूल कल्प द्रुम के हितकारी, गंध धरा शुभकारी।
वर्ण मनोज्ञ अनेक जातिके, ले अपने कर धारि।।
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, कामवंश सब जारी।।

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम्।।४।।

तुरत करत नैवेद्य महा शुभ, षट्रस पूजित भाई।
सुमन थाल भर लेकर अपने, हरषधार अधिकाई।।
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, रोग क्षुधा निरवारी।।

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम्।।५।।

दीपक रतनमई तमहारी, ज्योति प्रकाशक भाई।
कनकथाल भर लेय आरती, जिन पूजन मन लाई।।
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, मिथ्या तम निरवारी।।

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो दीपम्।।६।।

धूप भली दश गंध तनी शुभ, मेलि इकट्ठी लायो।
खेवन को मनसा वच काया, जिन चरणा उमगायो।।
रुक्मीनाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, कर्मनाश को धारी।।

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो धूपम्।।७।।

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिसता भाई।
इन आदिक फल लाय मनोहर, नैनन को सुखदाई।।

रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, मोक्ष फला करतारी॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो फलम्॥८॥

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल लाये।
इनको अरघ बनाय सुभग चित, अंग अंग हुलसाये॥
रुक्मी नाम कुलाचल ऊपर, जिन मन्दिर हितकारी।
बिंबनिको पूजों शुभ भावन, अद्भुत फल करवारी॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥९॥

(छन्द पद्धरी)

जिन पूजातें जगपूज्य होय, फिर स्वर्गमोक्ष है कर्म खोय।
इमि जानि पूजिये देव पांय, तातैं भव वांछित सुख सु पाय॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सम्बन्धि जिनालयस्थ जिनेभ्यो महार्घ्यम्॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

रुक्मि नाम कुलाचल जान, सिद्धकूट उत्तम थल मान।
जिनमंदिर जिन से बिंब मान, ता पद अर्घ जजों थुति गाय॥

ॐ ह्रीं रुक्मिनाम कुलाचल सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं० ॥

मेरु सुदर्शन उत्तरदिश मांहि, रुक्मि नाम कुलाचल पांहि।
तहँ ते अष्ट कर्म छेदक सोय, ते सिद्ध पूजों अर्घ संजोय।

ॐ ह्रीं रुक्मि नाम कुलाचल से मुक्ति प्राप्त सर्व जिनेभ्यो अर्घं।

जयमाला

(चौपाई)

रुक्मि नाम कुलाचल सोय, ताकी रचना भाषै जोय।
सुनत कथन हित उपजै सही, होय पाप क्षय शुभ फल मही॥१॥

(छन्द वेसरी)

रुक्मी नाम कुलाचल जानो, जम्बू द्वीप विषै शुभ थानो।
दंडाकार तुंग अधिकाई, पूरव पश्चिम नोक बताई॥२॥

श्वेत वरण रूपा सम होई, ताकी महिमा लखै न कोई।
जोजन द्वय शत ऊंचा जानो, चौडाई आगम तें मानो॥३॥

महा पुंडरीक नामे कुंडा, जोजन दश द्रह जानों ऊंडा।
दोय सहस जोजन लम्बाई, व्यास जोजना सहस बताई॥४॥

तामें कमल रतन मय मानो, तहँ पे बुध देवी को थानो।
जोजन दोय कमल का वासा, ऊँचा जल सम कछु अधिकासा॥५॥

ता द्रह में दो सरिता आई, नारी रूप्य कुला लख भाई।
सो चलि बहु नंदी जुत होई, मिली समुद लवणोदधि सोई॥६॥

और कमल लघु द्रह में भाई, घने कहे परिवार बताई।
तिन पे बुधि देवी परिवारा, देव रहे नाना सुख धारा॥७॥

इत्यादिक रुक्मी गिरि मांही, रचना घनी वाणि जिन गाही।
और ऊपरै कूट बताये, तिन पे देव बसे धुनि गाये॥८॥

तिन पैं एक कूट सिध जानो, तापे जिनको थान बखानो।
बिंब महा सुन्दर जिन जैसा, सो मैं पूजों सिध-फल ऐसा॥९॥

देव खगां नित पूजा ठाने, अपने तन को सफल कराने।
हम तो मन वच काय लगाई, यहाँ ही भावन भावै भाई॥१०॥

(दोहा)

रुक्मी परवत ऊपरै, देव जिनेश्वर थान।
देव खगाँ उस थल जजें, हम यहाँ भावन जान॥

ॐ ह्रीं रुक्मि नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालय पूजा महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

रुक्मीगिरि उत्तर मंझार, हैरण्यक्षेत्र बसै शुभकार।
तहंते अष्टकर्म छेदक सोय, ते सिद्ध पूजौं अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं हैरण्यवतक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त सर्व जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद॥

સહજ ચિદાનંદ.

पूजा नं. - १८

शिखरी पर्वत जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

शिखरी नाम कुलाचल ऊपर जानिये,
सिद्धकूट शिर जिनको थान बखानिये।
देव खगाँ तहाँ जाय पूज्य जिमि सुख लहै,
हम इहाँ भावन थापि पूजि के अघ दहै।।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द गीतिका)

लाय निरमल नीर सुखदा, क्षीर दधि सम जानिये।
कनक झारी हरष जुत है, आपने कर आनिये।
शिखरी कुलाचल शीश जिनके थान जो सुखदाय है।
मैं जजों धारा देय जलकी, जरा जनम नशाइयें।।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं।।१।।

घसि नीर निरमल मांहि चन्दन, घ्राण को सुखदाय जी।
फिर कनक थाली आप कर ले, भक्ति बहु उर लायजी।।
शिखरी कुलाचल शीश जिनके थान जो सुखदाय हैं।
मैं जजों चन्दन पाय जिनके, फलै भव तप जाय है।।

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं।।२।।

शुभ लेय अक्षत जान मुक्ता, फल समा उज्ज्वल सही।
बिन खंड नख शिख शुद्ध जानो, गंध जुत तंदुल कही॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फले होई अखंड सुख फल फेर दुख नहीं पायजी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम्॥३॥

फूल सुर द्रुम गंध दायक वरण नाना जानिये।
तिस गंध बसि हो भ्रमर आवै, प्हुप ऐसे आनिये॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै नाशै मदन को मद, सहज ही दुख जायजी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम्॥४॥

नैवेद्य षट रस पूर वांछित, जीभ को सुखदा सही।
ले तुरत कीनों आप कर ले, महा उज्ज्वल शुभ महीं॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै भूख विनाश पावै, दोष सब ही जाय जी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम्॥५॥

दीप तमहर रतन कारी, घटपटा परकाशियो।
धार कंचन आप कर ले, भक्ति बहु मुख भाषियो॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लाय जी।
ता फलै मिथ्या रोग नाशै, ज्ञान प्रकटै आय जी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम्॥६॥

अगर आदि मिलाय दश विधि, धूप मन मानी धरों।
बिन धूम अगनी माहि धर करि, भाव निरमल निज करों॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै नाशै कर्म सबही, सिद्ध को पद पायजी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम्॥७॥

लाय श्रीफल लोंग पिस्ता, सुभग पुंगी फल सही।
खारक बिदाम सु आदि दे के, फल लिये बहु सुख मही॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै उपजे मोक्ष के फल, और क्या अधिकाय जी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम्॥८॥

नीर चंदन सुभग अक्षत, फूल चरु दीपक सही।
वर धूप दशधा फल मनोहर, मेलि के वसु अर्घ ही॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै अद्भुत होय महिमा, सिद्ध को पद पायजी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥९॥

जल आदि द्रव्य मिलाय आगे, अरघ सुखदा लायजी।
ले आपने कर आरती शुभ, जिन तने गुण गायजी॥
मैं जजों शिखरी शीश जिन थल, जजों जिन मन लायजी।
ता फलै उपजे देव खग नर, फेर शिवधाम पायजी॥

ॐ ह्रीं शिखरी नाम कुलाचल सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(छंद चौपाई)

शिखरी नाम कुलाचल जान, तापे सिद्ध कूट मन आन।
जिनमंदिर जिनसे बिंबमान, ताके पद पूजों सुखकार॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ०

शिखरी नाम कुलाचल जान है शुभकार सुख आगार।
अष्टकर्म छेद भये भवपार, ते सिद्ध पूजों मन वच काय॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल से मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शिखरी गिरि ऊपर सही, है जिनवर को धाम।
सो मैं यहां भावन भजों, देव जजों तिस ठाम॥१॥

(छन्द वेसरी)

जम्बू द्वीप विषै गिरि जानो, शिखरी ताको नाम बखानो,
चौपड पासे के आकारा, हेठ व्यास जे तो शिर धारा॥२॥

पूरव पश्चिम नोक बताई, शत जोजन ऊंचो है भाई।
कनक जिसो रंग ताको जानो, तापै पुंडरिक द्रह मानो॥३॥

सो यह द्रह जोजन शत पांचा, ब्यास कह्यो जिन ध्वनि में साँचा।
लंबा सहस जोजना भाई, दश जोजन ऊँचा सुखदाई॥४॥

ता द्रह मांहिं कमल सुखकारी, रतन मई जोजन विसतारी।
तापे देवी लक्ष्मी वासो, नन्दी तीन चली इस मासो॥५॥

और घने द्रह में सुनि भाई, कमल घने लघु अति सुखदाई।
तिन पे देव रहैं हितकारी, लक्ष्मी देवी के परिवारी॥६॥

फिर शिखरी परवत पे भाई, कूट कहे एकादश ठाई।
तिन पे देव रहै सुखकारी, सिद्ध कूट पे जिन थल भारी॥७॥

ताको देव नमें थुति लाई, नभचर में बहुते गुणगाई।
ताके फल बहु पुण्य उपाये, अनुक्रम तें जिनको पद पावै॥८॥

ताते मैं भी मन वच काई, अष्ट द्रव्य शुध लेकर भाई।
भावन ये पूजे जिन देवा, भो भो मिलै फेर तुम सेवा॥९॥

(दोहा)

ऐसे शिखरी गिरि परे, सिद्ध कूट पे जान।
थान भले जिन देव को, ताहि जजों हित आन॥

ॐ ह्रीं शिखरी कुलाचल सम्बन्धि सिद्धकूट चैत्यालय जिनेभ्यो जयमाला अर्घ्यम्०

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पूजा नं. - १६

ऐरावत क्षेत्रे जिनालयस्थ जिनेन्द्र पूजा

(छन्द अडिल्ल)

जम्बू दीप तनों ऐरावत जानिये,
क्षेतर महा मनोज्ञ मोक्षदा मानिये।
तहँ थानक जिन देव तने शोभै सही,
सो मैं जजों सुभाय भावना जुत ठही॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि ऐरावत क्षेत्रस्य जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि ऐरावत क्षेत्रस्य जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि ऐरावत क्षेत्रस्य जिन चैत्यालयस्थ जिन अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द जोगीरासा)

गंगा सरिता को शुभ पानी, कनक कलश भरि लाऊं।
ले अपने कर बहु हरषे चित्त, पूजन को उमगाऊं।।
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों जल सेती, जय जय जय जिनराये।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलम् ।।१।।

चंदन बावन पावन चित्त कर, गंध धार सुखकारी।
निरमल जल घसि के शुध कीनो, रतन पियाले धारी।।
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों चन्दन से, जय जय जय जिनराये।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनम् ।।२।।

अक्षत उज्ज्वल खंड बिना शुभ, मुक्ताफल से जानो।
कनक रकेबी धार मनोहर, पुन्य थकी मन मानो।।
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जो जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों अक्षय सों, जय जय जय जिनराये।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतम् ।।३।।

फूल मनोज्ञ भले गंध धारी, नाना वरण सु भाई।
इत्यादिक बहुते गुण धारक, घ्राण नयन सुखदाई।।
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों फूलन सो, जय जय जय जिनराये।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पम् ।।४।।

षट्‌रस पूर मिलाय मनोहर, महती किरिया धारी।
वांछित खाजा फीणी मोदक, ले आया सुखकारी।।
ऐरावत क्षेतर के मांही, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों शुभ चरु से, जय जय जय जिनराये।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यम् ।।५।।

दीपक रतनमई तम हारी, ज्योति पुंज अधिकाई।
कनक थाल भर लेकर अपने, करों आरती भाई॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों दीपक से, जय जय जय जिनराये॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपम्॥६॥

अगर कपूर मिलाय और सब, दशधा धूप मिलाऊँ।
अपने करतें अगनि माहिं सब, खेऊँ अति सुख पाऊँ॥
ऐरावत क्षेतर थल मांही, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों शुद्ध धूपतें, जय जय जय जिनराये॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपम्॥७॥

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो।
इनको आदि भले फल लेके, हिय में हर्ष समानो॥
ऐरावत क्षेतर थल माहीं, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों शुभ फल लेके, जय जय जय जिनराये॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलम्॥८॥

जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल लाई।
इन आदिक शुभ द्रव्य लेयकर, अर्घकरों हितदाई॥
ऐरावत क्षेतर थल माहीं, जे जिन थान बताये।
ते सब मैं पूजों सु अर्घ ले, जय जय जय जिनराये॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

(छन्द गीतिका)

कर लेय वसु द्रव अरघ सुन्दर, आरती सुखदायजी।
फिर गाइये गुण जगत गुरुके, वचन मन लव लायजी॥

शुभ क्षेत्र ऐरावत तने जिन, थानको मन लाय रे।
मैं जजों अर्घ चढ़ाय जय जय शब्द तें सुख पाय रे॥

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घ्यम्०

प्रत्येक अर्घ

(वेसरी)

ऐरावत विषै बहु जिनके थान, नंदीपुर गिर दीप अरणि अनजान।
तहंते कर्म छेद गये शिव थान, तिन पद अर्घ जजौं सुख मान॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा)

जल चन्दन अक्षत कुसुमावलि, चरु दीपक धरि थारी।
धूप सुफल वसु द्रव्य लेय करि, जिन पूजा सुखकारी॥
ऐरावत क्षेतर थलमाहिं, विजयारधगिरि के जिनथान।
ते सब मैं पूजों सुअर्घ ले, जय जय जय जिनराज महान॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।

(दोहा)

रजताचल के शिखिर पर, सिद्धायतन नाम।
ऐरावत जिनग्रह जजै, लै जलादि अभिराम॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि सिद्धायतन कूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

जयमाला

(वेसरी)

ऐरावत क्षेत्र जिनवर के गेहा, तहां भव्य पूजों करि सेवा।
नाना विधिकी भक्ति उपावै, जय जय जय जिन मुखते गावै॥

भक्ति प्रभाव दाव शुभ पायो, जिनगुण गावन को उमगायो।
जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, ताने निज भव सफल करायो॥

हे जिन या भव संकट माहीं, तुम बिन कोऊ शरणों नाहीं।
ऐसे बहुविध भक्ति उपावै, ता फल सुर शिव मारग जावे॥

तुम प्रभु दीन तार सुनि आयो, सुमरत ही सब पाप पलायो।
देव जिनेश्वर पद थुति मेरी, भव भव में थुति पावों तेरी॥

(पद्धड़ी छन्द)

जहँ रतन भूमि सोहे सुढार, तहां पुष्प वाटिका लसै सार।
विजयारधगिरि जिनराजगृह, ऐरावत गत बन्दौं सु तेह॥

जिनमें प्रतिबिम्ब बिराजमान, सुर खेचर यजन करते महान।
सिंहासनस्थित जिनजगत भूप, वसु प्रातिहार्य शोभै अनूप॥ विज०॥

सिर छत्र तीन शोभे उदार, सित चमर झलै जिम क्षीर धार।
घँटा झालरि बाजै सुभाय, सुर सुरी निरति करती सु आय॥ विज०॥

बाजत बाजै सब साज संग, बीना मृदँग मुहचँग चँग।
गावैं सुतान सुर लेहि मान, जिनवदन निरखो हरषै महान्॥ विज०॥

ध्वजपंक्ति सोहै तिह विशाल, दस चिह्न मंडित युत युक्त माल।
ये वचनादौलित गगनमांहि, भविजीवनकौ मानों बुलाहि॥ विज०॥

जह जयकार करंत देव, खेचर खेचरी जिन करत सेव।
जह चारण मुनि करते विहार, उपदेश देहि हितमित उदार॥ विज०॥

भविजीव सुनै मन हरष ल्याय, जिनपूजा थुति करते सु भाय।
गुण गावे मन आनंद पाय, छबि नैन निरखि बलि बलि सुजाय॥ विज०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

❀

पूजा नं. - २०

ऐरावत क्षेत्रे शाश्वत चतुर्विंशति जिन पूजा

(छंद गीतिका)

तहँ देव खग नित पूज ठानै, दरब वसु कर लायजी।
कर द्रव्य सब विधि जजे भावसु, जिन तने गुण गायजी॥
तिन क्षेत्र ऐरावत सु माहीं जिन चौवीसी हो सही।
ते जजों मन वच काय शुभ तें, थापि के इस ही मही॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिन मम सन्निधौ भव भव वषट सन्निधिकरणम्।

(छंद गीतिका)

नीर निरमल गंध जुत शुभ, हरष मन कर के सही।
शुभ पद्म द्रह को लाय ऐसो, कनक झारी में सही।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो जलम्॥१॥

चंदन घसों शुभ बावनो मैं, नीर गंध मिलायजी।
भरि रतन झारी आप करले, हरष बहु विधि पायजी।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो चन्दनम्॥२॥

अक्षत अखंड सुगंध उज्वल, महा सुखदा जानिये।
ले कनक थाल भराय सुन्दर, आप भव दधि भानिये।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो अक्षतम्॥३॥

फूल नाना वरण धारक गंध जुत सब पाट हैं।
ले माल जाकी महा सुन्दर, काम मद की दाट है॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो पुष्पम्॥४॥

नैवेद्य षट रस पूर वांछित, तुरत कर में लाय जी।
धर थाल सुन्दर आप कर ले, देव जिन गुण गायजी॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो नैवेद्यम्॥५॥

ले रतन दीपक ध्वांत नाशक, ज्योति बहु परकाशिया।
भर थाल कंचन आप करले, देव जिन गुण गाइया॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो दीपम्॥६॥

धूप दश विधि गंध की कर, पीस के शुभ लाइयो।
धरि अगनि भीतर आप कर तें भक्ति जुत गुण गाइयो।
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो धूपम्॥७॥

लोंग पिस्ता और श्रीफल, खारका सुख दाय है।
शुभ जान पुंगी फल बिदाम सु, और फल बहु लाय है॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब, आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो फलम्॥८॥

उदक चंदन पुष्प अक्षत, दीप धूप फला सही।
करि अर्घ सुखदा आरती ले, दान उर की शुभ मही॥
पूज्य जिन चौबीस ऐरावत विषै जो हो रहे।
ते हरो मेरे पाप मल सब आपने मल धो रहे॥

ॐ ह्रीं ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि शाश्वत चौबीसी जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥९॥

ऐरावत क्षेत्र प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

ऐरावत आरज खण्ड माँहि, जिन चौबीस हुए सुख पाँहिं।
तिनके पद में अरघ चढ़ाय, पूजत हों मन वच तन काय॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं।

ऐरावत इस ही थल माँहि, वर्तमान जिनके सुखदाहि।
तिनके पद वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ उतारों भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि वर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं।

इस ऐरावत खेतर माँहिं, होनहार चौवीसी पाँहिं।
तिन जिन बीस चार अवलोय, पूजों मन वच अरघ संजोय॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि अनागत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं।

(अडिल्ल)

मेरुत्तरदिशि ऐरावत जिन जानिये,
तीता-गता-अनागत जिन परमानिये
सब जिनवरकी शाश्वत जन्मभूमि यही,
नगर अयोध्या पूजूं मैं वसु द्रव्य लही।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीर्थंकरस्य शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(आज हृदय पुलकित)

जम्बूद्वीपके ऐरावतमें सम्मेदशिखर है तीर्थ महान,
सब तीर्थेशोंने पाया है जहाँसे मुक्तिपद निर्वाण।
जिसकी भक्ति करके मैं भी वांछा करु निज मुक्तिधाम,
अष्ट द्रव्यका अर्घ्य बनाकर पूजूं शाश्वत तीर्थ महान॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीर्थंकरस्य शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर तीर्थ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चौवीसों जिनराजकी, महिमा अगम अपार,
सुर नर मुनि जिनको सदा, नावत वारंवार।

(पद्धरि छन्द)

जय जय जय चौवीसों जिनेश, जय जय तुम गुन गावत सुरेश;
जय जिनवर भवभय करत चूर, जय तुम वंदत अघ नसत क्रूर॥

जय जय जय जिनवर परमदेव, तुम चरननकी हम करत सेव;
जय जय जगतारण जय जिनेश, जय चरनकमल सेवत सुरेश॥

जय तुम गुणमहिमा अगम अपार, जय वरनत किम लहों सुपार;
जय जय जय जिनवर देव सोय, तुम सम नहि दूजो देव कोय॥

जय भामंडल छवि जगमगाय, जय तीन छत्र सिर पर सुहाय;
जय चमर अमर ढारत अपार, जय जय जय सुधुनि होत सार॥

जय तुम गुणमहिमा अगम अपार, जय जय मुनिजन पावे न पार,
जय जय जय जग जयवंत देव, तुम चरननकी सुर करत सेव॥

यह अरज हमारी धार धार, जय भवदधि कर अब पार पार;
जय जय मिथ्यातम हरन सूर, जय ज्ञान दिवाकर तुँ हजूर॥

जय जय कर्म विनाशन सुहार, जय काम मतंगज दलन हार;
जय दरसन से जन होवे खुशाल, जय जय जय जयवंतो त्रिकाल॥

जय तुम जगवैद्य विराजमान, भव बाधा किम सहियो महान;
अब नंदन तुमरी शरन आय, भव बाधासे लीज्यो छुडाय॥

(घत्ता छन्द)

जय जय जिनवरजी, सुनहु अरजी, आयो चरनन की सरन,
करें पद वंदन, भव विहंडन, नमि नमि नमि करे नमन।

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धित शाश्वते चौवीस जिनेन्द्राय चरणकमल पूजनार्थे अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।

गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जम्बूद्वीप सुक्षेत्र में, मेरु आदि जिन गेह।
ते सब पूजों भक्तिधर, धार हिये बहु नेह॥

(छन्द वेसरी)

जम्बूद्वीप मध्य में भाई, मेरु सुदर्श के वन सुखदाई;
चव गजदंत विरछजुग जान, जम्बू शालमली मन आन॥

याही मेरु उत्तर दक्षिणाउ, पर्वत षट अति जान सिखाऊ।
सात क्षेत्र सुन इनके नामा, पहला भरत महा सुख ठाया॥

यामें विजयारध गिरि भाई, दूजो क्षेत्र हेमवत पाई।
यामें भोगभूमि सो जानों, तामें जघन्य रीति सब मानों॥

क्षेतर तीजो हरि सुखकारी, चतुर्थ क्षेत्र विदेह सु धारी।
या विदेह में और जु ठामा, क्षेत्र बतीस जान शुभ धामा॥

षोडष यामें गिरि वक्षारा, नाम विभंगा द्वादश धारा।
गिरि वैताढ बतीस अनूपा, इन आदिक बहु और स्वरूपा॥

रम्यक् क्षेत्र और शुभ जानो, हैरण्यवत क्षेतर शुभ मानो।

सप्तम ऐरावत है भाई, विजयारध है याकी ठांई॥

फेर कहूं षट गिरि के नामा, हिमवन फिर महाहिमवन ठामा।
तृतीय निषध कुलाचल होई, चतुर्थ नील महा शुभ जोई॥

रुक्मी पर्वत है अधिकारा, षष्टम शिखरी पर्वत सारा।
इन सब पे इक इक हद जानो, इह मधि कमल सुरन को थानो॥

सब ही गिरि मेरादिक भाई, तिन पर जिनवर के थल पाई।
तिनको पूजें सुर खग सारे, भक्ति करे ताते अघ न्यारे॥

सप्त क्षेत्र में तीस सु धामा, कर्मभूमि अरु आरज ठामा।
अनआरज में धर्म जु नाहीं, कर्मभूमिमें सिध थल पाई॥

तिनमें क्षेत्र विदेह सु थानो, तहाँ सदा है शिवपुर थानो।
सदा काल चौथा ही होई, काल फिरन यहाँ होय न कोई॥

भरत ऐरावत क्षेतर मांही, काल फिरन षट विधि तिन ठांहि।
चौथे काल तहाँ शिव होई, और काल वृष आवक जोई॥

ऐसे इस क्षेतर ते जानो, काल फिरन की रीति पिछानो।
ते सिध लोक शिखर पे होई, भक्ति धार मैं पूजों सोई॥

(दोहा)

ऐसे जम्बूद्वीप में सकल स्थानक के मांहि।
सिध थानक, जिन गेह सब, जजों सु मन वच ठानि॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति जम्बूद्वीपस्य त्रिकालस्थ अकृत्रिम जिनेन्द्र पूजन विधान समाप्त)

श्री जम्बूद्वीप स्थित अकृत्रिम जिनालयकी पूजा

(अडिल्ल छन्द)

मेर सुदरशन जान बड़े विस्तार जी।
मानूं स्वर्ग थंभन कूं थंभा सार जी।।
जापै षोडश धाम जिनेसुर के सही।
सो हम थापन थाप जजैं इसही मही।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(चौपाई)

निरमल नीर गंग को लाय। झारी मणिमय माहिं धराय।
मेरु सुदरशन जिनके धाम। षोडश पूजों तीरथ ठाम।।१।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चंदन नीर घसाय। लायौ प्रभु पातर में जाय। मेरु० ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफल से लाय। उज्ज्वल खंड बिना सुखदाय। मेरु० ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल कल्पद्रुम के सुखरूप। लायो माला गूँथ अनूप।
मेरु सुदरशन जिनके धाम। षोडश पूजों तीरथ ठाम॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस नैवेद बनाय। मोदक आदि भले सुखदाय। मेरु०॥५॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रतनमई तम हार। लायौ धर पातर में सार। मेरु०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सार धूप दशगंध बनाय। खेऊँ जिन चरनन सुखदाय। मेरु०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल खारक अनि फल और। लायो भक्त हिये धर जोर। मेरु०॥८॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुह लेय। चरु दीपक फल धूप सु खेय। मेरु०॥९॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(पद्धरी छन्द)

वन भद्रसाल जिन थान चार। बिन कीने शाश्वत पुन्यकार॥
ते पूजों वसु द्रव्य अर्घ लाय। सम्बन्ध सुदर्शन मेरु पाय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रशालसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

नंदनवन चव जिन थान जान। सो तीर्थ पापहारी सु मान।
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। सम्बन्ध सुदर्शन मेरु पाय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

चव जिन थल सोहें सौमनस थान। सब रतनखंड उपमा निधान॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

जिन थल चव पांडुक वन मँझार। सुर खग पूजें तहाँ भक्ति धार॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

चव गजदंतो चव जिन सुगेह। महा सुन्दर देखें होय नेह॥। ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुश्चतुर्गजदंतसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

जम्बू वृक्षै जिन थान सोय। रचना मणिमय तहाँ बिम्ब जोय॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजम्बूवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

जिन थान शालमलि वृक्ष ठांहि। मुख महिमा कहते पार नाहिं॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

सुदरशनमेरु दक्षिण दिसाय। जिन थान कुलाचल पै जो पाय।
तिनमें जिनबिम्ब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति०

उत्तरदिश याही मेर जान। जिनभवन कुलाचल पै सुथान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिउत्तरदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥९॥

सुदरशनमेरु पूरब दिशाय। जिन थान वक्षारन सीस पाय॥ तीन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥१०॥

पच्छिम दिश येही मेरु सार। वक्षारन पै जिन भवन धार॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपच्छिमदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरिजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

इस मेर सुदरशन पूर्व जाय। विजयारध पै जिन भवन पाय॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनसम्बन्धिपूर्वदिशायाषोडशविजयार्धपर्वतस्थषोडशजिनालयेभ्यो अर्घं०

पच्छिम सुदरशन मेरु ठांहि। वैताडन पै जिनभवन पाहि।
तिनमें जिनबिम्ब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशिविजयार्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यो अर्घं० ॥१३॥

इस मेर सुदरशन दछन जानि। रूपाचल पै इक जिन सुथानि॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुदक्षिणदिशिरूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥१४॥

उत्तर दिश इसही मेर जान। विजयारध पै जिनभवन मान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोत्तरदिशि रूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥१५॥

(अडिल्ल छन्द)

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी।
षोडश वन के थान चार गजदन्त हैं।
ह्याँ इक इक जिनभवन जजा ते सन्त हैं।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्ध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१६॥

अथ जयमाला

(दोहा)

मेरु सुभग थानक भलौ, तीरथ पातक नास।
जजौं थान इस संग के, मन वच तन ह्वै दास॥१॥

(चाल—ते गुरु की)

मेरु सुदरशन सोहनौ, तीरथ पद सुखदाय। टेक।
ऊँचो जोजन लाख है, सब कनक स्वरूप।
नीचै को मणि तेज है, बहु घेर अनूप। मेरु० ॥२॥
भद्रसाल वन मेरु की, जड़ भौम मँझार।
ता ऊपर फिर जाइये, वन नन्दन सार। मेरु० ॥३॥
ता ऊपर वन सोम हैं, तीजौ वन सोय।
ऊपर पांडुक वन कहौ, चौथो अवलोय। मेरु० ॥४॥

इक वन वन, चव जानियो, श्री जिनवर ठाम।
कनक रतन जड़ियो सही, सब करौ प्रणाम। मेरु० ॥५॥

ठाम ठाम सर वावड़ी, शुभ महल अनूप।
देव तहाँ क्रीडा करैं, वापक गुन रूप। मेरु० ॥६॥

कै चारन मुनि जाय हैं, जिन वंदन काज।
ध्यान धरें शुभ थान में, पावैं शिवराज। मेरु० ॥७॥

पांडुक वन में जानिये, मध चूलक ठाम।
वैडूरक मणिमय सही, रंग हरत सुधाम। मेरु० ॥८॥

जोजन तुंग चालीस है, तिस ऊपर जोय।
केस अंतरै स्वर्ग है, सौधर्म जुग सोय। मेरु० ॥९॥

इत्यादिक महिमा घनी, कबलों वरनाय।
सहस जीभतैं कीजिये, तौहु पार न पाय। मेरु० ॥१०॥

सब गिरि में परधान है, यह मेर महान।
याके अन परवार हैं, तहाँ जिनके थान। मेरु० ॥११॥

तीस चार वैताढ हैं, षोडस वक्षार।
और कुलाचल षट सही, गजदन्त वृक्ष सार। मेरु० ॥१२॥

एक एक जिन थान है, मैं पूजों सार।
मेरु सुदरशन है सही, कंचन वरन अपार। मेरु० ॥१३॥

(दोहा)

मेरु माहिं मन राखिये, तहाँ अकीर्तम थान।
जिनके मुनि चारण तहाँ, तातैं नमि पुनि आनि॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थ अकृत्रिम जिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली मुनिराज पूजन

ऋषभनाथ–सुनंदा नंदन, बाहुबली स्वामी मुनिराज;
सुवर्णपुरीमें आप पधारे, गुरुकृपासे हे जिनराज।
भक्तवृंद सब मिलकर आये बाहुबली जिन पूजन काज;
आह्वानन सब विधि मिल करके भक्त हृदयसे पूजें पाय।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आहवाननम्।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधि करणम्।

(राग : मेरी भावना)

क्षीरोदधिको उज्ज्वल जल ले, श्री मुनिवर पद पूजन काज,
जन्म जरा दुःख मेटन कारन ल्याय चढाउं मुनिवर पाय।
गुरुकृपासे आप पधारे सुवर्णपुरीमें हे मुनिराज!
बाहुबलीके चरणकमलको निशदिन पूजुं भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कंचन झारीमें भर ल्याय,
बाहुबलीके चरण चढावो, भव आतप तुरत मिटि जाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शालि अखंडित सौरभ मंडित, प्रासुक जलसो धोकर ल्याय,
बाहुबलीके चरण चढावों, अक्षय पदकों तुरत उपाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी बेल चमेली, श्री गुलाबके पुष्प मंगाय;
बाहुबलीके चरण चढावो, कामबाण तुरत नसि जाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज लीना तुरत रसभीना, श्री मुनिवर आगे धरवाय;
थाल भराऊं क्षुधा नसाउँ, मुनिगुण गावत मन हरषाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग जगमग होत दशों दिस, ज्योति रही मंदिरमें छाय;
मुनिवर सन्मुख करत आरती, मोहतिमिर नासै दुःखदाय।
गुरुकृपासे आप पधारे सुवर्णपुरीमें हे मुनिराज!
बाहुबलीके चरणकमलको निशदिन पूजुं भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुगंध मनोहर, चंदन कूट सुगंध मिलाय;
मुनिवर सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरें चहुगति मिटि जाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय;
महा मोक्षफल पावन कारण, ल्याय चढाऊँ मुनिवर पाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि निरमल नीरं गंध सु अक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय;
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय। गुरुकृपा०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द : पद्धरी)

जय जय बाहुबली मुनींद, श्री ऋषभ सुत आनंदकंद;
मात सुनंदा मन मोदकाय, भविवृंद चकोर सुखी कराय॥१॥

रत्नत्रय ज्योति विराजमान, जै जै जै जै करुनानिधान;
तुम तपकीनों मुनि वन मंजार, दरशायो जगतको मोक्षमार्ग॥२॥

वंदे चक्री आनंदधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार;
पुनि गद्य पद्यमय सुजस गाय, जै बल अनंत गुनवंतराय॥३॥

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष;
जय कुमत मतंगजको मृगेन्द्र, जय मदन ध्वांतको रवि जिनेन्द्र॥४॥

जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध, जय ऋद्ध सिद्ध दाता प्रबुद्ध,
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागर महं सुष्ट थान॥५॥

तुम भगति करें ते धन्य जीव, ते पावें दिव-शिव-पद सदीव;
तुमरो गुन देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नरकी जु नार॥६।

वर भगतिमांहि लवलीन होय, नाचें ता थेई थेई बहोय;
तुम करुनासागर सृष्टिपाल, अब मोको वेगि करो निहाल॥७॥

मैं दुःख अनंत वसु करम जोर, भोगे सदीव नहि और रोग;
तुमको जगमें जान्यो दयाल, हो वीतराग गुनरतनमाल॥८॥

तातैं शरना अब गही आप, प्रभु करो वेग मेरी सहाय;
यह विघन करम जजो खंडखंड, मनवांछित कारज मंड मंड॥९॥

संसार कष्ट चकचूर चूर, सहजानंद मम उर पूर पूर;
निज-पर-प्रकाश बुद्धि देऊ देऊ, तजिके विलंब सुधि लेह लेह॥१०॥

हम जांचत है यह बार बार, भवसागर तैं मो तार तार;
नहि सह्यो जात यह जगत दुःख, तातैं विनवो हे सुगुन मुक्ख॥११॥

(धत्ता छन्द)

श्री बाहुबलीजिनं जितमदमारं, शीलागारं सुखकारं;
भवभयहरतारं शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज अनर्ध्यपद प्राप्तये महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली मुनिराज पूजन

(राग—मेरी भावना)

आदिप्रभु जिनेश्वर के सुत, बाहुबली मुनीराज महान;
शील शिरोमणी सुनंदा मात को, हर्ष भयो है अपरंपार।
भविजन कमल दिवाकर स्वामी, तप धार्यो वन के मंझार;
मोह महातम नास कियो प्रभु अत्र तिष्ट मम सुख विस्तार॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवर ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवर ! अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल : नन्दीश्वर पूजाकी)

जल पद्मद्रह को सार, कंचन भृंग भरा,
मुनि चरनन देत चढाय मेटौ जन्म जरा;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप अधिक दुखदाय सो तुम नाश करौ,
मैं पूजुं चंदन लाय, स्वगुण प्रकाश करो;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि अक्षत स्वच्छ महान, जिनपद अग्र धरौं,
निज अक्षय गुन पहिचान, स्वहित प्रकाश करौं;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन जीते काम करूर, तिन पद श्रेय करूं,
प्रभु यह गुण देहु जरूर, पुष्प सुभेंट धरूं;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि नेवज विविध बनाय, जिनपद अग्र धरूं,
सब दोष क्षुधा निरवार, निजगुण प्रगट करूं;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ज्ञान जोति परकाश, लोकालोक लखै,
मैं पूजुं दीपक धार, दीजै ज्ञान अखै;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु धूप सुगंध अनूप, प्रभु सनमुख लावौ,
दहि कर्मकाष्ठ दुखरूप, शिव सुंदरि पावौ;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजे निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम शिवफलदायक सार, मुनिजन इम गावें,
जिन चरन अग्र फल धार, भविजन शिव पावें;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजे निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ बनावत हैं,
पद पूजत श्रीजिनराय, दिव शिव पावत हैं;
श्री बाहुबली मुनिराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजे निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिवराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

जम्बूद्वीपके भरतमें आरज खंड महान,
ताके गुर्जर देशमें स्वर्णपुरी तीर्थधाम।
यहाँ के गुरुवर कहान हैं आत्मानुभवी संत,
निज आतमको साधके दरशाये शिवपंथ।
श्री गुरु के प्रभावसे तीरथ बना महान,
जम्बूद्वीप रचना बनी बाहुबली मुनिराज॥

(छन्द : लोलतरंग)

शोभित तुंग शरीर सुजानों, चाप पांच शतक है मानों;
कंचन वर्ण अनूपम सोहै, देखत रूप सुरासुर मोहे।

(पद्धरी छन्द)

जै बाहुबली जिन गुनगरिष्ट, तुम पदजुग दायक फल सु मिष्ट;
जै शिष्ट शिरोमनि जगतपाल, जै भविसरोजगन प्रातकाल।
जै पंच महाव्रत गज सवार, लै त्यागभाव दलबल सु लार;
जै धीरजकों दलपति बनाय, सत्ता छितमहं रनको मचाय।
धरि रतन तीन तिहुं शक्ति हाथ, दश धरम कवच तप टोप माथ;
जै शुक्लध्यानकर खडग धार, ललकारे आठों अरि प्रचार।

तामैं सबकौ पति मोह चंड, ताकों ततछिन करि सहस खंड;
फिर ज्ञानदरस प्रत्यूह हान, निजगुनगढ लीनों अचल थान।

तुम सब चरणाम्बुज सेव देव, निज जन्म सफल जानत स्वमेव,
तुम पदयुग दायक इष्ट शिष्ट, तुम पद शिवदायक गुणगरिष्ट।

तुम तप तुरंग असवार होय, अरु पहर विरागी कवच सोय;
दश धर्म चक्र अति प्रबल सार, रत्नत्रय तीक्षण खडग धार।

सत्‌ज्ञान सरासन सबल तान, धरि ध्यान महा तीक्षण सुबान;
व्रत समिति गुप्ति भट लेय लार, रण चारि तरंगमही निहार।

असहाय आप बहु अरिन बीच, अरि मारि गिरायो महा नीच,
फिर विघ्न अरीरज एकसाथ, हनि भए आप त्रैलोक्यनाथ।

इत्यादि अतुल शोभानिधान, खड्गासन आप विराजमान;
सुर असुर शीश नावै त्रिकाल मुनिवर गावै गुण नमत भाल।

भव काननहानन दव महान, दुख गजको विकटानन समान;
विधि अरि सिर छेदन प्रबलबान, प्रभु मोको दीजो अभयथान।

सुख सागरको नक्षत्र ईश, मम वास देहु प्रभु जगत शीस,
यह अरज हमारी सुनो सार, संसार खारतें करौ पार।

(दोहा)

श्रेयमार्ग दाता तुम्हीं बाहुबली भगवान,
अरज सेवककी सुनो, देहु परम कल्याण।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली मुनिराज चरणकमल पूजनार्थे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

श्री सीमंधरादि बीस विहरमान जिनपूजा

(दोहा)

दायक यश जग सुमति सुग, सुख दुतिरूप अपार,
घायक विधि घायकनिके लायक जग उद्धार।
सीमंधर आदिक सकल, वियद बाहु मित ऐन,
आह्वानन त्रिविधा करूं, इत तिष्ठहुं सुख दैन।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमान विंशति जिनेन्द्राः! अत्र अवतर अवतर, संवोषट्।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमान विंशति जिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमान विंशति जिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्।

(रुचिरा छंद)

शीतल सलिल अमल तृषहारक, लेय सुधासम भृंगभरं,
जिनपति चरन अग्र त्रय धारा, धरूं ताप त्रय नाशकरं,
जय कमलासन सुंदर शासन, भासन नभद्वय बोधवरं,
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो जलं०

मलय पटीर घसित वरकुंकुम, शीतल गंध सुरंग भयो,
सारस वरन चरन तव धारत, आकुल दाह अपार हर्यो। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो चंदनं०

जीरक श्याम सुगंधित तंदुल, श्वेत वरन वर अनियारे,
लहि अक्षत अक्षतपद पावन, धरूं पुंज दृढ मनहारे। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो अक्षतं०

केतकि कंज गुलाब जुही वर, सुमन सुवासित मनहारी,
धारत चरन लहें समतासर, नशें मदनसर दुखकारी।
जय कमलासन सुंदर शासन, भासन नभद्वय बोधवरं,
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं०

विंजन विविध छहों रस पूरित, सद्य सुसुंदर बलकारी,
श्रीपति चरन चढाऊं चरु वर, निज बलदायक क्षुतहारी। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं०

प्रजलित ज्योति कपूर मनोहर, अथवा पूरित स्नेह वरं,
करत आरती हरि भव आरति, निज गुन जोति प्रकाशकरं। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं०

चूरित अगर पटीरादिक वर, गंध हुताशन संग धरूं,
खेऊं धूप जगेशचरन ढिग, चाहत हूं विधि नाश करूं। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं०

फल दाडम एला पिकवल्लभ, खारिक आदिक मिष्ट भले,
लेकर चरन चढावत जिनके, पावत हूं फल मोक्ष रले। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो फलं०

जल चंदन अक्षत मनसिजशर, चरु दीपक वर धूप फलं,
भवगदनाशन श्रीपतिके पद, वारत हूं करि अर्घ भलं। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं०

जयमाला

द्वीप अर्घ द्वय मेरु पन, मेरु मेरु प्रति चार,
विहरत विभव अनंत युत, अवनि विदेह मझार।

(चंडी छंद : मात्रा १६)

सीमंधर सुखसीम सुहाये, युगमंधर युग वृष प्रकटाये,
बाहुबाहुबल मोह विदार्यो, जिन सुबाहु मनमथ मद मार्यो॥१॥

संजातक निज जाति पिछानी, स्वयंप्रभु प्रभुता निज ठानी,
ऋषभानन ऋषिधर्म प्रकाशन, वीर्य अनंत कर्मरिपु नाशन॥२॥

सूरप्रभु निजभा परिपूरन, प्रभु विशाल त्रिकशल्य विचूरन,
देव वज्रधर भ्रमगिरि भंजन, चंद्रानन जगजन मनरंजन॥३॥

चंद्रबाहु भवताप निवारी, ईश भुजंगम-धुनि-मन धारि,
इश्वर शिवगवरी दुःखभंजन, नेमिप्रभु वृषनेमि निरंजन॥४॥

वीरसेन विधि अरि-जय वीरं, महाभद्र नाशक भव-पीरं,
देव देवयश को यश गावै, अजितवीर्य शिवरमनि सुहावै॥५॥

ये अनादि विधि बंधनमांही, लब्धियोग निज निधि लखि पाई,
सम्यक् बलकरि अरि चकचूरन, क्रमतें भयें परम हुति पूरन॥६॥

अंतरीक आसन पर सोहे, परम विभूति प्रकाशित जोहे,
चौसठ चमर छत्रत्रय राजै, कोटि दिवाकर दुति लखि लाजै॥७॥

जय दुंदुभि धुनि होय सुहानि, दिव्यध्वनि जग जन दुखहानि,
तरु अशोक जनशोक नशावै, भामंडल भव सात दिखावै॥८॥

हर्षित सुमन सुमन वरसावै, सुमन अंगना सुगुन सुगावै,
नव रस-पूरन चतुरंग भीनी, लेत भक्तिवश तान नवीनी॥९॥

बजत तार तननननननननन घूघरु घमक झुननन झुननन,
घीं धीं घृकट द्रमद्रमद्रम, ध्वनत मुरज पुरु ताल तरलसम॥१०॥

ता थेईथेईथेई चरन चलावै, कटिकर मौरि भाव दरसावै,
मानथंभ मानीमद खंडन, जिन-प्रतिमा-युत पापविहंडन॥११॥

शालचतुक गोपुर-युत सोहै, सजल खातिका जनमन मोहै,
द्विजगन कोक मयूर मरालं, शुक-कलरव रव होत रसालं॥१२॥

पूरित सुमन सुमनकी बारी, वन–बंगला गिरवर छबिधारी,
तूर ध्वजा गेन पंक्ति विराजे, तोरन नवनिधि द्वार सु छाजै।।१३।।

इत्यादिक रचना बहु तेरी, द्वादश सभा लसत चहुं फेरी,
गनधर कहत पार नहि पावै, ''थान'' निहारत ही बनि आवै।।१४।।

श्रीप्रभुके इच्छा न लगारं, भविजन भाग्य उदय सु विहारं,
ये रचना मैं प्रगट लखाऊं, या हित हरषि हरषि गुन गाऊं।।१५।।

(छंद : घत्ता)

यह जिन गुनसारं, करत उचारं, हरत विकारं, अघभारं,
जय यश दातारं, बुधि–विस्तारं करत अपारं सुखसारं।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद : अडिल्ल)

जो भविजन जिन विंश यजैं शुभ भावसु,
करै, सुगुनगनगान भक्ति धरि चावसूं;
लहै सकल संपत्ति अर वर मति विस्तरै,
सुर नर पद वर पाय मुक्ति रमनी वरै।

।। इति आशीर्वादः ।।

इति श्री सीमंधरादिक विंशति विद्यमान जिनपूजा समाप्त।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

(छप्पय)

बाह्याभ्यंतर संग त्याग थिर शुकलध्यानमें,
तिरसठको क्षय पाय, अनंत चतुष्टय छिनमें;
समवसरणयुत देव दोष अष्टादश रहिता,
आदिनाथ जिन आय तिष्ठ, सनहित अघ हरता।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणं।

(छन्द हरिगीत)

हेमझारी मनोहर क्षीर जल भर लीजिये,
त्रयदोश नाशन हेतु, श्री जिन अग्रधारा दीजिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

अतिरम्य शीतल दाहनाशक, मलय चंदन गारिये,
संसारताप विनाश हेतु, जिनेशपद तल धारिये; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्व०

मणिचंद्रकांति समान श्वेत, अखंड अक्षत लाईये,
अक्षय अबाधित मोक्षपदकी, प्राप्ति हेतु चढाइये; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व०

शुभ अमल कमल सुचारु चंपा, सुमन गंधित ले धरो,
खल काम मद भंजन श्री जिनवर, देव पद अर्पण करो; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

धृत पक्व सुन्दर सद्य मोदक, कनक भाजनमें भरो,
ऋषभ पदाब्ज चढाय चिर दुख, मूल भूख व्यथा हरो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

जिन चन्द्र त्रिभुवननाथ सन्मुख, रत्न द्वीप प्रकाशिये,
अति मोद कर युत करि आरती, अज्ञान तिमिर विनाशिये; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

शुचि मलय अगुरु सुवास पूरित, चूरि अनल प्रजालिए,
सुखधाम शिवरमणी वरो, अरि अष्ट कर्म जलाईये; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

श्रीफल बदाम मनोज्ञ दाडिम, मधुर फल सुख मूल ले,
प्रभु पद सरोज चढाय अनुपम, मोक्ष फल अनुकूल ले; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

अत्यंत निर्मल पूर्व आठों, द्रव्य एकत्रित करो,
अरि अष्ट हनि गुण अष्ट संयुत, शीघ्र मुक्तिरमा वरो; सौराष्ट्र०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

भवजलनिध तारण, शिवसुख कारण, प्रतिपालित निर्मल चरणं,
करुणारस सागर, परम गुणाकर, जय जिन सकल भुवन शरणं।

(त्रोटक वृत्त)

वरदं सरदिंदुयशोनिकरं, निजज्ञान कलायुत भानिकरं;
संसार पयोनिधि तारतरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

गतधर्मजलं परमुक्तमलं, पय सदृश रक्त सु नंत बलं;
संहनन प्रथम संस्थान वरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शुभ रूप जितातनु कोटि विभु, वसु शत मित लक्षण मुक्त प्रभु;
पर सौरभता वर कीर्तिधरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

प्रिय वाक्य हितं सुरवृन्द नुतं, यतिराज विराजित नाभिसुतं;
परमं परतर्जित पुष्पसरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शत योजन इति दुर्भिक्षजयं, गगनांगण लंघन जंतु दयं;
गत भुक्ति जितं उपसर्ग चरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

चतुरं चतुरानन मोहजितं, सकलामल केवल बोधवरं;
विगतं प्रति मंगल नेत्र चरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

समकेस सदा नख पाद करं, सकलार्थ प्रगट कर वाक्य वरं;
भामंडल दर्शित भव प्रवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शशि लज्ञित कर त्रय छत्रवरं, सरणं चरणं जग शांत करं;
तम मोहज भ्रमहर सूर्यवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

मन वचन काय करि हू नमनं, मोहि देहु शिवालय प्रति गमनं,
निजस्वरूपको करिहूं प्रवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

(धत्ता)

यह जयमाला परम रसाला आदीश्वरकी गुणमाला,
जो पढे पढावे पूज रचावे कंठ धरे शिव वरमाला।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव प्रभु नाम, पूजै ध्यावे भाव धरि;
ता घर ऋद्धि महान, होय सकल सुखदायनी।

॥ इति आशीर्वाद ॥

श्री महावीरस्वामी जिन पूजा

हे करुणानिधि सकल गुणाकर, त्रिशलानंदन भवहारी,
तुम पूज रचाउं बलि बलि जाउं, हो अनंत गुण गुणधारी
उर निजध्याउं, शीश नामउं, गाउं गुण मंगलमय वीर,
भवदुःखहर हो, अनुपम सुखकर हो, आनंदकारी श्री महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय ! अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट (सन्निधिकरणम्)

(छंद त्रिभंगी)

कुंकुम मिश्रित तीरथ जल करी, भरि ल्यायो कंचन झारी,
जन्म–जरा–मृत नाशन कारण, धारात्रय जिनपद ढारी
इन्द्र–नरेन्द्र–खगेन्द्र पूज्यपद पूजत हौं जिन मनहारी,
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय सुचंदन केलीनंदन, कृष्णा घसि संग सुखकारी,
जिनके पद पूजत भव तप धूजत, भृंग करत झूं झूं प्यारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखित अखंडित सौरभ मंडित, चंद्रकिरणसे भरि थारी,
जिनके पद आगै पूंज करत ही, अक्षय पदके करनारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचवरणमय कुसुम मनोहर, गंध सुगंधे अति प्यारी,
पूजै जिनपद मन्मथ नासै, भृंग भ्रमत चउ उर भारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खज्जक फेनी इन्द्र चन्द्रिका, मोदक सुवरण भरि थारी,
क्षुधा वेदनी नाश करनको, जिनपद पूजुं सुखकारी।
इन्द्र--नरेन्द्र--खगेन्द्र पूज्यपद पूजत हौं जिन मनहारी,
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशामें करत प्रकाश जू, दीपक अद्‌भूत ज्योति धरैं,
ज्ञान उद्योतक मोह विध्वंशक, पूजत भ्रमतम नाश करे। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन चूर मनोहर, स्वर्ण धूपायन मांहि धरै,
धूप धूम्र मिसि करम उडत मनु, दसूं दिशामें गमन करै। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बिदाम सु खारिक, कदली दाडिम सहकारं,
स्वर्णथाल भरि जिनपद चहोडे, मुक्ति रमासू ह्वै प्यारं। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज, दीप धूप फल भरि थारी,
अर्घ चढावे जिन चरननकू जाकी ह्वै शिव तिय प्यारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जिनवर मुक्त विमुक्त भवस्थिति युक्त मुनिपति ये सदा,
समवादिसरण विभूति मंडित, गुन अखंडित गत मुदा;
भरतक्षेत्रे सुवर्णधामे वीर जिनवर राजही,
तिनकी कहो जयमाल भविजन पढत सब दुःख भाजही।

(पद्धरी छंद)

जय जिन घाते घातिया चार, फुनि किय अघातियनको प्रहार;
जय चिदानंदमय है सुछन्द, जगजीवनको आनंदकंद।

अष्टोत्तर शत लक्षण सुअंग, जिन पति लखि लाजत अनंग;
ये कोटि सूर्य द्युति धरन धीर, युत प्रातिहार्य वसु गुण गंभीर।

सुर नर धरणीधर पूज्य पाय, गणधर मुनिवर जिन नमत धाय;
सुर मोक्षादिक पद दान दक्ष, शुद्ध ध्यान लीन शोभे अलक्ष।

दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महा सर्म वीर्य जिनको न अंत;
ये अनंत चतुष्टय करि संयुक्त, महाधीरय धर वसु कर्म मुक्त।

वसु गुण करि मंडित शोभमान, जयवंत वर्तो जग प्रधान;
जय त्रिशलानंदन जिनेन्द्रवीर, आनंदकरण भवहरण पीर।

जय वीर जिनेश्वर गुण गंभीर, कल्पद्रुम सम दाता सुधीर;
जय महावीर वर सिद्धिदाय, तुम चरणनमें बलि बलि सुजाय।

(गीता छंद)

ये सर्व अतिशय युक्त परम आह्लाद कर पूरन खरे,
ये त्रिजगतापित पाद पूजित, शिवमहल मग पग धरे।
ये द्रव्य गुण नय अर्थ देसक, सुभग शिव त्रिय कंत ते,
जय जय प्रताप सु वीर जिनवर, होहु जग जयवंत वे।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*

श्री धातकीविदेह-भावीजिनपूजा

(जोगीरासा)

धातकी खंड विदेहधाम बहु आनंदमंगळकारी,
ज्यां वर्षे तीर्थंकर प्रभुनो ध्वनि शाश्वत सुखकारी;
तत्र बिराजे त्रिभुवन तारक भाविना भगवंता,
अहो! पधार्या भरतभूमिमां करुणामूर्ति जिणंदा।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम् !

(राग : नंदीश्वर श्री जिनधाम)

क्षीरोदधिथी भरी नीर, कंचन कळश भरी,
प्रभु तव पद पूजुं जाय आवागमन टळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चंदन साथ केसर घसी लाउं,
मम भव आताप नशाव, प्रभु तुज पाय पडुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रक्षालित अक्षत शुद्ध, कंचन थाल भरुं,
अक्षय पद प्राप्ति काज प्रभु पद पूज करुं;

अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

जासुद, चंपा, सुगुलाब, सुरभि थाळ भरुं,
मम कामबाण कर नाश, प्रभु तुज चरण धरुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी खाजा पकवान, मोदक भरी लावुं,
मम क्षुधारोग निरवार, प्रभु सन्मुख जाउं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजु मणिदीप हजूर, आतमज्योति जगे,
कर मोह तिमिरने दूर, भवनो भय भागे;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लई अगर तगर कर्पूर दश विधि धूप करी,
प्रभु सन्मुख खेउं जाय कर्म कलंक बळी;

अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफळ सोपारी,
मागुं शिवफळ तत्काळ, प्रभुपद बलिहारी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जिनेश्वर बसो हृदयके माँहि...)

भावि तीरथनाथकी जी महिमा अतुल महान,
सुर-नर-मुनि जिनके सदा जी, प्रणमें निशदिन पाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

द्वीप धातकी खंडमें जी, विदेहधाम सुख खान,
विचरे तीर्थंकर प्रभु जी, करते भवि कल्याण,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य दिवस घडी धन्य है जी, धन्य धन्य अवतार,
भावि जिनवर चरणमें जी, लाग्यो चित्त बडभाग,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य युगल पद होय तब जी, मैं पहुंचुं तुम पास,
धन्य हृदय हो ध्यानतें जी, ध्याऊं निज हित काज,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

दरश करत तव चरणके जी, चक्षु धन्य तब थाय,
सफल करणयुग होत तब जी, वचन सुने जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

पूज करूं तव चरणकी जी, करयुग धनि तब थाय,
शीस धन्य तब ही हुये जी, नमत चरण जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

मैं दुखिया संसारमें जी, तुम करुणानिधि देव,
हरे दुख यह मो तणो जी, करी हों तुम पद सेव,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

स्वरूप तिहारो हृदय विषे जी, धारूं मन वच काय,
भवसागरको भय मिट्यो जी, यातें त्रिभुवन राय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

भावि जिनवर चरणकी जी, भरी भक्ति उर मांहि,
निजस्वरूपमय कीजिये जी, भव संतति-मिट जाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति-तीर्थ सुवर्णपुरी पूजा

(राग--सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान सुमंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
तू परमातमा है, ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी ॥

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्रावतर अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतने विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भव भव, इति सन्निधिकरणम् ।

उज्ञवल जल शितल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहान-गुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो जलं निर्व०

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्व०

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्व०

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्व०

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्व०

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्व०

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो फलं० ।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(राग—जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है ॥

स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा ॥

सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं ॥

विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं ॥

परमागम मंदिर अद्भूत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें ॥

पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं ॥

स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया ॥

अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु--वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली ॥

प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे ॥

प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है॥

जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धर-स्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरुनन्दीश्वर-जिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावि तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावि श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार+ इत्यादि सर्व वीतरागपदेभ्यः पूजनार्थे महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

સહજ ચિદાનંદ.

अर्घावली

देव-शास्त्र-गुरुनो अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरू,
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनमके पातक हरुं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंक्ति मचूं,
अरहंत श्रुत--सिद्धांत गुरु--निर्ग्रंथ नित पूजा रचू।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ भगवान

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दशांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनिकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पारसनाथ भगवान

शुचि जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ उत्तम कीजिये,
भवभ्रमण भंजन हेत प्रभुको पूजि शिवसुख लीजिये;
संसार विषम विदेशवत, कलिकाल वन विकराल है,
तहां भ्रमत भविको सुखद, पारस नाम धाम कृपाल है।

ॐ ह्रीँ श्री पारसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर भगवान

जलफल वसु सजि हिम थार, तनमन मोद धरों,
गुण गाउं भवदधि तार पूजत पाप हरों;
श्री वीर महा अतिवीर सन्मतिनायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो

ॐ ह्रीँ श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चोवीस जिनेन्द्रनो अर्घ

जल फल आठो शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों;
चौवीसौं श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रीस चोवीसीनो अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है,
पूजतें पाप छीना है, भानमल जोर कीना है;
दीप अढाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषैं छाजे,
सात शत बीसजिन राजै, पूजतां पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ श्री पांच भरत ऐरावत दशक्षेत्रसंबंधी तीस चौवीसीके सातसौ बीस जिनेद्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीपनो अर्घ

यह अर्घ कियो निज हेत, तुमको अरपत हों,
'द्यानत' कीनो शिवखेत, भूमि समरपत हों;
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों,
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों।

ॐ ह्रीँ नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरुनो अर्घ

आठ दरवमय अर्घ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परमसख होय;
पांचों मेरु अस्सी जिनधाम, सब प्रतिमाको करूं प्रणाम,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।

ॐ ह्रीँ पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यलयनो अर्घ

वसु कोटि सु छप्पन लाख ऊपर सहस सत्याणवे मानिये,
सत चार पै गिन ले इक्यासी भवन जिनवर जानिये;
तिहुं लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करें,
तिन भवनको हम अर्घ लेकै पूजिहैं जग दुख हरें।

ॐ ह्रीँ तीनलोक संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्तानवे हजार चारसो इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महापद्म भगवाननो अर्घ

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, तन मन मोद धरौ,,
करि पूजा अष्ट प्रकार, नरभव सफल करौ;;
आगामी आदिजिणंद 'स्वर्ण'सु राजत हैं,
महापद्म-चरण अरविंद, उर-अलि पागत है।

ॐ ह्रीँ जंबूभरतस्य भावितीर्थंकर-महापद्मदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

श्री कुंदकुंदाचार्य भगवाननो अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य--मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करू,
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरू।

ॐ ह्रीँ कुंदकुंदादि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति ०

श्री भावि तीर्थंकरनो अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लइ दीप धूप फल अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू–भरते जयवंत शिव मंगलकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत शिव मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है।
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण–पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीँ विदेही भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

સહજ ❀ ચિદાનંદ.

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं, सिद्ध पूजूं चावसों;
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भावसों।
अर्हन्त–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी;
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा;
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहिं कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं;
पंच मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।

कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा;
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेहके;
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेहके।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी-करावવी-भावना भाववी, श्री अर्हन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषे बिराजमान-कृत्रिम-अकृत्रिम जिन-चैत्यालय जिन-बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत-दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास,-चंपापुर,-पावापुर आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(वसंततिलकम्)

सीमंधरादिभवशान्तिकरा जिनेन्द्रा;
सर्वार्थसाधनगुणप्रणिधानरूपा;
तेभ्योऽर्पयामि भवकारणनाशबीजं,
पुष्पांजलि विमलमंगलकामरूपम्।

(पुष्पांजलिं)

आरती

(१) जम्बूद्वीप की आरती

(आओ सहु आरती उतारीए)

जम्बूद्वीप सुवर्णे पधारिया जी रे,
आवो सहु आरती उतारीए।
सुदर्शन मेरुना सोळ सोळ मंदिरो,
रत्नमणिना बिंव सोहता जी रे....आवो सहु...
गजदंत शिखरे जिनालय बहु शोभतां,
पूजन रचावीए भावथी जी रे....आवो सहु...
विजयार्द्ध पर्वत ने वक्षारगिरि पर,
मंदिरो अकृत्रिम सोहता जी रे...आवो सहु...
कुलगिरि पर्वतना मंदिरोनी दिव्यता,
शी शी करुं तुझ सेवना जी रे....आवो सहु...
रत्नमणिना दीपको लईने,
भावे प्रभुने पूजीए जी रे....आवो सहु...

(२) जम्बूद्वीप की आरती

(राग : ॐ जय जिनवरदेवा)

जय शाश्वत जिनदेवा, प्रभु शाश्वत जिनदेवा;
आनंद मंगल करुं आरती, स्वर्णमें जय जयकार....जयदेव जयदेव.
मेरु सुदर्शन उन्नत सोहे, सोलह सोलह जिनमंदिर;
अकृत्रिम जिनालय अद्‌भूत, अद्‌भूत जंबूद्वीप....जयदेव जयदेव.
गगनमंडलसे ऊतरे सुरेन्द्र, भक्ति करे सहु साथ;
भरतभूमिमें सुरनर करते, आरती मंगलकार....जयदेव जयदेव.
गुरु कहान के परम प्रताप से शाश्वत जिनवरवृंद;
आवो आवो भक्तों स्वर्णे, वधावो शाश्वत जिनवृंद....जयदेव जयदेव.

(३) जम्बूद्वीप की आरती

(रघुपति राघव राजाराम)

जम्बूद्वीप जिनालय अभिराम, आरती करीए करुं प्रणाम।

मुक्तिदाता नाथ तुम्हीं, मंगल मूरति हो प्रभुजी,
मिथ्यातम का होय विनाश, प्रगटे सम्यक्ज्ञान प्रभात।

छह सरोवरमें कमल खिले श्री हीं आदि देवी निवसे,
तीर्थंकर मातकी सेव करे, पुण्य संचय भक्तिसे करे।

आरती कर ज्ञानज्योति भरूं, आत्मनिधि शिवनारी वरुं,
शाश्वत जिनका पूजन करूं, रत्नमणि दीप आरति करूं।

नित नित मंगलमाल करूं, प्रभुभक्तिमें चित्त धरूं,
भवसागर को पार करूं, रत्नमणिदीप आरती करूं।

(४) जम्बूद्वीप की आरती

(राग - ॐ जय जिनवर देवा)

ॐ जय जिनवर देवा, (२) शाश्वत जिनवर जंबूद्वीपके....आरती मंगलकार...

जम्बूद्वीपकी रचना दिव्य, दिव्य जिन दिदार,
देखत भविजन उल्लसित होते, करते जयजयकार....आरती मंगलकार...

सोलह मंदिर शोभ रहे हैं, मेरु सुदर्श महान,
कुलगिरि षट् सिद्धकूट के ऊपर, प्रभुका अचल स्थान....आरती मंगलकार....

गजदंत जम्बू शाल्मली वृक्षके, जिनवर आनंदकंद,
विजयारध वक्षारके प्रभुवर, भक्तोंसे है वंद्य....आरती मंगलकार....

वसु प्रातिहार्य मंगलकारी, रचना अद्भुत जान,
सुर विद्याधर शिर झुकाये, जय जय श्री भगवान....आरती मंगलकार....

स्तुति वंदना भक्ति करते, नाचत ताल बजाय,
रत्नमणिके दीपक लेकर, हर्षित सुरनर राय....आरती मंगलकार...

कृपासिंधु हो दीनदयाला, शरणागत आधार,
गुरुवर कहान के परम प्रतापसे, भविजन हो भवपार....आरती मंगलकार....

मंगल महोत्सव सुवर्णपुरीमें मंगल मंगलकार,
पूजन स्तुति जयमाला मंगल आरती मंगलकार....आरती मंगलकार....

(५) जंबूद्वीपकी आरती

जय बोलो जय बोलो, शाश्वत जिनवृंदकी जय बोलो।

स्वर्णपुरीकी स्वर्णधरा पर, जम्बूद्वीपकी रचना अनुपम,
पधारो तीरथनाथ प्रभुकी जय बोलो

षोडश जिनवर मेरु पर सोहे, अंर्तयामी भक्त मन मोहे,
गजदंत गिरिके है जिनदेव प्रभुकी जय बोलो।

जंबू शाल्मलि वृक्ष पर सोहे, कुलपर्वत षट् जिनदेवा,
आवो पधारो नाथ प्रभुकी जय बोलो।

विजयारधके चौंतीस जिनगृह, वक्षारगिरिके षोडश जिनालय,
रत्नमयी वीतराग प्रभुकी जय बोलो।

गुणरत्नाकर गुणमणि ज्ञानी, परमविरागी केवलज्ञानी,
करुणामूर्ति जगनाथ प्रभुकी जय बोलो।

वंदन, कीर्तन, घंटनाद स्तुति, जगतसाक्षीकी मंगल आरती,
धर्मतीर्थके नाथ प्रभुकी जय बोलो।

कहानगुरुकी कृपा अपारी, जम्बूद्वीपकी रचना न्यारी,
वर दे भगवती मात प्रभुकी जय बोलो।

(६) जम्बूद्वीप की आरती

(राग : धन्य धन्य आज घडी)

लाख लाख दीपकोंसे आरती उतारों,
शाश्वत जिन पधारे हैं। (२)

जम्बूद्वीपके सुदर्शन मेरु के, अकृत्रिम जिन मंगलकार है,
सोलह सोलह मंदिरमें प्रभुजी बिराजते....शाश्वत जिन०

भद्रशाल वनके चार जिनालय, सौमनस वनके प्रभुवर सोहे,
नंदन वन और पांडुकवनके शाश्वत जिन पधारे है।

पांडुक वनकी पांडुक शीला पर, न्हवन प्रभुका अति अद्‌भुत है
दिव्य देवालयोंमें दीपकमाल है, शाश्वत जिन पधारे हैं...

कहानगुरुके परम प्रतापसे, जम्बूद्वीप मेरुकी रचना मनोहार है।
भगवती मातका आशीष मंगलकार है, शाश्वत जिन पधारे हैं....

(७) जम्बूद्वीप की आरती

(राग—जय जय आरती शांति तुम्हारी)

जय जय आरती शाश्वत जिनकी, चरण कमलमें जाऊं बलिहारी,
प्रथम मेरु सुदर्शन महा, षोडश जिनमंदिर है जहां;
स्वहित कारण शीश नमाऊं, स्तुति वंदना भक्ति कराऊँ।

सुदर्शन मेरु के सोलह मंदिर, दक्षिण उत्तर कुलगिरि तीन तीन,
हिमगिरि हेम समान जानो, महाहिमवान रूपा समानो।

गिरि निषध तप्र सुवरन रूपा, तीनों दक्षिण दिश अनूपा,
नील पर्वत वैडूर्य वर्णका, रुक्मि रजतसम द्युति अभंगा।

शिखरी गिरि सुवर्ण सोहे, भक्तजनोंके सब मन मोहे,
तहाँ कूटोंमें एक सिद्धकूट, प्रति पर्वत पर जान अटूट।

जिनमंदिरकी शोभा अनेरी, चरण कमलमें जाऊं बलिहारी।
सुर किन्नर करे महिमा अपार, प्रभु पद पूजें बहु हर्षधार,
कृपासिंधु करुणा बहु कीजे, भक्तजनोंका तिमिर हरीजे।

बाहुबली आरती

(ॐ जय जिनवरदेवा—राग)

ॐ जय बाहुबली देवा स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०

बार बार मास तपस्या करते, अंतरमें लवलीन,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०

भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीए श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०

महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०

स्वर्णपुरीमें बाहुबली देवा, स्वागत मंगलकार,
आवो आवो अम आंगणिये, रत्ने वधावुं आज....ॐ जय०

बाहुबली भगवाननी आरती

(राग : जय सीमंधर जय सीमंधर...)

जय बाहुबली जय बाहुबली, जय बाहुबली देवा....
माता तोरी देवी सुनंदा, पिता ऋषभराया,
अयोध्यामें जन्म लिया प्रभु, अष्टापद शिवपाया...जय०

आप भरतके महा तपस्वी, तीन रतनके धारी,
सुवर्णपुरीकी शोभा बढाई, मुनिसेवा मन भाई...जय०

सुवर्णपुरीके भक्त तुम्हारी करे हृदयसे सेवा;
भव भव होजो भक्ति तुम्हारी ओ देवनके देवा...जय०

कहान गुरु अरु भगवती माता, भक्ति हृदयसे करते;
भक्तोंको ज्ञायक समझाकर शिवकी राह दिखाते...जय०

आदिनाथजिन आरती

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
आदिनाथ दरबार लगा आदिनाथ दरबार है।

खुशियां अपार आज हर दिलपे छांई हैं,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है। आदिनाथ० १

भक्तिसे नृत्य–गान कोई है कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है। आदिनाथ० २

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है। आदिनाथ० ३

ॐ जय जिनवरदेवा (आरती)

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ
दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि–सिद्धि–सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ
आज अमारे आंगण पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी–महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ
पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक–तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ! आतमना आधार!.....ॐ
कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम्;
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः,
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु॥५॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवन् जिनेन्द्रः॥६॥

(स्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याघयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥७॥

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा॥८॥

॥ प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ॥

(अथेष्ट प्रार्थना—मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः॥९॥

(आर्यावृत्तम्)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत् यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः॥१०॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं;
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु॥११॥

दुःक्ख-खओ कम्म-खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरणसरणेण॥१२॥

(प्रार्थना—आर्या)

त्रिभुवनगुरो! जिनेश्वर परमानन्दैककारणं कुरुष्व;
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः॥१३॥

निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या;
अपुनर्भवाय भवहर कुरु करुणामत्र मयि दीने॥१४॥

उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा;
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि॥१५॥

त्व कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश! तेनाहं;
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे॥१६॥

ग्रामपतेरेपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि;
जगतां प्रभो! न किं तव, जिन! मयि खलु कर्मभिःप्रहते॥१७॥

अपहर मम जन्म दयां, कृत्वा चेत्येकवचसि वक्तव्यं;
तेनातिदग्ध इति मे देव! बभूव प्रलापित्वं॥१८॥

तव जिन चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत्;
संसारतापतप्त करेमि हृदि तावदेव सुखी॥१९॥

जगदेकशरणभगवन्! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौध;
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने॥२०॥

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर॥१॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥२॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥३॥

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्॥४॥

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्॥५॥

विसर्जन

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत,
ते ज्ञानीना चरणमां, हो वंदन अगणीत।

एह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगर ने हाल मनोरथ रूप जो;
तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभु–आज्ञाए थाशु ते ज स्वरूप जो;
अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे ?

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिए)

अनुभूति तीर्थ महान, स्वर्णपुरी सोहे
यह कहानगुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले.